तुलसी साहिब

(हाथरस वाले) की

शब्दावली—भाग २

पद्मसागर सहित

दावली का यह दूसरा एडिशन दो और प्राचीन लिपियों
मे जो पहिले छापे के पीछे हाथ आईं बड़े परिश्रम
से शोध कर दो भागों में निकाला गया है,
और पद्मसागर का छोटा ग्रंथ भी उसी
के साथ छाप दिया गया है।

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुआ।

सन १९१४ ई०

री बार १०००] [दाम

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि और अशुद्धता से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नकल कराके मँगवाये हैं और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुकाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व-साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने को जी न चाहे और अंत करन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के संक्षेप वृत्तांत और कौतुक फुट नोट में लिख दिये जाते हैं।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें कि वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उनको मिलें उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत खर्च होता है तौ भी सर्व-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सब्सक्राइबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकें आगे छपेंगी बिना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा, परन्तु डाक महसूल और वी॰ पी॰ कमिशन उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी॰ पी॰ कमिशन लिया जायगा।

प्रोप्राइटर, बेलवेडियर छापाखाना,

अप्रैल १९१४ ई॰

इलाहाबाद

सूचीपत्र

राग

राग	पृष्ठ
कमोद	२५७—२६०
आरती	२६०
गौरी	२६१—२६२
सारंग	२६२—२६३
ध्रुपद	२६३—२७१
संगीत	२७२
फुटकल	२७२
पद्मसागर	१—१०

शब्दावली

तुलसी साहिब
(हाथरस वाले की)

भाग २

॥ टप्पा ॥

(१)

नेहड़ा निहारियाँ प्यारी पिया प्रेम दा ॥ टेक ।
बिरह बेल चित चीन्ह चमेली , नर तन नरगिस मन मरुवा ।
गे गुन गूँथ सूत सुत माला , नौ मन नाफिर गुललाला ।
गुर हिये हरवा सम्हारियाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

चीन्ह चंप रस रीति को , भँवर बास नहिँ लेत ।
चेत चलो मन मालती , गूँजे मधुकर हेत ॥ २ ॥

मोरसली मन मोगर कहिये , मन तन बन की फुलवारी ।
न्यारी निरत सुरत के नैना , ऐन चैन लख घर धारी ।
गुर पर तन मन वारियाँ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

गगन डोर पद पोढ़ को , सब्र स्नुति संत समान ।
जान अगम असमान को , कीन्हा बरनि बखान ॥ ४ ॥

करनफूल सुत सेत दावदी , गुलाबाँस गुल गुलज़ारी ।
डारी डगर केल कँवलन की , सुरजमुखी मग चढ़ चारो ।
गुर पिय सँग कर यारियाँ ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

यार अगम अली देस को , भेष भवन सोइ जाय ।
जिवत मरे फिर फिरि जिवे , पिय पिव अमीँ अघाय ॥ ६ ॥

बिरह बंद बस चंद कमोदन, बोदन रवि करि करि कँवला।
करनफूल करुना गुर केरी, करिया पर बस नेह नवला।
अस पिय पीर गोहारियाँ ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

चंदा करन कमोदनी, कँवल बिरह रवि रीत।
सिष्य समझ गुर मिलन की, तुलसी अटपट रीत ॥ ८ ॥

(२)

करि ले री गुइयाँ बदन सँवारियाँ ॥ टेक ॥
यह तन मन तज तनक बड़ाई, गुर गति मति सत सुरति लगाई।
अगम अलोक मोष मत मरजै, सरजे सब जग पद पाई।
सोइयाँ सोइ मदन खुमारियाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

देख दृगन मन मिरग को, छिन छिन छलँग कराय।
कँवल बास तज भर्म भव, पल पल आवे धाय ॥ २ ॥

प्यारी परख प्रेम के अच्छर, छर तत तन विच मन मच्छर।
ऐसा अराम काम करमन के, भर्म भर्म जम भव भच्छर।
जइयाँ पिव पदन पर वारियाँ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

आप अपनपौ परख से, निरखो नैन निहार।
सार समझ स्रुति संध को, उतरो भवजल पार ॥ ४ ॥

समझ सोच सुन गुन मन प्यारी, धार घरन मैं दुख पाई।
आई काल कराल जुगन मैं, मैं तैं रस बस तरसाई।
दिष दइयाँ कदम मैं वारियाँ ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

करम काल बस जुग भये, दुख सुख भर्म अधार।
सरम न राखी पीव की, ताते सिर भव भार ॥ ६ ॥

सिष लख लीक सीख सखि हिये मैं, पीव परख सर समझाई।
तुलसी तार धार दुरबीना, जीना चढ़ तहँ पिव पाई।
धोइयाँ सखि मदन खुमारियाँ ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सिष्य समझ पिव पद गहो , रहो दुरबीन लगाय ।
जाय जमक जीना लखो , चखो अगम रस खाय ॥ ८ ॥

(३)

साँडी सुत सैलाँ दी अधर अधारियाँ ॥ टेक ॥
नगर नीर इक सहर सिरोमन , भान भवन के पिछवारे ।
पारे परम धाम पद पुरियाँ , कुरियाँ करि करि सम्हारे ।
तारोँ दी क़दर कदारियाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

अधर अलख इक सहर से , न्यारा बरन बखान ॥
जान जनक नृप रीति की , सज्जन सुरति रकान ॥ २ ॥

सीस सरोसर समझ बिचारी, न्यारी करि करि ले लारी ।
गाढ़ी गूढ़ मूढ़ नहिँ जाने , माने मन मध अधिकारी ।
सत्त नहिँ सधर सधारियाँ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

सत सत मत परतीत को , जीत न जाने कोय ।
खोय खलक जग पलक मेँ , अलख लखा नहिँ सोय ॥ ४ ॥

तुलसी तीर गुरन से पावे , को गावे अड़गुड़ बानी ।
जाने सूर मूर मत काढ़े , गाढ़ि गगन मन जिन जानी ।
पानी पै घर दधारियाँ ॥ ५ ॥

(४)

अरज गुजरियाँ दी मेरे मियाँ प्यारियाँ दी ॥ टेक ॥
दर्द दिवानी अन्न न पानी , बिथा बिरह बस नहिँ भावे ।
तन बिच पीर धीर नहिँ मन को, पिया पिया की रट लावे ।
हियोँ दी मरज निहारियाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

नैन नीर ढुरि ढुरि बहै , गहै न तन मन होस ॥
दोस कहा कहूँ करम के , मरत पिया के पोस ॥ २ ॥

बिरह बंद बस चंद कमोदन , बोदन रवि करि करि कँवला ।
करनफूल करुना गुर केरी , करिया पर बस नेह नवला ।
अस पिय पीर गोहारियाँ ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

चंदा करन कमोदनी , कँवल बिरह रवि रीत ।
सिष्य समझ गुर मिलन की , तुलसी अटपट रीत ॥ ८ ॥

(२)

करि ले री गुइयाँ बदन सँवारियाँ ॥ टेक ॥
यह तन मन तज तनक बड़ाई , गुर गति मति सत सुरति लगाई ।
अगम अलोक मोष मत मरजैं , सरजे सब जग पद पाई ।
सोइयाँ सोइ मदन खुमारियाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

देख दृगन मन मिरग को , छिन छिन छलँग कराय ।
कँवल बास तज भर्म भव , पल पल आवे धाय ॥ २ ॥

प्यारी परख प्रेम के अच्छर , छर तत तन बिच मन मच्छर ।
ऐसा अराम काम करमन के , भर्म भर्म जम भव भच्छर ।
जइयाँ पिव पदन पर वारियाँ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

आप अपनपौ परख से , निरखो नैन निहार ।
सार समझ स्रुति संध को , उतरो भवजल पार ॥ ४ ॥

समझ सोच सुन गुन मन प्यारी, धार धरन मैं दुख पाई ।
आई काल कराल जुगन मैं , मैं तैं रस बस तरसाई ।
दिस दइयाँ कदम मैं वारियाँ ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

करम काल बस जुग भये , दुख सुख भर्म अधार ।
सरम न राखी पीव की , ताते सिर भव भार ॥ ६ ॥

सिष लख लोक सीख सखि हिये मैं, पीव परख सर समझाई ।
तुलसी तार धार दुरबीना , जीना चढ़ तहँ पिव पाई ।
धोइयाँ सखि मदन खुमारियाँ ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सिष्य समझ पिव पद गहो, रहो दुरवीन लगाय ।
जाय जमक जीना लखो, चखो अगम रस खाय ॥ ८ ॥

(३)

साँडी सुत सैलों दी अधर अधारियाँ ॥ टेक ॥
नगर नीर इक सहर सिरोमन, भान भवन के पिछवारे ।
पारे परम धाम पद पुरियाँ, कुरियाँ करि करि सम्हारे ।
तारों दी कदर कदारियाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

अधर अलख इक सहर से, न्यारा बरन बखान ॥
जान जनक नृप रीति की, सज्जन सुरति रकान ॥ २ ॥

सीस सरोसर समझ बिचारी, न्यारी करि करि ले लारी ।
गाढ़ो गूढ़ मूढ़ नहिं जाने, माने मन मध अधिकारी ।
सत्त नहिं सधर सधारियाँ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

सत सत मत परतीत को, जीत न जाने कोय ।
खोय खलक जग पलक में, अलख लखा नहिं सोय ॥ ४ ॥

तुलसी तीर गुरन से पावे, को गावे अड़गुड़ बानी ।
जाने सूर मूर मत काढ़े, गाड़ि गगन मन जिन जानी ।
पानी पै धर दधारियाँ ॥ ५ ॥

(४)

अरज गुजरियाँ दी मेरे मियाँ प्यारियाँ दी ॥ टेक ॥
दर्द दिवानी अन्न न पानी, बिथा बिरह बस नहिं भावे ।
तन बिच पीर धीर नहिं मन को, पिया पिया की रट लावे
हियों दी मरज निहारियाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

नैन नीर ढुरि ढुरि बहै, गहै न तन मन होस ॥
दोस कहा कहूँ करम के, मरत पिया के पोस ॥ २ ॥

पिंजर बदन भयो झुरि झुरि के, कोटि कोटि काया गारी ।
जरजर चाम हाड़ बिन लोहू , कोऊ कटारी धरि मारी ।
जिवोँ दी हरज सिहारियाँ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पिया पीर दुख दर्द की , का से करूँ गोहार ।
मारि कटारी मरि रहूँ , गहूँ विपत सिर भार ॥ ४ ॥

पिया दरस दुखड़ा जिव तरसे, बरसे अबर हिये दुखदाई ।
सैयाँ कसक पोर की बातेँ , सोइ सोइ तुलसी अस गाई ।
कियोँ दी लरज जियारियाँ ॥ ५ ॥

(५)

पिया मुझे मारियाँ दी , अब न जियौँदियाँ ॥ टेक ॥
कामिनि काज लाज धुर घर की, परखी मति बुधि चित बानी ।
जानी जनम जीत की बातेँ , लातेँ धरि धरि करि मारी ।
जान दे जहर पियोँदियाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

माहुर प्याला घोरि के , पियूँ कटोरा झारि ।
नारि कहे मन खसम से , भसम करूँ तन जारि ॥ २ ॥

जुगन जुगन जाहिर भइ जग मेँ, पिता बीर की बदनामी ।
पाड़ पड़ोस पास सखियन मेँ , भखिहैाँ भर भर मन मानी ।
सुन सब कहर कियोँदियाँ ॥३॥

॥ दोहा ॥

जगत लोग सब सोग को , कहि कहि कहूँ पुकार ।
मार करन की बातियाँ , सो सब सुनो गोहार ॥ ४ ॥

अब तो अरज आस अविनासी, बासी घर हुइ हूँ दासी ।
फाँसी काल जाल धरि मारो , तारूँ कुल छूटे स्वासी ।
तुलसी कहन कियोँदियाँ ॥ ५ ॥

(६)

पीर बुझाइयाँ प्यारे पिया दीदोँ दी ॥ टेक ॥
बार बार तन मन बलिहारी , ताप तपन तीनोँ खोई ।
जोई निरख नैन से प्यारी , दुख सुख सम्पति सब धोई ।
गल बहियाँ धीर सुजाइयाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

पिया प्रेम रस रीति की , प्यारी मिलन मिलाप ।
आप अपनपै खोइ के , तब टूटी तन ताप ॥ २ ॥

नगर नारि ढिंग सहर सेत के , पार पदम धुन सुनि लागी ।
भागी भरम जाल तज डोरी , मोरी सूरति अनुरागी ।
समुँद तीर जुझाइयाँ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

सिंध समुँद स्रुत स्याम से , न्यारा सेत ठिकान ।
भान भूमि पर पदम है , जहँ पिया कदम रकान ॥ ४ ॥

अगम सहर सूरति की बातैं , सात समुँद न्यारी बोली ।
खोली खोज चढ़े चढ़ि समता, आदि अंत गति मति तोली ।
सर स्रुत गिरिये गुझाइयाँ ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

आदि अंत की सैल को , गुरु स्रुति संत लखाव ।
चाव चमक चढ़ गगन मैँ , तुलसी तोल अथाव ॥ ६ ॥

(७)

सैइयाँ तोरी यादड़ी मैँ बदन बिसारियाँ ॥ टेक ॥
हर दम मेहर हिये मैँ सूरति , मूरति मन तन सब हारी ।
न्यारी नाद साध सुन बानी, जानी जग बस बस भारी ।
संध से संब्द सिहारियाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गगन गरज नित नादड़ी , खड़ी सुरति सुन कान ।
मान मनोहर रीति को , समझैँ चतुर सुजान ॥ २ ॥

धुन सुनि सजी सीस पर सुंदर, हो दर करि करि कर कँवला।
धवला धुरा धोय कर धारी , प्यारी पद पूरन अमला।
चंदा दी जोत निहारियाँ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

धुनि सुनि के सम दम लाई , गई गगन के माहिँ।
नाहिं रही हिये होस मैं , सकल सोस नस जायँ ॥ ४ ॥

अरज अली भली भल करि भाखी, राखे रस बस पिउ प्यारी।
सारी समझ सील के साथी , माती रँग रस मतवारी।
फँदीदा फंद निकारियाँ ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

फंद फाड़ि बाहर गई , लई जो सतगुर बाँह।
जहाँ धूप रबि ससि नहीं , तुलसी पहुँचे ताँह ॥ ६ ॥

(८)

सिकल कराइयाँ पिया हिये नैनाँ दी ॥ टेक ॥
सिकलीगर गुरु सिकल कराई , तन तलवार मलामल जाई।
काई कूर दाग अंदर के , खंदर करके दरसाई।
परखत पिव ले खिराइयाँ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

मन मरजादा मुसकिला , दीन्हा जौहर निकार।
सार तत्त तन तेल से , छूटे विकल विकार ॥ २ ॥

गगन गवन गइ प्रेम प्रीति से , हित चित करके घर धाई।
साईं समझ सुरत की बातें , साथे सूरत अपनाई।
अली अस अकल अराइयाँ ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

सुन्न द्वार दुरबीन मैं , मकर सुरति के तार।
पार पदम के कंज मैं , मंजन निकर निहार ॥ ४ ॥

सतगुर सुरति समझ की साँची, काँची कलमल सब धोई।
सोई जुगन जुगन की जागी , भागी सब रस भव खोई।
तुलसी दुख ले जराइयाँ ॥ ५ ॥

(९)

अली मुख खेलो सारँग सुधारी , यह दुहेली प्यारी ॥ टेक ॥

भँवर भवन गुंजे री गगन स्यामा धारो री ।
यह बिध कीन्ही साधन प्रीत ॥ १ ॥
अंड अकार नील चक्र चढ़ द्वारे री ।
तुलसी कह दीन्ही यह सब रीत ॥ २ ॥

(१०)

नैनों दे नजारे मारो गोसा तानी वे बिरह* बानी ॥ टेक ॥

धनुवाँ बान धनुष सूरति मुख जानो री ।
सो रन दीन्ही यह रन पीठ ॥ १ ॥
सुंदर बन बाट कमठ मग मोड़ो री ।
तुलसी तत तारी यह दुहेली प्यारी ॥ २ ॥

(११)

केहि बिधि कीजे पिया के दीदार, यह दुहेली प्यारी ॥ टेक ॥

ललकित गात बात सुन साधन करो री ।
तन मन सुरति सिधार ॥ १ ॥
राग जगत बैराग बिषय निकारो री ।
तुलसी लख पाऊँ जिया को किदार ॥ २ ॥

(१२)

आली मुख बानी अगम निसानी वो सुजानी जानी ॥ टेक ॥

गोलाकार अकार अंड दिस दस नारी ।
नारी संत बखानी ॥ १ ॥
तत मत पाँच पिंड करता नाहिं रचना री ।
तुलसी अकथ कहानी ॥ २ ॥

(१३)

हेली सुन माहिँ धड़कत छाती वो बसाती नाहीं ॥ टेक ॥

बन फल फूल मूल मिल घर पाती री, कुर्बात करो दिन राती ॥१॥
अब सुन सीख ताक तक सिस्त भरो री, तुलसी अगम घर जाती ॥२॥

---

*एक लिपि में "बिरह" की जगह "बिचारे" है ।

(१४)

कौन विधि कहा करौँ री दइया, हियरे उठत हिलोर ॥ टेक ॥
पिय की पीर नीर मछरी ज्यौँ, मैं तड़फौँ विन तोर ॥ १ ॥
तुलसी मौत देवे बिरहन को, जियरा सहे दुख मोर ॥ २ ॥

(१५)

वहुर मोरी कौन सुने रे सैयाँ, दुख जग मैं घनघोर ॥ टेक ॥
विष की वेल बढ़ी करमन से, यह पापी मन चोर ॥ १ ॥
तुम विन विदित करे को तुलसी, पावे न ठोका ठौर ॥ २ ॥

(१६)

नैना बिन चैन नहिं पिया, बिरह लागी दुख देन ॥ टेक ॥
गुर की मेहर बिना दुख जिय के, वे दरसावैं ऐन ॥ १ ॥
तुलसी सुरत बाट सुंदर मैं, जो कोइ माने कहन ॥ २ ॥

(१७)

सुरत मोरी छाय रही री गुँइयाँ, गगना मैं करत किलोल ॥टेक॥
निरखत नैन खुले नेहड़े के, मगन मधुर सुन बोल ॥ १ ॥
गाउँ री गवन भवन तुलसी का, अधर अकंथ अमोल ॥ २ ॥

(१८)

मुकर चढ़ि झाँक रही रे सैयाँ, सूरज किरन करोड़ ॥ टेक ॥
पूरन ब्रह्म कहत पद जा को, जहँ रजनी नहिं भोर ॥ १ ॥
अमर अखंड बिदेह विराजत, तुलसी मोर न तोर ॥ २ ॥

(१९)

गुमठिया गैल दरसानी, जानी हो खेली अलबेली ॥ टेक ॥
अड़बड़ आठ पहर अरथाइलो, अष्ट कँवल को घर ध्यानी ।
एरी सत मत हेली हठ मानी ॥ १ ॥
सुरत मतवाली आली हरख पठाइलो ।
भँवर भवन ये रीत सानी, तुलसी अटपट फैली बयानी ॥ २ ॥

(२०)

सुरतिया एरी नभ छाई, आई हो सुन्न मैं बोल ॥ टेक ॥
भामिन भमन ममन मन भइलो, दस दिस देखि दृगन दरसइलो ॥१॥
बिरह बेत एजो उठ आनी, तुलसी तन मन गगन समाई ॥२॥

(२१)

रूप दे रस रहदा गंदे ॥ टेक

यह अंग अगिन जरे मन मूरख, बारू बदन बनाया वे।
धाया कीट करम रंजक तन, भट्टी बुरज उड़ाया वे॥
ज्यों काया महताब हवाई, जल बल खाक मिलाई।
जम की जाल जबर नहिं छूटे, छूटे अंग इलाही॥ १॥
खाविंद का कर खोज खुदी कुल, खिलकत खोज न पाया वे।
पैदा किया खाक से पुतले, यारी यार भुलाया वे॥
सब जहान दोजख दुनियाई, साहिब सुधि बिसराई।
जब लेखा लें ज्वाब फिरस्ते, हाजिर होस हिराई॥ २॥
गाफिल गुनह गजब की बातें, कुछ फहमीद न लाया वे।
आतस हवा जिमीं जिन कीन्हा, आब और ताब बनाया वे॥
मालिक मूल मेहर बिसराई, आलिम इलम सोहाई।
आदम बदन बनाया जिनने, उनका कुफर कहाई॥ ३॥
खिलकत फना फिरे दोजख में, यों कुफरान कहाया वे।
भिस्त राह बुजुरुग बतलावें, सो कुछ ख्याल न लाया वे॥
हकताला* कर पेच पसारा, तुलसी पकड़ मँगाई।
तोबा तोब गले नहिं फुरसत, मुरसिद यों समझाई॥ ४॥

(२२)

नाम दी रटि ले रे बंदे॥ टेक॥

अजब खुवारी खलक खेल में, खूबी खूब बनाई वे।
नूर जहूर हाल से वाकिफ, रहबर† रमक जनाई वे॥
फादे फजल फरक फहमीदे, इल्लति दूर बहाई।
कहर कुफर काफर कूँ बूझा, जुलमी राह छुड़ाई॥ १॥
रजा मेहर मुरसिद मालिक की, चौखट चमक चिमाही वे।
चौबारे के निकर निसाने, दीन्हा अलफ लखाई वे॥
अंदर अबर पार पौड़ी के, डोरी डगर लगाई।
जो कामिल उस्ताद अरस के, असली ऐन बताई॥ २॥

---

* सर्वोपरि स्वामी। † गुरू।

लासरीक* अल्ला आलम से, कीन्ही सफर सफाई वे।
पर विन परी करी असवारी, मेहर इनायत† पाई वे॥
मूल झलक झरने के ऊपर, सन्मुख मुकर मझाई।
सँग महबूब खड़ी खाहिस कर, रूह में रूह मिलाई॥ ३॥
पल पल प्रेम प्यास प्रीतम ने, नैनों नजर छकाई वे।
अधर नीर अमृत की धारा, दीन्ही नदी बहाई वे॥
प्यारे पुरुष यार आसिक ने, लीन्ही अंग लगाई।
तुलसी ताके नैन झरोखे, नूरी छबि दिखलाई॥ ४॥

(२३)

भृङ्ग दी गति गहो रे बंदे॥ टेक॥
कीन्ही कीट कर्म से कीड़ा, भृङ्गी नाम सुनाया वे।
सरवन सब्द नाद जब निरखा, अपना रूप बनाया वे॥
यहि विधि संत ग्रंन मत मारग, अंदर अधर मिलाया।
सादर सुत सूरत को तजि के, भज भव भर्म छुड़ाया॥ १॥
सतगुरु दया भया मन दृढ़ के, जब हिये हर्ष जुड़ाया वे।
सिंध विच बुंद धसा सुंदर में, आपहि आप कहाया वे॥
मेहर मलूक ऊख रस प्याला, मुरसिद घोट पिलाया।
अंदर अमल अरस में भीने, हो आसिक अस आया॥ २।
भृङ्गी कहन कीट नहिं माने, मूरख मर्म न पाया वे।
सतसँग समझ रमज नहिं बूझी, जुग जुग जन्म बुड़ाया वे॥
अन्ध असार सार सुधि भूले, पार परख नहिं पाया।
जग रस रंग संग में उरझे, वादै जन्म गँवाया॥ ३॥
अलल पच्छ पच्छिम के माहीं, उलट अकास समाया वे।
भुईं पर आय धाय धुर पहुँचा, जब अपनी सुधि लाया वे॥
जब परिवार परख घर अपना, सुत पित मात समाया।
जीव तजे जड़ताई तुलसी, जब वह ब्रह्म कहाया॥ ४॥

* जिसका कोई साझी नहीं है। † दया।

(२४)

दृग नैनन बिच बाट अटारी ॥ टेक ॥
सूरति चटक चली नभ ऊपर, नित नित सैल सँवारी ॥ १ ॥
सतगुर अधर अगम अति सागर, चढ़ि चढ़ि निरख निहारी ॥२॥
सुखमन घाट सुन्न मत मारग, पाया पुरुष अपारी ॥ ३ ॥
मिलि लै लार पार परदे बिच, अन्त पुनि आदि अगारी ॥४॥
प्रति प्रति प्रीति परम पद पूरन, भई सत संत अधारी ॥ ५ ॥
सत सतसंग बिमल मति न्यारी, सूरति मुख सुख भयो भारी ॥६॥
यह जग अन्ध धुंध भव सागर, भूले बहुत अनारी ॥ ७ ॥
तुलसीदास आस सतगुर की, संत चरन बलिहारी ॥ ८ ॥

(२५)

चरनन हित चित चेत सिधारी ॥ टेक ॥
दीदा दरस परस पद सीतल, भव कृत कर्म बिसारी ॥ १ ॥
यह जग जाल काल कुल काया, माया मदन बिचारी ॥ २ ॥
यह तन झूँठ छूट छर छाया, निरख निकर होय न्यारी ॥३॥
यह मत मान जान जिव कारज, स्वारथ सुरति निकारी ॥४॥
तुलसी तत्त मत्त सत मारग*, आगर अरध उबारी ॥ ५ ॥

(२६)

प्यारे पिया परदेस हो गुइयाँ री ॥ टेक ॥
सइयाँ देस बिदेस बिरानी, का से मैं कहौं री सँदेसा ॥ १ ॥
कौन उपाव करौं मोरी सजनी, करिहौं मैं जोगिन भेसा ॥ २ ॥
हिये नहिं चैन रैन नहिं निद्रा, बिरह बिथा तन लेसा ॥ ३ ॥
भेजौं भौन कौन बिधि पाती, गाती गुन उपदेसा ॥ ४ ॥
तुलसी निरखि जात नर देही, जोबन गये अली ऐसा ॥ ५ ॥

(२७)

प्यारे पीर तड़फ हो जियरा ॥ टेक ॥
नैन बेचैन बहै जल नीरा, हर दम हिये री धड़का ॥ १ ॥
कजरा बिंदुली न सिंदुरवा सुहावे, अँगिया का बँद तड़का ॥ २ ॥

*एक लिपि में "सागर" है।

जस जल रहन कहन कहु कछुवा, अँड सम सूरति खड़का ॥ ३ ॥
अरी बेहाल बिलख बिन सइयाँ, रही मत मैान मड़का ॥ ४ ॥
तुलसी सतगुर भेद लखाई, पावे सूरति सड़का ॥ ५ ॥

(२८)

प्यारी सतगुर ने दीन्हा भेद, जहँ सुन्न न स्वासा वेद ॥ टेक ॥
पाँच तत्त तन मन नहीं, काया करम न खेद।
जीव जनम मरना नहीं, नहिँ बंधन नहिँ कैद ॥ १ ॥
सुरति सिखर अंदर धसी, आली अधर अनी नभ छेद।
ता बिच पैठ निहारि के, जहँ अद्भुत अलख* अभेद ॥२॥
गढ़ी गुमठ के द्वार को, जिमि फाटक तोड़त गैंद।
मूरति मैं सूरति भरी, माने पोहप मोती बेध ॥ ३ ॥
गगन गली गरजत चली, अली उर हिये हरष उमेद।
तुलसी घट परिचय भई, जहँ बीज वृच्छ नापैद ॥ ४ ॥

(२९)

प्रीतम प्रीति लगन मन फसियाँ ॥ टेक ॥
निरखत नैन चैन चितवन मैं, दीप द्वगन चढ़ि चसियाँ ॥१॥
पल पल लगन लगी वोहि मारग, सुरति सिखर पर बसियाँ ॥२॥
दृढ़ करि डोर पोढ़ पद परखी, लखि गुर गगन परसियाँ ॥३॥
तुलसी तत्व तलासी पावे, धार अधर घर धसियाँ ॥ ४ ॥

(३०)

तिल दे अंदर मिलदा यार, अरस अवाजा ॥ टेक ॥
गगन मगन अमल अबर, गुन हटावत नैन नगर।
अदली अबर खोज ले खबर, मंदर मैं बिराजा ॥ १ ॥
अनँद सनँद घुमर घोर, धुन उठावत चिसल ठौर।
धवल पदर परख परख, सुन्दर मैं समा जा ॥ २ ॥
सधर जिगर लखन लोक, पुनि सुनावत निगम नोक।
निरत नैन सुरत पैन, झमक मैं झमा जा ॥ ३ ॥

---

*एक लिपि में "अलग" है।

तुलसी लख तक न बोल, भर्म भुलावत मग अतोल।
अजर आज फिर न काज, खिड़की खुला जा ॥ ४ ॥

(२१)

जमदा जुलम दम दे द्वार डगर बचा जा ॥ टेक ॥
सहस गुंजार भँवर गुंज, पवन चढ़ावत अधर पुंज।
सेत फोड़ गगन मगन, नगन हो चला जा ॥ १ ॥
जैमन चंद केत सूर, येही भुलावत जुगन मूर।
जुगल बाट घर न घाट, गाँठ गुन गसा जा ॥ २ ॥
जड़न चेतन गाँठ खोल, जाही से पड़ी न परख तोल
भरम करम जुगन जीव, जोनि में परा जा ॥ ३ ॥
गुर सनंद बिन अनंद, छूटत नहिं नरक फंद।
सुरत साफ कर मिलाप, सब्द में समा जा ॥ ४ ॥
सब्द सब्द भेद चीन्ह, जैमन जम के अधीन।
ओअं सब्द निरंकार, जाल से न भाजा ॥ ५ ॥
भुगतत सब सृष्टि भोग, ...।
तन मन बैराट मनुष, नैन में निवाजा ॥ ६ ॥
आवा गवन गुन की गैल, जैमन जिन कीन्ह सैल।
सरगुन मन गो निवास, गरभ में बिराजा ॥ ७ ॥
केत लगन सब्द पवन, अनहद सुन भवत भवन।
चंद सूर स्वास फेर, फाँस में फसा जा ॥ ८ ॥
रवि ससि अंड अगिन बास, पौन पानी पिरथी अकास।
जैमन केत रहत कहाँ, खोज को लगा जा ॥ ९ ॥
नेह तत दरबार बूझ, जा से परत समझ सूझ।
चरन चिन्ह बिन अकास, आस को उड़ा जा ॥ १० ॥
बिगर संत नहिंन अंत, पावत नहिं डगर पंथ।
मेहर मूल लख अतूल, लगन को लगा जा ॥ ११ ॥
सुन को सब्द बेहद नगर, सतगुर की गैल डगर।
पावे सुत सुन बिलास, अगम की अवाजा ॥ १२ ॥

तुलसी तन्त लख वृतन्त , यहि बिधि सब कहत संत ।
संगत कर खोज रोज , साध की समाजा ॥ १३ ॥

(३२)

साँडे नाल तैडियाँ महबूब ॥ टेक ॥
मंडप महलाँ वे आवे अवे छुप बैठा मियाँ ।
तेरी कुरबानी जाऊँ खूब ॥ १ ॥
तुलसी एक नालाइक बन्दा मियाँ ।
फजली अहल अजूब ॥ २ ॥

(३३)

साँडे नाल कोदियाँ वे दिलदार ॥ टेक ॥
तेरी तै खातर सानूँ बन बन ढूँढा मियाँ ।
मिले गुर दीद तिल तार ॥ १ ॥
दिल दधि दा मथना कीदा मियाँ ।
तुलसी दी रूह लीलार ॥ २ ॥

(३४)

कहाँ सब रहदाँ वे सानू यार तैंडे ।
महबूब तलासी मैं करदी वे ॥ टेक ॥
दर्द दीदारेँ दा दर्द दिलेँ मैं वे ।
तड़फ हियेँ दे मैंडे हर दम उठदी वे ॥ १ ॥
तुलसी सब्द तन तीर खटकदा वे ।
अंदर मैं मैंडो भाल कसकदी वे ॥ २ ॥

(३५)

सानू कित होदा वे , साडे नाल ढूँढत देस ।
डगर बिसराँदी वे ॥ टेक ॥
पतियाँ लिखेँ वे तैंडा भेद भुलाँदी वे ।
मारग तुझ नू मैं खोज हिराँदी वे ॥ १ ॥
सुकर गुजारंदा दीद दरगाह में वे ।
जहाँ दिल दर्द अरज गुजराँदी वे ॥ २ ॥

मैंडी तो पुकार पंथ दा मिलना वे ।
तुलसी तन ब्याकुल पीर पिव दी वे ॥ ३ ॥

(३६)

लाज कहा कीजे री, घूँघट खोलो आज ॥ टेक ॥
लाजहि लाज अकाज भयो है, सुंदर यह तन साज ॥ १ ॥
सब तन अंग निहंग निहारे, परदे प्रगट बिराज ॥ २ ॥
स्वामी सब अंतरगति जाने, ब्याकुल सकल समाज ॥ ३ ॥
तुलसी तन मन बदन सम्हारो, सोई साहिब सिरताज ॥ ४ ॥

(३७)

बात वोहि कीजे री, जेहि बिधि आवे हाथ ॥ टेक ॥
मन गुन प्रान पतंग उड़ावत, नैन निरंजन साथ ॥ १ ॥
जिन जग में भवजाल पसारा, जीव बिबस बिष खात ॥ २ ॥
माने न हटक कहन काहू की, मैं बूड़त उतरात ॥ ३ ॥
यह मन नीर मिरग त्रिसना को, बिन जल तरँग समात ॥ ४ ॥
और उपाव करे बहुतेरे, सतगुर कूँ पतियात ॥ ५ ॥
तुलसी दर्द घटे यहि भाँती, औषध से दुख जात ॥ ६ ॥

(३८)

प्रीतम प्रान नैनों बिच बसे री ॥ टेक ॥
टेढ़ी तनक मगन मन मारग, बंधन बेद बेचैन ॥ १ ॥
गो गुन गढ़न बदन बैराटा, बुझे न करतब कहेन ॥ २ ॥
सतसँग रंग रीति नहिं जाने, माने न सतगुर बैन ॥ ३ ॥
यह जम जाल जुलम अति दारुन, तुलसी तिमर तन पैन ॥ ४ ॥

॥ राग बरवै ॥

(१)

कोई साधो संतो सुरति लखाय दीजो रे ॥ टेक ॥
अधर अगम रस रीति की रे, बूटी देउँ बताय ।
जनम मरन छूटे सोई रे, घूँटी देउँ पियाय ॥ १ ॥
घाट बाट ब्रह्मंड की रे, पता न जानूँ भेद ।
सतगुर के परचे बिना रे, भई करम की खेद ॥ २ ॥

नाव पुरानी केवट मन रे, विष रस भया अलीन।
सिंध समुँद दरियाव में रे, डार भँवर विच दीन्ह ॥ ३ ॥
मन तन मूरख मूढ़ की रे, गूढ़ गली गति गाय।
जाय गुरन सतसँग करे रे, जब थिर थीब थिराय ॥ ४ ॥
अधर भूमि पिय पार की रे, दीजो लखन लखाय।
दाँव देह अबको मिली रे, सो उतरो अगम अथाह ॥ ५ ॥
तुलसी नीच निहारि के रे, बीच न राखो कोय।
सरन बरन बरवे कही रे, होनी होय सो होय ॥ ६ ॥

(२)

दया कीन्ह सूरज किरन कियो भास ॥ टेक ॥

गगन मँडल मंदर नहीं रे, जब नहिं जिमीं अकास।
ससी सूर जब ना हते, जब रवि कीन्हा बास ॥ १ ॥
पुरुप तेज रवि मद्ध मेँ, कस कस उतरो आय।
जब अकाय कहो कहं रहे, जिन काया कीन्ह बनाय ॥ २ ॥
जल पावक और पवन को, कीन्हो कैान विधान।
जीव तत्त तन पाँच मेँ, कस कस आयो निदान ॥ ३ ॥
सतगुर से चेला भयो, गयो छूट घर धाम।
नाम बिना भटकत फिरे, एक अनेकन ठाम ॥ ४ ॥
तुलसी तोल अतोल, बूझि संत कोइ पद लखे।
चखे अधर रस मूल, जो अमोल हिये में पके ॥ ५ ॥

॥ कलंग राग ॥

(१)

लै लो लोचन चीन्ह एरी लै लो ॥ टेक ॥

निज अनरूप दरस दरपन में, दृष्टि को मिलाप करिये
कँवल केल सूरज मुख मेलो खेलो ॥ १ ॥
मंदर मठ सुमिरन सुंदर में, घट विलोकि लखिये।
पदम पार जगमग उजियेलो गैलो ॥ २ ॥

पूरन पुरुष पाखड़ी अंदर, अज अधार चलिये।
सेत घाट सूरत झकझेलो पेलो ॥ ३ ॥
तुलसी तोल अतोल अधर घर, सत्त को सरूप धरिये।
पद मिलाप धुर गुर मिलि चेलो भेलो ॥ ४ ॥

(२)

एरी दीदे नदीदे दरस बिना ॥ टेक ॥
भटकत भँवर पिया बिन प्यारी।
तोल के तहकीक कीन्हा बिषय बास।
मन भव रस बीधे गीधे ॥ १ ॥
मद मलीन पल पल में धावत।
हटक न माने मोरी।
चलै कुपंथ नहिं मारग सीधे गीधे ॥ २ ॥
बारम्बार कहन नहिं माने।
अरे अचेत नर नहीं सुधार।
सूरत रस हीदे पीदे ॥ ३ ॥
तुलसीदास आस अपने में।
रूप में अरूप चीन्हे।
बिन दीदार कारज नहिं जीदे कीदे ॥ ४ ॥

॥ धमार ॥

(१)

अहो बस कान्हा गो माहीं हो ॥ टेक ॥
गो की गोप करम कही ऊधो, गुन सँग गैल गुवाल।
नित नित चाल चले मधुबन की, इंद्री रस खान बसाई ॥ १ ॥
अच्छर रमत राह भई राधे, नंद नाद सुत कान्ह।
खेलत खेल मेल फरफूँदी, बूँदी तन रुचि सुहाई ॥ २ ॥
सब बृज बनिता बिंद बन कीन्हा, जसुमत सोमत जान।
जो जस बुंद सिंध में आये, ता की करि खोज लगाई ॥ ३ ॥

अरी अरजुन भव खान भीम वप्न, नकुल भये जग आई ।
सहदेव देह देख आपन को, दो दृष्टि दो दृष्टि लखाई ॥ ४ ॥
सूद सुवार पार तोहि कीन्हा, सुन बिधि बात बिचार ।
छूटै मान खान चौरासी, सूरत सत द्वार लगाई ॥ ५ ॥
तुलसी तोल बोल मन भूला, मूल मरम नहिं जान ।
मन गुन ग्वाल गोप गोपी सम, नित नित बिधि भवन समाई ॥६॥

(२)

अहो सत सुरत सहेली खुल खेली हो ॥ टेक ॥
गरज घुमर घनघोर सोर सखि, घट पट चटक चढ़ाई ।
पल पल पलक पार दल अंदर, चितवत नैन पट पेली ॥ १ ॥
घर घर से सब गवन सुहागिल, भेंट भवन सब आई ।
जिन मोहिं गैल सैल समुँदर की, कीन्ही दृढ़ भान से भेली ॥ २ ॥
गगन गिरा गुन गाँठ छुड़ाई, भिन भिन बाट बताई ।
सूरत सब्द समझ सुन माहीं, भइ गुर मारग चेली ॥ ३ ॥
मैं मतिमंद फंद फँसी खाना, जाना न भेद भुलाई ।
बिष रस बिषम बिषय मन माहीं, धोई तुलसी बुधि मैली ॥ ४ ॥

(३)

अहो रँग राती रँगीली रस माती हो ॥ टेक ॥
सजन सिंगार सार सुख सागर, दुख सुख दूर बहाई ।
चढ़ि कर महल टहल सतगुर की, निरखा भिनि भिनि पिय भाँती ॥१॥
पिय पद परस पलँग पिउ प्यारी, सब बिधि सेज सम्हार ।
रस बस समझ सुरत पिया पद को, मो सेँ कछु कहन न जाती ॥२॥
रैन चैन रस रीत जीन करि, नित नित सैल सुनाई ।
जोड़ जोड़ सखियाँ समझ घर आई, कीन्हा पिय के सुख साथी ॥३॥
तुलसी पोढ़ जोड़ सम सूरत, सोइ सोइ भेद लखाई ।
जो बेमुखी दुखी दुनियाँ में, जुग जुग जम मारत लाती ॥४॥

(४)

अहो नभ निरख निहारी पिउ प्यारी हो ॥ टेक ॥
सेत बरन सम सुरत समानी , कारे कँवल निकार ।
पारे पवन भवन सुत लागी , भागो भिन सबद बिचारी ॥ १ ॥
दल पर नल निज नैन नगर मैं , चली चढ़ सुन्न मँझार ।
लै की लगन जाय जिन साजी , भाजी लखि लोक निनार ॥ २ ॥
नल की नाल चाल चौंटी सम , भँवर गुफा सम धाम ।
ता के पार परम पद देखा , लेखा निज जनम सुखारी ॥ ३ ॥
मिलन मिलाप साफ सुत घर मैं , सर सम सब्द सुधार ।
सार समझ सुन मारग आई , तुलसी चढ़ि सुरत हमारी ॥४॥

(५)

अहो अज आदि अतूला पद मूला हो ॥ टेक ॥
भवन चतुरदस से पद न्यारा , निरगुन जोत न जाई ।
सुन्न न गगन धरन नहिँ तारा , न्यारा कँवल कहुँ फूला ॥ १ ॥
रवि नहिँ चंद फटक उजियारा , खुल गये अजर किवाड़ ।
महल माहिँ सुनि धुन धधकारी , या से न्यारी चढ़ि फूला ॥ २ ॥
सब्द न सार लार नहिँ सूरति , मूरति मन नहिँ जाई ।
जहँ रहैँ संत अंत कछु नाहीँ , औघट घाट खिड़की खोला ॥३॥
अगम अपार पार कहा गाऊँ , जाऊँ नित नित धाय ।
कंथ को पंथ बेअंत बिचारो , जिमि फाटक पर गज हूला ॥४॥
तुलसी तोल बोल नहिँ आवे , जावे जो देत जनाई ।
गूढ़ गुप्त परगट नहिँ खोली , गावत सब्दन सँग भूला ॥ ५ ॥

(६)

अहो सतसंग अमोला जिन तोला हो ॥ टेक ॥
करि करि संग रंग नहिँ जाना , कित बदरी कित काल ।
हाल के हेत हरख सब भूले , या से परिहै झकझोला ॥ १ ॥
कहि कहि अंत संत सब हारे , बूझैँ न सब्द सुधार ।
पर की खबर सुनत उठि भागे , लागे जिमि माँगत मोला ॥ २ ॥

नहिँ कछु दाम धाम धन माँगैं, करि पर हेत सुनावैं।
लेत न देत हेत साईं के, परमारथ की गाँठ खोला ॥ ३ ॥
सुनत सुनाय गाय बहु भाँती, साधी न समझ बिचार।
कस कस जार लार भव छूटे, लूटे जम जानत पोला ॥ ४ ॥
तुलसी समझ कूर कूकर सम, छाड़े न सूकर चाल।
ता से बेहाल काल नित मारे, पारे पद चीन्ह न चोला ॥ ५ ॥

(७)

अहो सतसंग समाना जिन जाना हो ॥ टेक ॥
सतगुर मरम भरम गढ़ तोड़े, मोड़ भये मन दीन।
लीन्हे चरन सरन सतगुर के, भीने रस रीति सिराना ॥ १ ॥
जिन के इस्क इष्ट संतन को, प्रति प्रति दरसन लार।
पार का सार धार दरसावैं, दुख छूटत भव भ्रम खाना ॥२॥
दरस परस मन मंजन पाना, सूरत रुचिर निकार।
देत निहारि ताल कर कूँची, ऊगे निरखत घट भाना ॥ ३ ॥
उमँगी लहर सहर सूरत की, लखि लखि अंड अकार।
चढ़ि चढ़ि चटक फटक उजियारी, तुलसी निज निरख ठिकाना ॥४॥

(८)

अहो मन भरम भुलाना विष खाना हो ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तीस तैंतीसा, तिन की तरँग तुलाई।
जाय जो जोनि भवन चौरासी, बासी बस वास निदाना ॥ १ ॥
ज्ञान न ध्यान जान नहिँ माने, मन मत की दिस जाई।
ता से करम ईस सिर ऊपर, बाँधत जम जग फिर लाना ॥२॥
तपत सिला जिय तपन जरावे, तड़फ तड़फ दुख पाई।
वा बिधि वक्त सख्त कहि गाऊँ, जाने जोइ भोग समाना ॥ ३ ॥
तुलसी आज काज नर देही, फिर नहिँ नर तन हाथ।
सोवत खात सैन सुख माहीं, बिनसे घट बीत सिराना ॥ ४ ॥

(६)

अहो आली होरी लख बौरी हो ॥ टेक ॥
सूरत रंग रँगो मन केसर, लै पच पाँच निकार ।
सखियाँ पचीस पकड़ि पिचकारी, मारो मन को मुख मोड़ी ॥१॥
भरम अबीर गुलाल गुनन को, कर सतसंग उड़ाई ।
ज्ञान को छान छड़ी भर सूरत, सन्मुख नैना नित जोड़ी ॥२॥
चोवा चित्त अरगजा आसा, कुमकुम कुमति बिसार ।
घरि घरि घूर कूड़ सब काढ़ो, करमन कर कीचड़ धो री ॥३॥
नर तन नगर बिंद बिंदाबन, तन मन चीन्ह बिहार ।
होरी अंग भंग करि जानो, तुलसी रुज साज मिलो री ॥४॥

॥ होली ॥

(१)

पानी मेँ मीन पियासी, कोइ जानत संत बिलासी ॥ टेक ॥
ससि सम अगिन सूर सम सीतल, जहँ नहिँ तत्त निवासी ।
जल बिच अगिनि ताल बिच तारे, ज्ञानी गुन गन बासी ॥ १ ॥
जग मेँ बंद फंद सब फैला, माया मन की दासी ।
बिधि बैराट ठाट सब उरझा, डाल गले बिच फाँसी ॥ २ ॥
परमहंस बैरागि गुसाईं, मानी जोग सन्यासी ।
यह जग जाल काल बिलछानी, सब जग जात निरासी ॥ ३ ॥
सतसँग सार लार संतन के, सतगुर चरन निवासी ।
तुलसी तरक फरक घर ध्यानी, तब पाया अबिनासी ॥ ४ ॥

(२)

देखा बिधि बाग बिलासा, ता मेँ तरु ताल तमासा री ॥टेक॥
अनि अनि बिटप बेल बन फूले, कंजा कँवल निवासा ।
नाना गंध सुगँध सुखकारी, भृंगी भँवर हुलासा री ॥ १ ॥
दादुर मोर घोर घन छाये, खग पंछी वृक्ष बासा ।
यह घट मूल फूल फुलवारी, तो निरखा खेल खुलासा री ॥२॥
सतगुर ने दल कँवल लखाये, काटे करम निरासा ।
सूरत दौड़ि फोड़ि दस द्वारे, दीन्ही पुरुष दिलासा री ॥ ३ ॥

तुलसी सैल महल घर अपने, आई पिय पद पासा री।
हिलिमिलि प्यार दियो सुख सागर, मिटि गइ जग अभिलाषा री॥४

(३)

तन मैं तत मूल समाना, सब खोजत बेद पुराना री॥ टेक
यह तन मैं ब्रह्मंड बखाना, भाखत संत सुजाना।
परमहंस बैरागि गुसाईं, सब ढूँढ़त भेष भुलाना री॥१॥
ऋषी मुनी अवधूत मिले सब, भाखैं सास्त्र पुराना।
ता मैं भूलि पड़े जग पंडित, सब करि करि कुल अभिमाना री॥
तिरथ बरत पुन दान दृढ़ाया, दुनियाँ दिल उरझाना।
करि अस्नान महातम भाखा, सब ता ते लेत कुधाना री॥३।
बंधन धरम करम करि बूड़े, लगे न एक ठिकाना।
यह गति जगत जीव चौरासी, भूलि परे सब खाना री॥ ४
तुलसी अंत संत कोइ पावे, छूटा जग जिव जाना री।
पंडित भेप टेक मद माते, यह सब फैल फुलाना री॥ ५

(४)

सब जग बिधि बेद चुड़ाया, या से कोइ पार न पाया री। टेक
कहत वेद इतिहास पुराना, स्रुति सब नेत सुनाया।
सिम्रित समझि बूझि सोइ भाखा, सोइ स्रुति ने साफ उड़ाया री॥१
विधि वेदांत ब्रम्ह बतलाया, परमहंस मत भाया।
निरंकाल काल जग डारा, सोइ काल को ब्रम्ह बताया री॥२
दीनदयाल काल से न्यारा, सो कोइ संतन पाया।
जोगी परमहंस भ्रम भूले, सोइ नाहक मूड़ मुड़ाया री॥३
जग संसार लार सब लागा, तीरथ बरत दृढ़ाया।
निरंकाल काल को थापा, पद पुरुप को राह छुड़ाया री॥४
तजि कोपीन चीन्ह चित नाहीं, जड़ बस ब्रम्ह बँधाया।
छूटै गाँठ बाट तब पावै, मिलि सतगुरु गगन फोड़ाया री॥
दसवेँ द्वार पार चढ़ि सूरत, तब विधि ब्रम्ह कहाया।
सास्तर बेद* ज्ञान सब झूठे, जड़ इंद्री मिलि मन माया री॥६

*एक लिपि में "बेद" की जगह "बैन" है।

मन को ब्रह्म भाव कर गाया , बालक रूप बताया ।
जग सब झूठ लूटि करि खाया , धिग पिँड पेट बढ़ाया री ॥ ७ ॥
पंडित कूड़ मूढ़ नहिँ जाने , पढ़ि पढ़ि जनम गँवाया ।
बेद बिबाद उपाधि लगाया , तुलसी तन तार तुड़ाया री ॥८॥

(५)

साधू मति बेद न पाया , निरंकार अकार न माया ॥ टेक ॥
काल जाल निरंकार कहावे , या को नेत गुहराया ।
संतन पंथ अंत मति न्यारा , जिन आदि अनादि सुनाया ॥१॥
पाँच तत्त बैराट बनाया , पिरथी जल पवन समाया ।
अगिनि अकास भास मिलि पाँचो, सो यहि बिधि अंड कहाया ॥२॥
निरंकार आकार भया जब , या से उपजी माया ।
बन ब्रह्मंड अंड सब कीन्हा , रज तम सत उपजाया ॥ ३ ॥
ब्रम्हा बिस्नु नाम गुन केरा , सरगुन गाँठ बँधाया ।
सास्त्र पुरान कीन्ह मुनि कारन, बिधि ब्रम्हा ने बेद चलाया ॥ ४ ॥
रच्यो बैराट स्वास बिधि ब्रम्हा , नाद से बेद कहाया ।
नाभी कँवल खोजि पचि हारे , सोइ ब्रम्हा आप हिराया ॥ ५ ॥
अड ब्रह्मंड तत्त नहिँ कीन्हा , नहिँ बैराट न काया ।
जब का अंत संत समझावैँ , सोइ तुलसी संत सुनाया ॥ ६ ॥

(६)

साधू मत मूल बखानी , कँवला दल सहस समानी ॥ टेक ॥
सूरत अष्ट कँवल दल दौड़ी , फोड़ा गगन रकाना ।
सिंधा सरक फरक भइ न्यारी , चढ़ि दल चार पिछानी ॥ १ ॥
ता मैँ सैल खेल लखि भाखी , अंडा अलख निसानी ।
चल दल कँवल जुगल जस गाऊँ , सतगुर दमक दिखानी ॥ २ ॥
पिंड ब्रह्मंड निरखि लखि पारा , आगे अगम अनामी ।
निरगुन पार ब्रह्म नहिँ जावे , संतन सो मति मानी ॥ ३ ॥
तज करि कहर मेहर घर अपने , महल मझ्झ* जब जानी ।
पाया पुरुष पलँग लगि बैठी , लिपटी तज लाज निदानी ॥४॥

---

*मज़हब, मति ।

तुलसी बेद पुरान घान सब, तजि घर घाट समानी।
सूरत धाय पाय पिउ प्यारे, छानी दूध और पानी ॥ ५ ॥

(७)

नर से निकसी इक नारी, कोइ बूझै साध विचारी ॥ टेक ॥
हाथ न पाँव सीस नहिं काया, खाया सब जग झारी।
माई न बाप आप से उपजी, खुद खसम की कीन्ह खुवारी ॥१॥
बारी न बूढ़ी तरुन तन नाहीं, सोवत सब जग मारी।
आवे न जाय मरे नहिं जीवे, जुग जुग रहत करारी ॥ २ ॥
ऋषी मुनी सब झारि बिगारी, सब जग त्राहि पुकारी।
रवि ससि सूर चंद तारागन, यह सब खाय बिडारी ॥ ३ ॥
चर और अचर सकल चर लीन्हा, कीन्ह ब्रह्मंड पसारी।
चेतन जाग भाग सोइ बाचे, जिन सतगुर सरन सुधारी ॥४॥
चीन्हे नारि पार सोइ पावे, तब उतरे भव पारी।
तुलसीदास फाँस तजि भागे, संतन साथ उबारी ॥ ५ ॥

(८)

होरी खेले सोहागिल नारि, पिया सँग ले झकझोरी ॥ टेक ॥
केवल माट भरो रँग केसर, ज्ञान गुलाल भरो री।
पाँच पचीस प्रेम पिचकारी, तीन गुनन मद मोरी ॥ १ ॥
भव कर भरम भाव भव डर को, आस अबीर उड़ो री।
कुमति को काढ़ि कढ़ाव भरो रँग, लोभ मोह छिड़को री ॥ २ ॥
आपन अंत पंथ पिया मारग, प्रीति पार पकड़ो री।
प्यारी प्यार यार प्रीतम बस, छिन छिन बीड़ी धरो री ॥३॥
प्रीति के पान चित्त कर चूना, लैा की लैाँग धरो री।
करमन काढ़ि करो मन कत्था, सुरत सुपारी धरो री ॥ ४ ॥
तुलसी फाग लाग लग लारे, छड़ियन लार लड़ो री।
करि असनान धूर धरि धोई, संत सरन पकड़ो री ॥ ५ ॥

(९)

होरी खेले रँगीली नारि, सैयाँ सँग अब न तजूँगी ॥ टेक ॥

मन कर माट चित्त कर चहला, कछनी काछ कछूँगी ।
धीर की धूर गोय का गोबर, मारत मैं न भजूँगी ।
सखी मन मैल मँजूँगी ॥ १ ॥

गुन की गुलाल मोह के मारग, सत से सोग हरूँगी ।
ज्ञान बिबेक एक करि राखूँ, इनके संग मँजूँगी ।
सखी पिया दाज दजूँगी ॥ २ ॥

भूली भेद भूमि मत मारग, गुर सँग ज्ञान गहूँगी ।
संतन साथ हाथ हिये मारग, जग सँग मैं न लजूँगी ।
सखी पिया पैज पजूँगी ॥ ३ ॥

पिया मोरे महल सैल सुति कारज, लाजन भूलि मरूँगी ।
चढ़ करि चैन ऐन अंदर के, खुलि के तुलसी गजूँगी ।
सखी गुर धीर धिजूँगी ॥ ४ ॥

(१०)

बिन सैयाँ सूना सिंगार, सखी मोरे हिये बिच हरख न आवै ॥ टेक ॥

पिया की सेज तजी जा दिन से, भटकत भेद न पावा ।
होरी संग सखी सब खेलैं, मोर परो नहिं दावा ॥ १ ॥

नर तन नगर बनी बिधि मारग, तिमर के तेल लगावा ।
मैं की माँग बनाइ सँवारी, ता से भेद भुलावा ॥ २ ॥

पाँच पचीस सखी रँग राती, इन सँग नूर गँवावा ।
रसिया तीन लीन मदमाते, इन लै दाव चुकावा ॥ ३ ॥

अब तो नैन चैन चित नाहीं, पिया की पीर सतावा ।
तुलसी तोल बोल सतगुर के, खोजत खोज लगावा ॥ ४ ॥

(११)

उमँगत झझक झकोरी, झमाझम खेलूँगी होरी निठोरी ॥ टेक ॥

पिया की लहर लटक टक आवे, जेहि बिधि चंद्र चकोरी ।
उठि के जाग लाग मन मारग, लै पिचकारी भरो री ॥ १ ॥

रंग गुलाल अबीर अरगजा, डारत मन मटको री ।
सैयाँ के सँग रँग झकझोरी, केसर माट ढुरो री ॥ २ ॥
प्यारो पिया रँग रूप भये हैं, जैसे काँच कटोरी ।
माँजत नैन बैन सतगुर के, संत सरन पकड़ो री ॥ ३ ॥
सूरति सैन ऐन पिउ प्यारे, आगे न खेल करो री ।
डारो रंग संग सुख सागर, तुलसी बाँह गहो री ॥ ४ ॥

(१२)

होरी खेल साध सुजान, अगम गम सुरति लगाई ॥ टेक ॥
काया कोट किले दरवाजे, मन मथि चाल चलाई ।
फहम की फौज ज्ञान का गोला, गरजत गढ़ को गिराई ॥ १ ॥
मन को पकड़ि जकड़ि सब संगी, राज विवेक कराई ।
सील को सहर दया की दुनियाँ, सत संतोष दुहाई ॥ २ ॥
पाँच प्रधान पचीस प्रपंची, तीन को मारि भगाई ।
लै को लगन लगी मन राजा, सूरति सरन समाई ॥ ३ ॥
सूरति साज सजी सत द्वारे, गगन में तार तनाई ।
लागी लहर सैर तुलसी को, सब्द में सुरति समाई ॥ ४ ॥

(१३)

लिये जात मसखा मटकती, पिया ना डर सोच खटकती ॥ टेक ॥
घूँघट खोलि चली अलबेली, ऐंठत जात अटकती ।
तजि पिया प्यार यार सँग अटकी, चलै दैया पाँव पटकती ॥ १ ॥
जग की कान जानि नहिं मानै, लागि लगन में लटकती ।
फिरत बेफहम नेम नित नेहरा, लिये पिया हाथ झटकती ॥२॥
नैहर सोच ससुर सुधि नाहीं, देवर संग सटकती ।
जागत जेठ जिठानी ने जानी, दिवरानी जो रही रे हटकती ॥३॥
तुलसी तरक तोल मन माया, काया काम तटकती ।
घर का सोध बोध बिन मारग, बागन फिरत भटकती ॥ ४ ॥

(१४)

कस फिरत पिया बिन भूली, तेरे नैनन पड़ गई फूली ॥ टेक ॥
डगर नगर पिया पंथ लखे बिन, सहिहौ जनम जम सूली ।
खुलि है अंत निबाह न जानो, चालत मेटि अडूली ॥ १ ॥
तजि मतिमंद अंध अकड़ाई, परत जनम बिच धूली ।
गुर की कान मान लखि लज्या, ज्ञान पकड़ पद मूली ॥ २ ॥
सागर जाय भरो रस गागर, कूड़ यार सँग झूली ।
तन कर नास बदन बिच अगिनी, जरत घास जस पूली ॥ ३ ॥
तुलसी नीर निरखि नित गागर, जल भर जाय अतूली ।
पानी भरत लाज कस आवे, काज करो हिये हूली ॥ ४ ॥

(१५)

कैसे जल भरत गगरिया, तेरी भींजी न नेक अँगुरिया ॥ टेक ॥
सतगुर घाट गई बिन जाने, पैरी न चीन्ह पकड़िया ।
सागर थाह अथाह अगम को, कोइ भर नहिं जात अनाड़िया ॥१॥
सासु ननद के अनँद पिया मोरे, डारैंगे फोड़ बगरिया ।
रीती जाति फिरी बिन पानी, मानत नाहिं बहुरिया ॥ २ ॥
सासू ससुर जेठ जुलमाई, साईं ने सील सँवरिया ।
बीतत दिवस रही अब रजनी, खुलत न प्रेम किवरिया ॥ ३ ॥
तुलसी ताव दाव यहि औसर, पिया सँग पैठ नगरिया ।
सूरति साज सजो नभ मंदर, अंदर बीच डगरिया ॥ ४ ॥

(१६)

कैसे पानी भरूँ बिन रैनी, नहिं घाट मिले बिन दैनी ॥टेक॥
करनी कीन्ह हीन हम हारी, प्यारी भाग जस लैनी ।
सतगुरु चरन सरन सुधि भूली, नहिं राह मिले सुख चैनी ॥१॥
अब केहि भाँति भरे मोरी गागर, भूल मिटे गुर गहनी ।
सैनी सुरति निरति नभ घाटी, बाट लखो कहा कहनी ॥ २ ॥
सिंध अगम गम गैल न जानूँ, भाखूँ अगम की ऐनी ।
जेहि बिधि राह रीति भरने की, जा से सुरति सज पैनी ॥ ३ ॥

ताला कुफल किवाड़ खुलन की , कुंजी दया दिल देनी ।
तुलसी धर्म कि चढ़ो सुखसागर , देख पिया हिये नैनी ॥ ४ ॥

(१७)

गगरी जल गगन भराऊँ , तेरी सुरति अधर घर छाऊँ ॥टेक॥
गंगा गगन घाट है संगम , जंगम जल बतलाऊँ ।
करि असनान ध्यान धरि धीरज, छीर समुँद मथराऊँ ॥ १ ॥
धधकत धीर गम्हीर लखाऊँ , सरु तरु तंत दिखाऊँ ।
सुन्न सुमेर सार से न्यारी , पार के पदम पठाऊँ ॥ २ ॥
गुर दरियाव गगन के पारा , धारा नीर वहाऊँ ।
सूरत साजि चलो नभ अंदर , मंदर जल झरन झराऊँ ॥ ३ ॥
तुलसी अकथ अकह की बानी , जानि समझ समझाऊँ ।
गागर सागर सिंध समझि के , बुंदै सिंध समाऊँ ॥ ४ ॥

(१८)

जा से जिव अपनपौ पावे, सखी कोइ सतगुर संध लखावे ॥ टेक ॥
यह जम जाल काल कुल छाया , खाया खलक खुटावे ।
संत बिवेक संत कोइ पावे , भवजल पार लगावे ॥ १ ॥
यह नौ द्वार पार नहिँ जावे , दस दिस देस न पावे ।
कुंजी कुफल काल कर दीन्हा , संत जो कुफल खुलावे ॥ २ ॥
नाली नगर सैल सुति पावे , आले मेँ ताख दिखावे ।
पुल के पार दुरबीन लगावे , आदि अजर घर पावे ॥ ३ ॥
तुलसी ताख भाख सम सूरति , सार के पार समावे ।
जोइ घर घाट बाट बिधि चावे, लखि लखि आप कहावे ॥ ४ ॥

(१९)

कोइ करि करि खोज लगावे सखी , सोइ भरम की भूल मिटावे ॥टेक॥
आदि अनादि बादि बिधि बीता , कीता न एक उपावे ।
यह भव खानि जानि लै लावे , पाहन प्रेम बढ़ावे ॥ १ ॥
सतसँग अंत संत नहिँ सूझा , बूझ न बैस बितावे ।
भरि भरि पेट लेट कर खावे , मन का मरम न पावे ॥ २ ॥

तन पर भार सार नहिँ जाने, बादहि जनम गँवावे।
जब जम जकड़ि पकड़ि कर बाँधे, तौ मारत कौन छुड़ावे॥ ३॥
अब हुसियार हारि बिष मारग, तुलसी ताव बुझावे।
सतगुर सार पार नहिँ जाने, भव रस खानि समावे॥ ४॥

(२०)

हिये नैन नगर नभ पावे, सखी सोइ आदि की आदि लखावे॥टेक॥
जिन जिन मरम परम पद पाया, सोइ सोइ सैन सुनावे।
सतगुर बैन नैन निज देखा, सब्द मेँ सुरति समावे॥ १॥
जिन जिन अधर धार धसि देखा, लेखा अगम लखावे।
भिन भिन मरम बरन बिन बानी, खुल खुल खेल जनावे॥ २॥
जिन जिन जान मान मन माहीँ, साईँ का खोज लगावे।
सतगुर मेहर कहर सब टूटे, अलख और खलक छुड़ावे॥ ३॥
कोइ कोइ साध आदि लख पावे, संत सरन समझावे।
नभ पर सैल खेल जिन खेला, तुलसी तलब बुझावे॥ ४॥

(२१)

पिया ना लखि सुरति बहोरी, सखी जासे आवा गवन की डोरी॥टेक॥
करि करि भोग सोग सँग साथा, मन मिलि मान करो री।
जा से काल जाल जग माहीँ, सोइ सुधि बुधि लीन्ह निचोरी॥ १॥
ब्रम्हा बिस्नु देव मुनि नारद, सारद सेस चरो री।
जग जिज्ञास सकल चरि खाये, सो जम जग जानि न जोरी॥२॥
कीट पतंग संग सब जाती, भाँतिन भाँति भरो री।
कहँ लग भाँति जाति जिव गाऊँ, खाये धरि काल मरोरी॥३॥
बिन सतसंग रंग नहिँ पावे, पुनि पुनि खान परो री।
तुलसी संत अंत बिन बूझे, सोइ छाड़त साँझ न भोरी॥ ४॥

(२२)

होरी लखन जुगत, जासे निरमल मुक्ति मिलै री॥ टेक॥
उठत अवाज बदन बिच बानी, बोल अबोल सुनै री।
धुन धधकार अकार अलख मेँ, पल पल उक्त खिलै री॥ १॥

अगम सिहार समुँद के नाके, थाके मन मति मोरी।
चोर चुगल लखि सुरति सिधारो, समता पुखत पिलो री ॥ २ ॥
जुगन जुगन बिछुड़े पिया प्रीतम, सत पति सोध करो री।
सुरति सम्हारि चलो री द्रुगन पर, चढ़त न पैर हिलो री ॥ ३ ॥
तुलसी तीर भीर भव सागर, भरमन भूल परो री।
सतगुर सरन परन पद चूकी, निज नभ भगति मिलै री ॥ ४ ॥

(२३)

होरी नगर नाद, कोइ खेलत साध सखी री ॥ टेक ॥
सूरत निकरि सिखर गइ जब से, सकल उपाधि थकी री।
निरगुन जोति पार इक साहिब, सोई अज आदि तकी री ॥ १ ॥
अंडा अलख खलक सँग छूटी, पढ़ि पढ़ि बाद बकी री।
सतगुर पदम कँवल लखि लागी, अटल समाधि अखै री ॥ २ ॥
अगम मिलाप आप पिया प्रीतम, महल मुराद रखो री।
पुरुप पियार परख लखि नगरी, सगरी मुराद भखो री ॥ ३ ॥
रँग रस रीति जीति पिया पद को, सूरत स्वाद चखी री।
तुलसीदास बिलास बरनि कहे, आदि अनादि लखी री ॥ ४ ॥

(२४)

होरी अधर लखे, जा को पदर न पकरि सकै री ॥ टेक ॥
भट्ठी प्रेम पिये भरि प्याला, अमी रस अँदर चखै री।
एक अनीह अरूप अमाया, काया कँदर तकै री ॥ १ ॥
पल पल अष्ट कँवल दल सोधे, कंज मँज मँदर रखै री।
धौलागिर पर सेत ठिकाना, सूरति सदर' पकै री ॥ २ ॥
आगे अगम आदि मिलि मारग, रवि ससि चंद थके री।
पंथी भेप अनेक मूल भूले, करि करि भद्दर अकहे री ॥ ३ ॥
कोइ कोइ संत अंत पिया पद को, परखि सो पार धके री।
तुलसी तेल फुलेल फूल को री, काढ़यो जो अतर अपैरी ॥ ४ ॥

'एक लिपि में 'सदा है'।

(२५)

होरी अगम पंथ, पिया परसत संत सुने री ॥ टेक ॥
बदन बिदेह देह रचि कीन्हा, सब जिव जंत बने री ।
ब्रम्हा बिसुन महेस काल धरि, खाये जो अंत उन्हैं री ॥ १ ॥
दस औतार पार नहिं लागे, पायो न पंथ पुने री ।
परमहंस बैराग राग जम, काढ़ा* जो कंथ कुने री ॥ २ ॥
निराकार आकार जार बस, आये जो ग्रंथ गुने री ।
पाँच तत्त तन बिस्व बैराटा, बंद अनंत उने री ॥ ३ ॥
काल तवा तुलसी बस कीन्हा, सिर सिर महंत धुने री ।
पिंड ब्रह्मंड परम पद ऊपर, महल अतंत चुने री ॥ ४ ॥

(२६)

सुपना जग जागि चलो री, अपना कोइ चाहो भलो री ॥टेक॥
गुर बिन ज्ञान ध्यान बिन धीरज, बीरज बदन बन्यो री ।
वैरी काल हाल धरि खावे, बेबस बदन बलो री ।
जगत जम जाल जलो री ॥ १ ॥
यह जम जोर जबर बहुतेरा, हेरा न हाथ परो री ।
मुनि मन भूत पकरि धरि खावे, चावे केहि भाँति छलो री ।
नजर से न नेक टरो री ॥ २ ॥
सब जिव जंत अंत धरि मारे, पारे न मरम मिलो री ।
पिया बिन ध्यान धुवाँ को तिमर, सेमर सुवना फलो री ।
सोचि फल फोड़ि खलो री ॥ ३ ॥
येहि बिधि जीव जतन जगही मैं, पुनि पुनि जनम धरो री ।
आसा अंत संत बिन सोवे, तुलसी नहिँ अंत हिलो री ।
पकड़ि पछपात पिलो री ॥ ४ ॥

---

*एक लिपि में "कड़ा" है ।

(२७)

कायागढ़ काल किलो री, माया डर डारि मिलो री ॥ टेक ॥
पाँच पचीस मुकद्दम या मैं, लै समसेर चढ़ो री।
करि नर खेत दया सतगुर की, धुर की कुमक पिलो री।
फतेह रन हट न हिलो री ॥ १ ॥
तीन मुसाहिब मुसद्दी मिलि के, मुलक मैदान करो री।
लिखि लिखि भरम करम कागज के, रैयत सब निकलो री।
धूल सब कीन्ह जिलो री ॥ २ ॥
यह बटपार बसे नगरी मैं, मनमति चलन चलो री।
जुग जुग जुलम करे जबरी से, ठगि ठगि खेल खिलो री।
किये जग पान गिलैारी ॥ ३ ॥
राय बिवेक चढ़े दे डंका, ज्ञान निसान घुरो री।
जोग बैराग लिये उमरावन, तुलसी गढ़ राव मिलो री।
करे मानो हा हा चिरौरी ॥ ४ ॥

(२८)

थिर ना कोइ या जग मैं री, सौदागर लादि चलो री ॥ टेक ॥
जो कुछ माल भरो भरती मैं, दुख सुख करम करो री।
भीषम करन द्रोन जरजोधन, भावी बस भरमि मरे री।
राज रन खेत लरे री ॥ १ ॥
रावन लंकपती पै हती, सो रती नहिं बास बसे री।
पंडौ पाँच गये तजि देही, सोई हाड़ हिमाले गले री।
डगर जम ने घट घेरी ॥ २ ॥
जो जो देह धरे तन धारी, राजा रंक रचे री।
को नर नारि पसू गति गावे, भव सुख सोक पके री।
लखे नहिं आदि अजै री ॥ ३ ॥
पंडित भेप भगति नहिं जाने, ज्ञान के मान भरे री।
सतगुर सोध बोध बिन मारग, जमपुर फाँस फँसे री।
भली तुलसी मति फेरी ॥ ४ ॥

(२९)

हम को जग क्या करना री, टुक जीवन पै मरना री ॥ टेक ॥
इक दिन देख बदन बिनसैगा, अगिनि अंग जरना री।
यों बरबाद नसै नर देही, भोग उमर भरना री।
दई गति से डरना री ॥ १ ॥
नारि निहारि जुगन बिधि बाँधा, मुनि मन को हरना री।
जग परिवार सकल दुखदाई, इन सनमुख से टरना री।
बिपति बस क्यों परना री ॥ २ ॥
काया कलप काल नहिं छूटे, नर तन मैं तरना री।
सतगुर मूल मता जुगती से, गुप्त ध्यान धरना री।
मुक्ति हिरदे चरना री ॥ ३ ॥
औसर आज बिदित बनिवे की, संतन की सरना री।
जो कोइ तोल तरक तुलसी को, पोढ़ पकरि धरना री।
लखो चित से नर नारी ॥ ४ ॥

(३०)

खेलो री हिरदे हर होरी, पल मैं पल सुरति बहोरी ॥ टेक ॥
उनमुनि संग पवन पिचकारी, सुखमनि मार मचो री।
बंकनाल रँग माट भरो है, पिया पै ले छिरको री।
आज ऐसो मेल मिलो री ॥ १ ॥
चंद सुरज सुन संजम कीन्हा, इँगल पिँगल पट पौरी।
आसा अबीर गुलाल गुनन को, कर सतसंग उड़ो री।
मुक्त नर देह धरो री ॥ २ ॥
मेर डंड तत तारी लागी, स्वासा सिमट भरो री।
उठत अवाज़ बिमल अनहद की, घघकी धुन संख बजो री।
सखी चित चेत चलो री ॥ ३ ॥
तुलसी जोग जुगति जब जाने, करम टकर उतरो री।
इंद्री पाँच प्रपंच पचीसो, लै इनको पकरो री।
ज्ञान गुर बाँह मरोरी ॥ ४ ॥

(३१)

झूले री सुख सेत हिंडोले, सुनि के अघ आसन डोले ॥टेक॥
मन चढ़ि गगन मगन दो खम्भा, गाड़े अजर अडोले।
सूरत साजि कसी दृढ़ डोरी, चढ़त अधर झकझोले।
जबर जम बंधन खोले ॥ १ ॥
गावत राग सखी सुन होरी, बोली अनुभव बोले।
प्रीतम पार परम पद घर की, कहत नेक नहिं डोले।
हरख हिये हेर अबोले ॥ २ ॥
आली अगम संधि सतगुर की, भाखी बस्तु अमोले।
सज्जन सूर अपूरब बोली, तरक तराजू तोले।
आली अति अंत अतोले ॥ ३ ॥
तुलसी तलब करे कोइ साँचे, सोइ सतगुर के चेले।
कठ मठ माठ मथे माखन को, धरत ध्यान दिन धौले।
मिले पिया के पद जोले ॥ ४ ॥

(३२)

जग में जम फाग रचो री, होरी हर मार मचो री ॥ टेक ॥
ब्रम्हा विसुन कृस्न सिव नारद, सुखदेव व्यास नचो री।
ऋषि मुनि सहित दसो अवतारी, मारो काछ कछो री।
इष्ट तप जोग जचो री ॥ १ ॥
करम कड़ाह पतंग रंग अस, औंटत अनल पचो री।
भव सिंध माट भरो भरमन को, दुख सुख ले छिरको री।
तजे मनसा रस चोरी ॥ २ ॥
गुन गोविंद विंद धन खोजन, भोजन खाँड कचोरी।
छप्पन भोग भटक पाँचो में, जुग जुग काल भछोरी।
निकरि कोइ भागि बचो री ॥ ३ ॥
लखि लगे वार पार पिया तुलसी, डारि डगर चित चोरी।
सूरत गगन गई सतगुर पै, धुर पै ध्यान खिचो री।
लई मन मूल निचोरी ॥ ४ ॥

(३३)

देखो री खुद खेल बनायो, भव मैँ जग जिव उरझायो ॥ टेक ॥
पँच रँग तत्त बदन रचि कीन्हा, तीन गुनन भरमायो ।
पाँच पचीस भई भ्रम जाला, काल कसौटी लगायो ।
सखी मन राह न पायो ॥ १ ॥
द्वादस द्वार किये मंदर मैँ, नौ पर कुलफ लगायो ।
दो पर एक तीन पर तेरह, हेरा हिये हरष बढ़ायो ।
गगन चढ़ि चकर चलायो ॥ २ ॥
प्रीतम दरस खोल दसवँ को, सोइ निज ब्रह्म कहायो ।
सूरत डगर द्वार की डोरी, अलख खलक धरि खायो ।
जनम जग बादि गँवायो ॥ ३ ॥
चर और अचर चराचर खानी, घानी मैँ डारि पिलायो ।
सतगुर संध अंध बिन चीन्हे, तुलसी जनम नसायो ।
बहुरि भवसागर आयो ॥ ४ ॥

(३४)

भयो मोरे मन मैँ री अंदेसा ॥ टेक ॥
काह कहूँ सखि सोच पिया को, कबहूँ न खबर पठाई ।
रही री बनाय बिदेस बिदेसी, नहिँ देस की मरम जनाई ।
करूँ कहो क्या री कैसा ॥ १ ॥
कासिद की कोइ खबर न लावे, डाकन डगर निवासी ।
ब्रम्हा बिसुन महेस न सेसा, बेद हु नेत बतावे ।
सखी घर गूढ़ री ऐसा ॥ २ ॥
दस औतार भार सिर लादे, आदि की खबर न पाई ।
निरगुन सरगुन गोगुन घासी, फाँसी काल लगाई ।
जगत जग बंधन जैसा ॥ ३ ॥
तुलसीदास बिलास गुरन से, गुप्त गैल लखि पाई ।
संत चरन धरि धूर चरन की, सूरति अगम चढ़ाई ।
अधर घर कहे री सँदेसा ॥ ४ ॥

(३५)

भये सखी कोइ संत सनेही ॥ टेक ॥
सतगुर भगत जगत रस ज्ञानी, भागी करम कनेही ॥
लखन लखाव दीन दरियाबी ; यह सब सूझ सुझाई ।
पिया घर भये री घनेही ॥ १ ॥
आपा आप पाप सब खोई , धोई मन गुन देही ।
गाँठ खुलाय जाय जड़ चेतन , ये तन सुरति समाई ।
अगम गम आप अनेही ॥ २ ॥
यह बैराट ठाठ ब्रम्हंडा , अंडा बिलग बिदेही ।
सोई सुरति निरति निज जाना , माना संत सदेही ।
सखी जिन दृष्टि चिन्हेही ॥ ३ ॥
तुलसी तोल बोल संतन की , साखी सीस चढ़ाई ।
आँखी हेरि हिये बिच देखी , दृष्टि मैं दृष्टि मिलाई ।
विप्र पद तोड़ि जनेई ॥ ४ ॥

(३६)

अली चली चढ़िके जो अटारी ॥ टेक ॥
नभ केरी उमँग कहूँ सब सारी , प्यारी प्रेम घटा री ।
उड़ि उड़ि सुरति निरति नभ नाली , आली अबर फटा री
गठा मन गगन गली री ॥ १ ॥
डोरी डगर दृग द्वार नगर मैं , घट घृत काढ़ि मठा री
धारी धरन सरन सतगुर की , धुर की हेर हटा री ।
चटापट पीर खली री ॥ २ ॥
विरह बैराग उमँग उर माहीं , मन तन मरब कटारी
अली री हिलोर मोर मन आवे , भावे न पंच भटी री ।
एटी लखि टेक टली री ॥ ३ ॥
तुलसीदास विलास सुरति की , अंदर जाय अटी री
नैना निरखि परखि पिउ प्यारी, सजि फिर नाहिं नटी
मठो धसि मगन मिली री ॥ ४ ॥

(३७)

अली सुपेदी मैं स्याम तिली री ॥ टेक ॥
लै की लाट सुरति घट घानी, कोल्हू करम पिली री।
तिल्ली तेल पेलि जिन काढ़ा, गुर दीपक चास चली री।
बिलग तन तेल खली री ॥ १ ॥
मंदर माहिँ भया उजियारा, प्यारा परखि मिली री।
प्रीतम प्यार यार लखि पाया, रँग रस भाँति भली री।
अगम घर घाट गली री ॥ २ ॥
जब से कँवल चरन घस धारी, नेक न सुरत हली री।
दृढ़ पद जकरि पकरि जब डोरी, जोरी नित पदम पिली री।
सखी नहिँ सुरत हिली री ॥ ३ ॥
तुलसी तोल अबोल पुरुष का, रूप न रेख अली री।
जानत संत अगम लखि मारग, सतसँग द्वार मिली री।
जले सब करम बली री ॥ ४ ॥

होली मारफ़त

(१)

एरी दृगन पर दमके दामिनी, चमके चंद उजियास री ॥ टेक ॥
अलख पलक पर झलक दिखानी, लागी लगन पिउ प्यास री ॥१॥
स्रवन सबद सुन अनहद बाजे, ज्ञान घमक परकास री ॥२॥
स्याम बदरिया छिटकन लागी, फटिक भवन भयो भास री ॥३॥
सूर ससी नल नभ के द्वारे, तुलसी तकत निवास री ॥४॥

(२)

फाट फटक के फाटक टूटे, छूटे भटक भ्रम जाल री ॥ टेक ॥
अटक अली चली फोड़ि निसानो, भान उदय छर काल री ॥ १ ॥
अच्छर आदि अपनपौ पाई, सोई* सुरत निहाल री ॥ २ ॥
तुलसी तपन गुनन गो न्यारी, चारोइ खटक निकाल री ॥ ३ ॥

---

*एक लिपि में "लाई" है।

(३)

एरी पलन पर अनल अकास, दीपक जरत निवास री ॥ टेक॥
पाँचो तत्त दलन पर राजे, कँवल कंज पर स्वास री ॥ १ ॥
लखि लघु द्वार सुई सम नाके, पिया के वाकविलास री ॥ २ ॥
जागी जोति रैन दिन तुलसी, तजत सकल बिस्वास री ॥ ३ ॥

(४)

एरी सिखर पर सुरत समानी, संत लखन पद पार री ॥टेक॥
जोगी जोति होत लखि जाने, पाँचोइ तत्त पसार री ॥ १ ॥
या से सार संत गति न्यारी, पारे परखि निहार री ॥ २ ॥
तुलसी तोल बोल जब पावे, करँ कृपा निरधार री ॥ ३ ॥

(५)

अरी सखी नैनौं मैं रँग लागो, पिया की लगन हिये लागि लखन को ॥टेक
गोगुन गैल फैल सब सारी, डारि डगर भ्रम भागो ॥ १ ॥
सुरति सील संतोष मोच्छ से, हरष हिये बिच जागो ॥ २ ॥
ज्ञान ध्यान धरि धार धरन को, गुर चक चरनन पागो ॥ ३ ॥
तुलसीदास बिलास बिमल पक, लखि पिया भीख न माँगो ॥ ४ ॥

(६)

एरी सखी पिया पट खोल किवारी, नैन नगर द्रुग द्वार डगर घट। टेक॥
नभ के री केल कँवल दल द्वारी, अलख पलक हट हारी ॥ १ ॥
मन तक तोल बोल लखि सूरत, चढ़न गगन गढ़ गाढ़ी ॥ २ ॥
अगम अवाज साज सजि पुनि कै, सुनि धुनि अंबर फटा री ॥ ३ ॥
तुलसीदास निवास चरन मैं, चढ़ि चलु अटल अटारी ॥ ४ ॥

(७)

उठत प्रेम रस भीनी, होरी की तरँग मोरे उमँग हिये बिच ॥टेक॥
केसर घोरि घिसो मन चन्दन, डारो पकरि पिया चीन्ही ॥ १ ॥
पँच रँग पाँच तत्त पिचकारी, प्यारी परखि भरि लीन्ही ॥ २ ॥
मारो गैल गुना गिर गागर, सागर धसि जस मीनी ॥ ३ ॥
तुलसी सूर मूर गति गवना, पिया से फाग रचि कीन्ही ॥ ४ ॥

(८)

सुरत सखी सजि फाग रचो री, अलख पलक सोइ भागि बचो री ॥टेक
तत रँग पाँच पकरि पिचकारी, सुभग अरग मुख मारि मचो री ॥१॥
गगन गुलाल थाल भरि ठाढ़ी, कुमकुम को लखि काछ कछी री ॥२॥
अधर चूर घर मूर निहारी, कूर तूर नभ नाच नची री ॥ ३ ॥
तुलसी सतगुर सुरति सुधारी, प्यारी पकरि दृग डोरि सची री ॥४॥

(९)

सुरति सुहागिल जाग, जनम सब सोय गँवायो री ॥ टेक ॥
नाद बिंद बिस्तार, सार कछु खोज न पायो री।
रही री बिषय सुख स्वाद, आदि बिन खोय खुटायो री ॥१॥
जुगन जुगन रही भूल सूल, तब दुख सुख पायो री।
आवा गवन निवास, आस ने भव भटकायो री ॥ २ ॥
काल कला परचंड, अंड सब घेर घुमाये री।
रही री बिषय बिप वाद, साध कोइ संग न पाये री ॥ ३ ॥
औसर बीतो दाव, साह से पूँजी लाये री।
तुलसीदास बिन संत, अंत नहिं छेव छुड़ाये री ॥ ४ ॥

(१०)

घेरि घुमर घट लाव रे, सूरत समझाई ॥ टेक ॥
दृष्टि द्वार पर गाड़ि के, गुर इष्ट लगाई।
तिल भर भीतर फेर के, निरखो मठ माहीं ॥ १ ॥
चाँद सुरज दोउ दीप से, पीछे हट जाई।
सुंदर स्वासा सुन्न में, सहजै रट लाई ॥ २ ॥
गगन किवाड़ी खोलि के, फिर फटक मझाई।
मानसरोवर काग से, सठ हंस कहाई ॥ ३ ॥
अंदर के असनान से, छूटै झट झाँई।
तुलसिदास दृढ़ मान ले, भटकै मत भाई ॥ ४ ॥

(११)

अलख अधर लौ लाव री, घट सब्द सुनावे ॥ टेक ॥
अनहद नाद निहारि के, मन को ठहरावे।
चित चंचल हित ज्ञान को, थिरता करवावे ॥ १ ॥

गगन गिरा धुन होत है, सुनि के लै लावे।
संध सुमन पहिचान ले, आली अधिक सुहावे ॥ २ ॥
किंगरी संख मृदंग की, धधकारी आवे।
गुर चरनन बलिहार, विमल मति यों समझावे ॥ ३ ॥
मन की मौज बिलास, समझ चित से चित चावे।
तुलसिदास तत रंग समझ, भिन भिन दरसावे ॥ ४ ॥

(१२)

दृढ़ मिलन दया दिल डोरी, क्या जानूँ कौन कल मोरी ॥ टेक ॥
परम पिया खुद खेल रचो है, पल पल देत झकोरी।
सूरत द्वार डगर पद रोकत, जुगन जुगन फल फोरी ॥ १ ॥
विन सतगुर घर घाट न पावे, जलत जनम जिन जोरी।
बिंद बन बेलि बढ़ी बिन मारग, करम ब्याल बिष बोरी ॥ २ ॥
सतसँग रंग अंग बुधि बाढ़ी, जित जित खेल खरो री।
केहि बिधि प्रीत करूँ प्रीतम से, टुक रहत नहीं पल पोरी ॥ ३ ॥
यह घन घोर मिटे संतन से, देत दवा बंदी छोरी।
तुलसी तलब करे कोइ रोगी, सतगुर मैं मल तोरी ॥ ४ ॥

(१३)

धुर धाम गगन गुर गैली, कित पाऊँ कौन बिधि हेली ॥ टेक ॥
संत सुधा रस भेद भूमि को, सतसँग संग सहेली।
सो सुनि बात साथ सखियन के, सूर स्याम भँवर मँज मैली ॥ १ ॥
सूरति अंज मुकर चढ़ि देखे, अधर अलख खुल खेली।
द्वै पट पार समुँद सुन मारग, उर नाम मगन बन बेली ॥ २ ॥
आगे अगम आदि घर घाटी, बाट बिकट घट पेली।
सो अली री सतगुर को पावे, तुलसी सुरत फुर चेली ॥ ३ ॥

(१४)

मेरे उर में उमँग छवि छाई, कहा कहूँ हरष बधाई ॥ टेक ॥
मैं तो अचान खड़ी अँगना में, सुंदर सुरत लगाई।
निरखि परी हिये में उजियारी, प्यारी सुरत समाई।
दृष्टि पिया परख लखाई ॥ १ ॥

नित नित सैल करूँ मंदर मैं, अंदर अलख जगाई।
जोगिनि होय भभूत रमाऊँ, पिय पद भेष बनाई।
धूनी धर ध्यान लगाई ॥ २ ॥
सेली सैल सुरति नभ पैनी, बेनी मैं पैठि अन्हाई।
गाई गैल गवन सतगुर ने, चढ़ि धुनि घधक सुनाई।
जाय सोई मरक जनाई ॥ ३ ॥
तुलसी तार तरक तन तारी, कुलफ किवाड़ खुलाई।
महल मिलाप आप पिय प्यारी, धर करि कंठ लगाई।
पिया रस गरक सदाई ॥ ४ ॥

(१५)

पिया परसत भई री अमोल, खेल खुद आप कहाई ॥ टेक ॥
अटल अडोल बोल नहिं जाके, सो पिय ने अपनाई।
आऊँ रि आय आय फिरि जाऊँ, कोऊ लखन नहिं पाई।
जगत बिच रहूँ री सदाई ॥ १ ॥
मैं अपना अली भेद छिपावा, कोऊ सुपने नहिं पाई।
रहूँ री बिदेह देह दरसाऊँ, ता से सूझ न आई।
अलख बस पलक बसाई ॥ २ ॥
करता काल खलक से न्यारी, प्यारी पुरुष दुलारी।
स्वास बिनास अकास नसावे, मैं परले नहिं जाई।
गले पिय बाँह लगाई ॥ ३ ॥
तुलसी अतोल तुले अबिनासी, बासी बरन बताई।
पासहिं पुरुष पिया पद दासी, नित नित रहूँ री निवासी।
संत सोइ पंथ लखाई ॥ ४ ॥

(१६)

गगना चढ़ूँ कहो कैसे, मोहिं उपजत लाख अँदेसे ॥ टेक ॥
डगमग पाँव होत पैड़ी पै, सोच उठै जिय मैं से ॥ १ ॥
केहि बिधि गैल चलूँ मारग को, भटक भई हियरे से ॥ २ ॥
पल पल पीर खलै प्रीतम की, मीन तड़फ जल जैसे ॥ ३ ॥

बिन दीदार दुखी जियरे मैं, जनम पसू तन तैसे ॥ ४ ॥
तुलसी भूल भूल भरमानी, रहि चेत चरन बिन लेसे ॥ ५ ॥

(१७)

मोरे मन मैं गगन चढ़ि जाऊँ, पिया परसत पीर बुझाऊँ ॥टेक॥
सतगुर गैल डगर की डोरी, संत बिना कहँ पाऊँ ॥ १ ॥
पैाड़ी न पोढ़ मिले मारग की, जुगन जुगन भरमाऊँ ॥ २ ॥
कोटिन काल भटकि भरमानी, फिर नर तन कहाँ पाऊँ ॥ ३ ॥
औसर आज बनै कोइ कारज, ते भवजल तर जाऊँ ॥ ४ ॥
चैापड़ खेल रच्यो तुलसी ने, अब की नरद बचाऊँ ॥ ५ ॥

(१८)

बिदेसन कहो कित भूली री।
या चमन मैं फूल भाँति भाँति के रंग,
तैं पिया के पौ पै करत अदूली री ॥ टेक ॥
तू ते बिसारी घृग तोहि ताहि के, सुरति सुहाग भाग से नसाय के।
औसर बीति गई लखत न वा के, तेरे मुख धूली री ॥ १ ॥
घर की डगर छूटी तन बीते जात है, याही नगर मैं समझ तू ले री।
पिया के पदर को पकर पद औसर, जनम सुफल सोई चलत पंथ पर।
हरख हजर भइ परख न वा के, तुलसी अज भूली री ॥ २ ॥

(१९)

पड़ोसन क्यौं कर जाऊँ री।
या भवन मैं भूल जुग जुग मैं मूल,
मैं मँदर घर के कित पाऊँ री ॥ टेक ॥
तू ते दुलारी दृग महल भवन की, नेक लखन प्रिय पाऊँ री पत्तर की।
दवा दरद मोकूँ चेरी चीन्ह, तेरा जस गाऊँ री ॥ १ ॥
भेद भाव भिन मरम लखावो मोकूँ, ते सैाँ तै पिया की प्यारी हित लाऊँ री।
पुखत की पोढ़ डोर दृढ़ चित चाऊँ, आली की झलक बिच जोत झलक पाऊँ री।
मेहर नजर मो के डगर लखाऊँ, तुलसी घर धाऊँ री ॥ २ ॥

होली दीपचंदी

(१)

घट मैं मन मैला सूरति सैल करो री ॥ टेक ॥
रसिया रोज खोज करि जावे, सखियाँ सहेली सारी।
भारी मेल भयो नभ अंदर, मंदर धरन धरो री ॥ १ ॥
आलम अलख लोग सब दुनियाँ, पुनि धुनि सुनि सब धाई।
काया बीच बाग बन माली, खग मृग भँवर भरो री ॥ २ ॥
दादुर मोर चकोर चुगन को, ठौर ठौर जुथ जोरी।
सरवर पास बिलास बनन मैं, तन मन लखन लखो री ॥ ३ ॥
तुलसी ताल भाल बिच जानो, मार मनोरथ सारी।
आतम जोति होत उजियारी, भव भ्रम जाल जरो री ॥ ४ ॥

(२)

गगरी जल चंद छिपाना, घट लाग लखो री ॥ टेक ॥
मारग समुँद सिंध सत द्वारा, सब सब संत भखो री।
स्याम धाम स्रुति सेत कँवल पर, अमी रस चेत चखो री ॥ १ ॥
दीप दिसा बिच देखि उजाली, ससि सुर छान छको री।
मनमत मौज खोज मैं मारो, हिये बिच हेर पको री ॥ २ ॥
पुल पल पार धार बहे पानी, सूरति साज सको री।
लै लौ डोरि चकोर पोढ़ करि, चक जोरे इसक रखो री ॥३॥
तुलसी लगन लगे यहि भाँती, कैसे न पार नखो री।
जोइ जोइ ज्ञान ध्यान मन सूरति, टकटक चंद तको री ॥ ४ ॥

(३)

मोरी परि गयो गैल गुसइयाँ, एरी गगन गुफा की गली मैं छली॥टेक॥
जात हते मारग मैं घनेरे, कोइ न मिलो मोहिं हटक हरैया।
अगम उहाँ पै चली री अली ॥ १ ॥
सब टेढ़ी कही री सही सुनि कै, डरपै न नेक निलज्ज रमैया।
झझक झकोर डोर मोरी झमकी, डगर ढिठाई करते एरी दैया।
संग न झूमा जो भई री भली ॥ २ ॥

बाट बटाऊ कहत बहुतेरी , मोरी न माने तनक एरी गुइयाँ ।
हार थकी री झकी मैं कह करि , कोटि करैं नहिं माने मनैया ।
आठ पहर सँग रहत बली ॥ ३ ॥
हार पुकार सुनो सतगुर मोरी , लेन पठायो पार की नैया ।
तुलसी मनहिं मवासिन घेरो , मोरी मदद के हो कुमक करैया ।
प्रीतम तुम बिन पीर खली ॥ ४ ॥

(४)

सतगुर मोरी बाँह गहैया, चढ़ि जाऊँ अधर को अटारी अटा ॥टेक॥
करूँ फरियाद दाद सब सुनि हैं , जाय पडूँगी चरन गहि पैयाँ ।
मोरी सहाय बनाय करैंगे , मारि निकारैं विकार करैया ।
अमल अलख जब जोर घटा ॥ १ ॥
जब सरमाय हाय करि तोबा , तुम्हरी डगर हम नाहिं रोकैया ।
अब तकसीर माफ मोरी कीजे , तुम सतगुर के हो पास जवैया ।
हुकम जबर कै अबर फटा ॥ २ ॥
धाय चली सतगुर की सँध ले , अलग भये मारग अटकैया ।
सबहि उपाधि आदि की छूटी , लूटे सबन ये बाट चलैया ।
मैं सुमिरन कर नाम रटा ॥ ३ ॥
गगन गुफा मैं धसी री बसी जब, आगे मिले मोहिं गैल बतैया ।
अंग लगाय संग कर लीन्हो , अगम अभय पद पार पठैया ।
जब तुलसी हिये हेर हटा ॥ ४ ॥

(५)

आली आन छुड़ाई जग की सकल आस री ।
सखी धुर गुर दीन्हा भेद भास री ॥ टेक ॥
सतसँग रँग रस छुटी कामना , दीदा दरस मन भयो है दास री ॥१॥
बिरह वियोग नैन ढुरै पानी, बरसि झड़ी जस चार मास री ॥२॥
ज्ञान भान गुर ध्यान दया से , करम भरम भव कीन्ह नास री ॥३॥
मंदर गगन मगन चढ़ि चाली, आली अधर घर दीप चास री ॥४॥
तुलसी तोल बोल बस जोती , होत जगामग सुन्न पास री ॥ ५ ॥

(६)

आली आन लखाई गुर ने अगम आदि री।
सखी सत मत सूरति गगन नाद री ॥ टेक ॥
पिव को निरखि पद परखि पुकारी, संत बिना नहिं लगत दाद री॥१॥
सुन्न महल पर धुन धधकारी, प्यारी पकड़ि लख सुगम साध री ॥२॥
रूप रेख बिन देख निसानी, रोम एक रबि कोट बाद री ॥ ३ ॥
तुलसी चरन धूर सतगुर की, लै लखि धुर की कही अनादि री ॥४॥

(७)

कोइ पूछो री या सतगुर से।
बाल तरुन बिरधापन बीता,
प्रीत करी सोइ रीत रखी नहिं धुर से ॥ टेक ॥
जोग ज्ञान बैराग बिरह नहिं, घटत स्वांस नित सुर से ॥१॥
बीतत वदन बिषय रस माहीं, भैंट नहीं पिया पुर से ॥ २ ॥
हिये में हिलोर पिया बिन प्यारी, उठत अगिनि जिया झुर से ॥३॥
तुलसी ताप तपै दिक माहीं, मरत दवा बिन जुर से ॥ ४ ॥

(८)

कोइ हंसा भवन सिधारो रे, बार बार सतगुर गोहरावैं ॥ टेक ॥
सरवन सुनत नहीं, दुख सुख गवन बिडारो रे ॥ १ ॥
सूरति भूलि मूल पद या से, तन मन पै नहिं धारो रे ॥ २ ॥
समुँद सोत पर जोति तिवारी, जग मग जोति उजारो रे ॥ ३ ॥
सेठ सब्द घट पट की कुंडी, हुंडी हरष सकारो रे ॥ ४ ॥
तुलसीदास बास घर अपने, पिउ पिउ पकरि पुकारो रे ॥ ५ ॥

(९)

होरी हो खेलन हम गैयाँ ॥ टेक ॥
गुइयाँ निरखि नित पूछे साँची मैं कहूँगी।
सखियाँ सहेली सँग सुत से रहूँगी ॥
मन के मजीरा धीर की ढोलक लहूँगी।
बरजे रोज मो को रोको रहूँ न मोरे सैयाँ ॥ १ ॥
राग दोष सोग सँग अब न सहूँगी।
इंद्री पाँच खोटी मोटी मारि के रहूँगी ॥

मन को कैद करि सुरति से पिलूँगी ।
नभ सैल सुरति नित नित कै समोइयाँ ॥ २ ॥
पिया नित प्रति पत पैयाँ मैं पडूँगी ।
प्रीत पुराने मोरे सैयाँ से करूँगी ॥
जनम मरन दुख सुख लै हरूँगी ।
कोटि कोटि कहे कोइ लखै न लखैयाँ ॥ ३ ॥
मोरे तो लगन लागी चित मैं मरूँगी ।
उलटी अधर घर ध्यान मैं धरूँगी ॥
हिये दृग दीदा बिन काहे को जियूँगी ।
तुलसी तत मत सत सुरति से लखैयाँ ॥ ४ ॥

(१०)

देखो री जग हटक न माने ॥ टेक ॥
तीरथ तीर तरन मन मुकती, मग अँग धोवत पानी ।
जाना न जनम खोय जल पाहन, पूजत भटक भुलाने ॥ १ ॥
करि असनान मगन मन मंदर, मूरत मरम अजाने ।
धरि धरि लात सिला ब्रटि गढ़ि के, धरि मंदर झटक पुराने ॥२॥
छप्पन भोग भाव जेहि कारन, दुनियाँ देव बखाने ।
पिवत न खात हाथ मुख मैं कोइ, खात न निकट दिखाने ॥ ३॥
घंट बजाय अँगूठा बतायो, खायो प्रसाद पुजारी ।
सेव करी पर भेव न कोई, झूठे लखि हटक न आने ॥ ४ ॥
चेतन चीन्ह यकीन अनाड़ी, आतम अंग समाने ।
बोलत बदन चीन्ह कर तन मैं, तुलसी लखि लटक पिछाने ॥५॥

(११)

खुल खेलत होरी रे ॥ टेक ॥
सुरति सिँगार साजि सिर सुंदर, मंदर मगन मिलो री ।
गगन गुलाल थाल भरि केसर, बेसर भाँति भली री ।
चली नैना मुख मोड़ी ॥ १ ॥

चमचम चमक धमक धधकारा , कारा कँवल निकारी ।
भइ भट सुरति निरति नित न्यारी, प्यारी पिया काछ कछी री ।
बचो मन की मति मोड़ी ॥ २ ॥
सुंदर सासु ससुर सुख सागर , साईं का सबद सुनो री ।
पौरो पवर भँवर दृढ़ देवर , नेवर सुनि साजि चली री ।
मिले मग कर भकभोरी ॥ ३ ॥
सुन करि सोर घोर लख भागी , लागी लगन लखो री ।
होरी मरम सरन सतगुर को , सूरति सत द्वार चलो री ।
खड़ी चक से चक जोरी ॥ ४ ॥
धरि धरि ध्यान ज्ञान सतगुर को, मुरका मन सूरति सारी ।
भारी भरम करम दृढ़ डोरी , तोड़ी तुलसी जिन जोड़ी ।
पलटि पद पायो बहोरी ॥ ५ ॥

(१२)

सखी री सुख सेज पिया बिन कैसे रहूँगी ॥ टेक ॥
मगसर मास बिलास बसंत , घर घर गाय रिभावत कंत ।
हमरे पिया परदेस निवास , आवत होरी न फागुन मास ।
दई दुख दीन्ह सहूँगी ॥ १ ॥
सब री सखी सजि करत सिँगार, पिया सँग खेलत कुमकुम मारि ।
अबिर गुलाल अरगजा सोई , भक भक देखि रही हम रोई ।
आली गुर ज्ञान गहूँगी ॥ २ ॥
नित नित निरखि करूँ सतसंग, तन मन जार करूँ सब अंग ।
सत मत सोधो साध सुजान , मान मनी जग मोटी कान ।
नेक नहिँ चैन चहूँगी ॥ ३ ॥
तुलसी तोल बोल मन केर , मारूँगी भारि पकरि सब हेरि ।
सुरति कँवल सखि लखन लखाव, दुरलभ देह मिला अस दाव ।
लाग लखि लगन कहूँगी ॥ ४ ॥

(१३)

पिया के सँग खेलूँगी होरी , मोरी डोरी लगी ॥ टेक ॥
केसर माट भरूँ मन सूरति , गुन गुलाल बरजो री ।
पाँच पचीस पकरि पिचकारी , ले सनमुख छिड़को री ॥ १ ॥

आसा अबीर चित्त कर चोआ , कुमकुम तीनि ठो री ।
अगर अनूप अरगजा सारूँ , पकड़ करि बाँह धरे री ॥ २ ॥
सील सुहाग सुमति की झारी , दीपक ज्ञान लड़ो री ।
सबद अवाज अधर घर बाजे , गरज गगन मुख जोड़ी ॥ ३ ॥
तुलसीदास बिलास सखी सच , पिया सँग ले रँग दौड़ी ।
नैना निरखि परखि चित चोरी, पकड़ि सुरत झकझोरी ॥ ४ ॥

(१४)

आपा न सम्हार , नर तन दुरलभ देह मैं ॥ टेक ॥
नौतम सेज सम्हारि के , पौढ़े बेबिचार ।
लोभ लहर नदिया बहे , बूड़े मँझधार ॥ १ ॥
दस रस के बस मैं रहे , सहे गोरख भार ।
सार समझ सूझै नहीं , होय क्योँकर पार ॥ २ ॥
ज्ञान उदय बिन बास के , स्वासा न करार ।
छिन छिन मैं घटती रहे , छ सै इक्किस हजार ॥ ३ ॥
जोग जुगत जोगी कहे , रहे तत्त निहार ।
प्रानायाम अधार को , तुलसी निज सार ॥ ४ ॥

तिल्लाना होली

(१)

धाय के चटक चलो री या गगन मैं ।
पुंज परकास तेज लेख लखाई पाई ॥
पुनि फटक घट देख उजियारी प्यारी ।
मानो हटक की राह मोड़ी ॥ टेक ॥
अंड खंड जो जो सुरत चढ़ाइयाँ ।
निरत निरताइयाँ ॥
चंग मैं चंग संग उड़ो उतंग रंग ।
लखन लख चक पिउ अगम पद ।
पट की लटक लोरी ॥ १ ॥

अजर अधर घर गुर से परख पी को लखन लखाइयाँ ।
तन मैं तरंग मन होय अपंग जब ॥
डोरी डगर लख नैना नगर ।
भज भटक की राह छोड़ी ॥ २ ॥
तुलसी तोल तक बोल सुरत संग ।
धरन धराइयाँ ॥
बिरह बिहंग संग ज्ञान बैराग जान ।
ध्यान मैं धीर धर पीर पिया की ॥
लखि अलख अटक तोड़ी ॥ ३ ॥

(२)

प्यारी पलक मैं अलख लखो री या अवर को ।
रूह की रमज रंग समझ सुरत संग ॥
कंज को मंज मिलि द्वार डगर जाई ।
झमक झलक जोड़ी ॥ टेक ॥
कही सो गही कर काज लई ।
नाव चटक चढ़ चकमे चतुराई ॥
मीन मरज धरि धार चढ़ाई ।
पाई अडोल बोल अमल अमोल मोल ॥
चंग मैं चंग मिलि संग मैं संग प्यारी ।
भान भवन घट नैन से नैन जोड़ ॥
जग ख्वाब खलक खोरी ॥ १ ॥
जो दई मैं रही भव भार सही ।
ये जाल जगत तजि नेह की निठुराई ॥
काल कराल खुल डाले कुठाई ।
साईं सुमिर धुर गुर पिया के पुर ॥

गंग मैं गंग* मिल पंग अपंग धारी ।
नभ निकट घट पट को खोल प्यारी ॥
तक तुलसी ललक लोरी ॥ २ ॥

(३)

अरी लख लाय के भवन भरो री या सुरत को ।
पल मैं नास मन होय विनास जाई ॥
तन सराय बिच वास कराई ।
पिया कवन जवन जोरी ॥ टेक ॥
गगन गिरा की जो बिरह कराइयाँ जग बिसराइयाँ ।
गुरु वचन बोल तोल तरक जाई ॥
नील मैं तिल तक नभ निकरि ।
धसि पवन किवारी तोरी ॥ १ ॥
अलख अगम लीजै पलक समाइयाँ ।
जोती झलकाइयाँ ॥
नभ निरख चक द्वार दिखाई पाई ।
धुन धधक लख सुन्न समझ ॥
गुन गवन की गाँठ छोरी ॥ २ ॥
तुलसीदास रवि भास भवन मैं ।
लखन लखाइयाँ ॥
प्यारी पकर करि पिव को परखि धाई ।
सेज सुहाग भाग भव नसाई ॥
घर अधर मैं निलोरी ॥ ३ ॥

(४)

धमक पै धमक सुनो री ये अधर मैं ।
गगन फट मठ मगन मंज माहीं ॥
पाई सुंदर सुन मंदर सत्त टक टमक झमक जोरी ॥ टेक ।
चक चाई तक ताई ।
लख लाग लई गढ़ गरज रज सज समझ ॥

*एक लिपि में "रंग में रंग" है ।

भज अज उधर घर पिउ को पाई ।
 गगन फट झटपट पकर पद ॥
जद फ़कत तक हद हिराई जाई ।
 ढाई थिरक लख पिउ पदर ।
  बेनी बाम बमक लोरी ॥ १ ॥
दरबार चढ़ी सो खटि कड़का री ।
 प्यारी प्रयाग पग पुरुष रस बस ॥
अस अली री पल परख पाई एरी अनैन आई ।
 नैना निरख नाहीं सुरत सत्त माहीं ॥
तत पद मभ्काई मन मरज नाहीं ।
 तुलसी तमक रट रमक जमक जोरी ॥ २ ॥

(५)

अचल मैं मचलि रहो री ।
 आज आली लै लटक से ॥
सुरत सिंगार कर हार हिये मैं धर ।
 बिंदली टीका पिया लाड़ लड़ाई ॥
  कर नेह निछल लोरी ॥ टेक ॥
सजि साज सच्यो रँग रीत रच्यो ।
 तत्त की सारी पहनी घँघरा सिर बेनी ॥
ललक लटकन नभ लगाई ।
 नथनी झलकाई मोती झलक झाई ॥
कजरा नैन निज चाल चमक बीज ।
 घूँघट केरी पल खोलि के चल ॥
  गज गैंद ले चल नौरी ॥ १ ॥
सुनि नाद आदि आली अजर भई ।
 कंज करनफूल मंज मरम मूल ॥
हिरदे हमेल धुकधुकी लखाई ।
 पग नेवर जग जेवर जस गाई ॥

बिछुआ अनवट चुटकी चमकत ।
प्यारी सिँगार कर पीरी छलन वस ॥
करन को चली योँ री ॥ २ ॥
सजी सो भजी घर घाट गजी ।
रंग के रस वस पाँच पकर अस ॥
गुन गुसाइँ गो गाँठ छुड़ाई ।
फस अलख वस खलक खोट चाई ॥
चढ़ो सुरत पल झलक देखो जाई ।
ललक लख पिउ वस बेसक ॥
तुलसी बिरध बक्वो री ॥ ३ ॥

(६)

अरी चटक लै लटक रहो री भय भटक से ।
ज्ञान बिज्ञान जी जोग लखाई जाई ॥
बिरह वैराग सिल समझ सुख दुख ।
खुाव खटक खोरी ॥ टेक ॥
आली ये गली चढ़ि चाक भई ।
काम कुटिल दाम दाम निकारी प्यारी ॥
मोह मलीन दुचिताई मिटाई ।
क्रोध कुबुधि बस काल को काढ़ि डारी ॥
लोभ लबार लख सक निकार न्यारी ।
जान झटक झट गाँठ से गाँठ खोली ॥
घाट अटक कोरी ॥ १ ॥
पिया को लिया लख लाग जिया ।
नर की तन धर करि मुकत जाई ॥
भव भटक बिच रहे भुलाई ।
साँचे री सतगुर मूल लखाई पाई ॥
अमर अजर घर बास कराई जाई ।
तुलसी नरक लख पिया से ॥
मैान यहि भाँति सटक बोरी ॥ २ ॥

(७)

अरे नर जीव जनम नहिँ रे ये बिनस तन ।
महल अटारी झार झूठी सकल सारी ॥
नारी निदान सुत पित बिधान ।
छूटे संग सही रे तेरा ॥ टेक ॥
खान पान सुख सेज गही ।
मान मनी धर सीस लई ॥
तेल फुलेल मल माया के मद कर ।
काया करम फल जाल जुड़ाई ॥
जम के दूत पूत मारैं पकरि जूती ।
चोटी पकरि करि बाँधैंगे मजबूती ॥
काल कराल करे कहर कठिनाई ।
कोई जतन चही रे ॥ १ ॥
जग जहर जोई बिष बेल बोई ।
भर नींद सोई डर नाहिँ कोई ॥
निडर पाजी काल सीस पर गाजी ।
नरक रे बिराजी राजी एक न पाई ॥
आँख सलाई जग करम के दाग दागे ।
कुंड नरक बिच डारत दुख लागे ॥
भाग भरम तुलसी तज करम ।
डर दाऊ दई रे ॥ २ ॥

(८)

अरे नर स्वास की आस नहीं रे देह नसन को ।
है रे हबूब तन बिनस अस मन ।
धर धरम कर करम काई बल बास गही रे ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद लोभ भरे, ज्ञान ध्यान सब दूर करे ।
ख़्वाब खलक पक पीर अधीर धर, भव मैं मरन जुग जुग जनाई ॥
जम की तक त्रास भास भवन जाई, दुख नरक करक कर कठिनाई ।
दूत डगर बिच बाँधैंगे फिर, फल फाँस रही रे ॥ १ ॥

प्रान गये तन निकट चढ़े , जाति पाँति सब आन खड़े ।
खेस* कुटुम्ब सब रोवत सिर कूटी, हिये तड़फ त्रिया हाथ की चूड़ी फूटी॥
तन बदन बन खाक जलाई जाई, बास पकरि पूत सीस कूँ मारे आई ।
तुलसी ये पल भल खान में चल , खल नास भई रे ॥ २ ॥

(६)

अरे नर नकल की अकल तजो रे ले असल को ।
तत बदन बिच मद मदन नीच काया ॥
करम कीच बंध बँधाई , दुख सकल भजे रे ॥ टेक ॥
भूल भटक घर घाट लई , जाल जबर जम बाट गई ।
आदि अधर तन बीच मँदर सज, भज भरम खोज रोज कराई ॥
प्यारे पकरि जोऊ पिउ परख जाई, घट के पट खोल बोल बिचारि माहीं।
तोल तरक तक लख जखम जाई, दवा दरद मद मधुर लघु ।
दिल दखल मँजे रे ॥ १ ॥
अंध अचेत की धरन धारी , बूझी न जड़ सँग प्रीत करी ।
चेतन तन मन सुख बदन माहीं , सुरत संग रँग देख रमज जाई ॥
चक में चित धर मीत अपन कर, प्रीत परम पक्र लख अपन आई ।
मान मरज झट पट के तट , तक तुलसी अजै रे ॥ २ ॥

(१०)

आज नर वतन† की जतन करो रे , ये हतन तन ।
घट भटक भूल आदि अपन मूल , जाल जबर सूल बंध बँधाई।
मन मत न मरोरे ॥ टेक ॥
दो दिन जग बिच बास बसे , घर बिचार जम फाँस फसे ।
गुरू को ध्यान धर करि विधान काया, माया को मान तक तोड़ जराई ।
सूरत सज भज भरम अपनाई , द्वार डगर सम समुँद सत साईं ।
मछ मथन कढ़ि कढ़ि निकरि आई, काल धीमर केरी जाल निकाल ॥
वही पत न डरो रे ॥ १ ॥
उदर बास बस कौल दियो , धर नर तन नहिं भजन कियो ।
गरभ करि करि मर मरन जुग , सुग सरम पिया पद न चाहो ॥

*खेश=नातेदार । †निज घर ।

नाद अचल बिंद बिमल बिन वाही, आस अरँब कर बाट भुलाईजाई।
पवन तत मत अरल असर आई, काली मैं मन मग चित चलन॥
सुन सत न अड़ा रे॥ २॥

(११)

अरे सब ख़्वाब का खेल खुसी रे, कुल खलक मोखाना।
पकाना खुस नान पुलाव कर, जोर जबर जबराईल गरूरी॥
मारे काढ़ि भूसी रे॥ टेक॥

जबर फिरिस्ते पकरि धरे, दोजख गंदगी माहिँ पड़े।
नूर सहूर न जहूर में दिल धर, कर गरूरी सुधि सब भुलाई॥
फहम करज जिन राह को पाई जाई, रूह मुरीद दिल गवर गवराई।
मंजिल मुरसिद से फजल, जावे राह उसी रे॥ १॥

खोई खुदी जब जमक जगै, सबर यार घर खबर लखे।
चढ़ि मुनारे पर मन मिलाई जाई, अमल काबिल परख पाई॥
राह रफैयत मैँ बकसाई, सुकर घर करि खूब ये कुफराई।
तुलसी हवस आतस हवा, घर घाट घुसी रे॥ २॥

(१२)

मौला मंजिल की फजल अली रे इल्लल्ला।
आब अबर घर फिर सबर कर, फहम फरक नबी अल्ला।
अलफ साईं गजब गली रे॥ टेक॥

बन मुरीद दिल डगर चले, मुरसिद से जब राह मिले।
खुद खुदा कर खोज मुदामज, रूह रमज हू हक्क जनाई॥
आई अबर पर भिस्त कत पाई, गई मुकर चढ़ि अमर थिरताई।
ला पै रब जब जमक धस कोई, लखत वली रे॥

चौदा तबक चक चसम भये, सुरमा अंजन दीद दये।
अदीद आदम दम दरस माहीं, चून बेचून बेनमून दिखलाई॥
खुद बदन बिच हद हरख जाई, पट अबर आफताब अधर माहीं।
नूर जहूर तुलसी तै तरक अरवाह चली रे॥ २॥

(१३)

अरी नैना गगन गुमठ गिरवो रे, संध सुरत नीको द्वार जनैया ।
जो आवै निज कर न्यारो ॥ टेक ॥
होत वोही सुधि समझ न जानी, वाही को जनम जग जारो ।
करि मंजन मन मारी बिचारी , घर वारी सुरत घट धारो ॥१॥
प्रीत वोही पिया परखि पहिचानी, साईं की सरन में सम्हारो ।
हरि हरिजन सँग यारी निहारी, पद पारी की निरत पट सारो ॥२॥
दीद रही जो अदीद न जानी , संत सरन निरवारो ।
जिन चरनन मन वारी तुम्हारी, तुलसी तारी तरक मत न्यारो ॥३॥

(१४)

एरी आली चसम चमन गुलजारी, पँच रँग फूल गुल गगन गुँथा री ।
जो सेत सुरख जरद हारी ॥ टेक ॥
करिया हरा अस पाँच कहाये , यह बिधि बदन बिचारी ।
तन दुरलभ दिन चार निहारी, पिय प्यारे बिन दुख भारी ॥१॥
करम काल जुग जाल पसारी , गुरु बिन को उपकारी ।
तरक फरक तत तुलसी निहारी, पत नेह प्रभु पद वारी ॥ २ ॥

(१५)

पन बीते री आज कोइ भेदिया मिलत , गाढ़ो कलि मैं काल ।
धरि धरि के डारत जाल , जग मैं पिलत ॥ टेक ॥
जाहि को चाहत जा को दाढ़ मैं दरेरत , दैया करेरत ।
करम की राज देखो याही को खिलत ॥ १ ॥
जागो री अंत वही राह को पंथ गहो ।
मूल लई सो सही न हिलत ॥
सुरत समझ कीन्ही आदि को अपन लीन्ही ।
पिया को तकत अली हिया उमगत ॥
तन लखो री ललित ॥ २ ॥
कोइ धारो री धरन प्रिय पिय को परन ।
जा को सरन काल केरी कला को मरन ॥

गुर से गगन चीन्ही। मरम मक्षव लीन्ही ॥
तुलसी तलब तोड़ी।
मोड़ी मन मत खुल कँवल खिलत ॥ ३

तिल्लाना

(१)

जी जो सतगुर चेला है।
चढ़ि नभ कहे सब गुरु भेद बताऊँ। ज्ञान गिरा कहे गगन खेल॥
वहाँ एकहि एक अकेला है ॥टेक॥
सुंदर पर फेर सुरत मूँ। जहँ चंचल मन चूरत है॥
हिये के दृग नैन निरख सो। जहँ चढ़ि के कहे सोइ सूरत है॥
धन वा मुरसिद को कहिये। जिन चेला पंथ धकेला है॥
गुरु गैल मेल करि केल खेल। जहँ पदम नाभ पर सैला है ॥१॥
जहँ सम अरूप अंदर बिहार। पीहर घर के पद पार लखा॥
हुइ सूर मूर धुर मेला है ॥ २ ॥
पार ब्रह्म रमज की रख रूह। जहँ संत बिना कथा जूरति है॥
उनकी दृढ़ डोर दया सोँ। कोइ पहुँचत लै लख नूरा है॥
धन जो पिया पावे उसको कहिये। जिन पीरा सिंध सकेला है॥
करि भान मेल गहिये अमेल। जहँ तुलसी तक अलबेला है ॥३॥

(२)

लै लखाव संतन मेँ प्यारे जी। जहँ तेज पुंज जगमग परकास॥
कहि सम नहिं हम करि कँवल बास। जहँ पद निवास कंजन मेँ ॥टेक॥
घट के पट पैठि परख तूँ। हुआ कैान कैान क्या कहना है॥
जहँ बोल बाक नहिँ बानी। जिन जानी कही सुन सैना है॥
अन उसकी कुदरत को कहिये। नहिँ पाया अंत अनंतन मेँ॥
लखि भेष पंथ खोजा अतंत। तिल तक बेसक तैँ तन मेँ ॥ १ ॥
धर दीन भाव रहनी उपाव। सत सील लील सूरत अपील॥
मन मत उमाह ग्रंथन मेँ ॥ २ ॥

दृग डोरी पोढ़ परख तूँ। उस डोरी से गंठ छोरी है ॥
पदमन के पार पकर के। जहँ सत परयाग धुन घोरी है ॥
धन वे सत साधू को कहिये। जिन साजी सुरत की रतन मैँ ॥
मन मरज भाव जिव कर उपाव। चढ़ तुलसी दाव दरपन मैँ ॥३॥

(३)

मन तन बस माया मेँ। अरे नाहक जिव जावे ॥
तू अहंकार करत है गुन सँग धाम धारी।
ताही से फिरत नित खिचत खलक मैँ।
मूल धूल भव भरती मैँ ॥ टेक ॥
अड़ी अड़ी करमन तप घेरी ताव।
अरे कैान घर को रे गयो तेरो घाट ॥
वा को बिसारि गयो सुरत सत राह को।
अरे पूरो बोल गयो कर मट याही मैँ ॥ १ ॥
वाही गुरु राह की सुरत निरत मेँ संत करत हैँ।
वोही लखत हैँ नौ पारी ॥
नाम निरख सुधि तत तूल मत मूल। लख भवन भान घर घट मैँ ॥
जा दिन निस्तार तेरो होयगो भरम से।
गगन मगन दिल देख लेगो सगरो ॥
जब तो तेरी सुरत अड़ेगी अब तो तूँ करत करम।
अरे याही जोन मेँ मोह मैँ कटत निस दिन फसवन मैँ ॥२॥
सुत चित दार लखि प्यार करत है। घर ही व्याध ने मोह डारी ॥
दाव की बखत बूझ निज नर देह धर। ये बाद जात तन जग मेँ ॥
जा दिन पकरि काल मारेगो लात की। बस विपता जम सहेगो सो झगरो ॥
जब तो तोहि सूझ परेगी।
अब तो तूँ करत खूब खुस माहीँ कुटँब संग ॥
तुलसी मरक येही पन मैँ ॥ ३ ॥

(४)

पकड़ गुर बहियाँ सभी तजि, अरे बार बार जम भरम डार।
दैया हरखैया करत हो ॥ टेक ॥
तीन गुनन से जग बूड़त है, संत सभी कहिया।
चीन्ह चरन सतगुर के प्यारे, पैया ढुरकैया धरत हो ॥१॥
धरनि धार तज करि बिकार, पार परन लइया।
चार चुगल चुगली के कारन, चैया भरकैया भरत हो ॥
तुलसी तार प्रौ को निहार, निज नैन पार पैया ॥ २ ॥

तिल्लाना मलार

(१)

लख लेरी एरी पिया। गुन दौर डागर छाड़ो चित से।
हित पीव परखि हरखो री हिया ॥ टेक ॥
गगन मगन अजईल अबर पै, धसि घर घाट अनंद अगम को।
महल टहल अपनावत हैं, सोइ साम सुबह रट के जो लिया ॥

॥ शेर ॥

गुल गोर मैं फँसी, दिल दे पसार के।
कर बेवफा को दूर, उस मैं नफा न है ॥ १ ॥

ग़ज़ल

अरी भवसिंध मैं फँसी, पिया बिन बिदेस मैं।
एक जिंद है बड़ा, हर दम रहै खड़ा ॥ २ ॥
पाँचो बदन बली, पचबीस मैं सदा।
नहिं तीन मैं अदा, अघ अंध मैं अली ॥ ३ ॥
भूला भवर सुकर, लीन्ही जो राह कुफर।
मुरसिद बिना बहे, उस राह को न गहे ॥ ४ ॥
छूटे बदन मुकर, दिन चार मैं फना।
बिलकुल बहेल तैं, जाली जबर जिकर ॥ ५ ॥

॥ शेर ॥

मुझ को समझ परी, वहु गंदगी भरी।
नादान यह अली, फिरती गली गली ॥

॥ कड़ी ॥

गो की री गोहारी नियारी , प्यारी पलँग पै ।
पर मल सुगंध जियरा हियरे , वदन हँस वन के तुलसी ।
अली कर करतब कोई काज किया ॥ १ ॥

(२)

तूँ पदम खोज खाविंद खुस कर । नर घर की येही वहार ॥टेक॥
सुरत सखी सुंदर सागर सजि , द्वारे डगर सिधार ।
वार तजि पिया पद पैठि निहार ॥ १ ॥
ये जतन मूल मंदर मथि के , सखी पँच रँग फूल फुहार ।
लखन लगन दीदार दिलोँ में , देख पुरुप मत सार ।
पिया पद तीन लोक से न्यार ॥ २ ॥
अली भलक भलक भलके भूमी , जहँ झिलमिल जोति अपार ।
चमन चीन्ह गुल गोप गगन में , तुलसिदास गुलजार ॥
सुरख रँग सेत सब्ज के पार ॥ ३ ॥

तिल्लाना

(१)

ताद्रिम त्रिदिम त्रिदिम त्रिदिम , धम धिक्कट धिक्कट धुन धरना ॥
गुन गाना ये चिताय ग्राम तुझ तेरे कूँ ।
तन का तरना देख अधर , मुद्दा कहूँ उधर कूँ ॥
खुद साती ये अप झरना ।
तरक तो मेरो बोल धुरदं धुरदं धम ॥ टेक ॥
और जो अड़े वैठे थे उस सतसँग में ।
सबकी सुरत पहुँची धमधम में ॥
कोइ करतब कर पवन भवन कूँ ॥ १ ॥
कोइ कोइ चितवत चमन गमन कूँ ।
अब तो गाना गुलजार , वनि के बोला एक तार ॥
वाह जी वाह वाह वाहजी वाह , तुलसी तरँग तक तोल बोल ले ॥
गुरगम गुरगम धम धिक्कट धिक्कट धुन धरना ॥ २ ॥

(२)

ताद्रिम तरना ताद्रिम तरना ताद्रिम तरना ताद्रिम तरना ।
खिलवत जनाया खुस बोल उस दिल कूँ ॥
आदम अलफ बीच कदम चलावै जाई ।
आसिक जो रूह हूह हर दम कूँ ॥
पदम के वार पार जतन जो करना ॥ टेक ॥
हक हकीकत सननन संध की ।
धादिम धादिम धुन धध अनहद की ।
कोइ कोइ त्रिदिम त्रिदिम तुम तननन ।
कोइ ताद्रिम ताद्रिम गुन घननन ॥
मृदँग कड़क घोर मुहचंग मजीरा सोर ।
थेइ जो थेइ ताता जो थेइ ॥
तुलसी त्रिपट तट धुर पद कूँ धरना ।
नूर के निसाने नित प्रति सुत भरना ॥

(३)

तत रँग रित रँग लौ लाई , कंज कँवल पर बाजत अनहद ।
उठ तरंग धम धम धरना ॥ टेक ॥
दिस निस दिन सखी सुनि धुन लागी , भागी भवन सुधि पाई ॥
संख मृदंग मधुर धुन धधकत , ताद्रिम ताद्रिम तुम तुम तरना ॥१॥
करत घोर घनघोर पपिहा पिउ , पलक पलक लख माहीं ।
महल मरम मंदर घर तुलसी , चढ़त चार चमचम चरना ॥ २ ॥

(४)

सत रज मन मँज नभ नाली ।
झाली की झलक पर अलख बिराजत ।

लखि सुदृष्टि लै लै करज ॥ टेक ॥

हरख द्वार हर द्वार कुंभ अँड, अंडा अधर कहाई ।
धोवत मैल मानसरवर पर, तजि अदृष्टि आजा अरज ॥१॥

पौड़ी पाव न्हाउ हर की पर, सूरत गगन चढ़ाई ।
कसमल दाग काढ़ि करमन के, होय सृष्टि तुलसी तरज ॥२॥

(५)

घर नहिं कीन्हा फेरा ।

या बावरिया मन बंधन दीन्हा फेर फार वहुतेरा ॥ टेक ॥
जुगन जुगन जम बंधन चीन्हा, भरम भूल भटकत रहिये ।

ता की ते सुरत तत मत न हरष ।
अब हिये न चैन हित चित छिन छिन दुख ॥

तब नहिं पकरे सुपने खोज को, सहत जबर जम घेरा ॥१॥
काम क्रोध जद मदन विचारे, चलन चाल फीकी धरिये ।

पी को री पकरि कर घर न परखि ।
जब जियन जोर धक धक ढूँढत सुख ॥

ख्वाब खलक बस ललकि लोभ को, तुलसी न नीक निवेरा ॥२॥

(६)

नर नर देह न पावे ।

यह दुरलभ तन बिच बास बसेरा, स्वास स्वास दम जावे ॥टेक॥
चार लाख चौरासी धार मैं, मरन जिवन जनमत जइये ।

गुरु की सरन बिन बसन गात, तन मिले न बार ।
भटकत फिर फिर भव, रिषी मुनी कहँ मुकत बास ।

तन देव बदन को चावैं ॥ १ ॥
तप रस राज भोग भूले सब, ज्ञान गाँठि गुन मैं रहिये ।
बिदित राग बैराग बिरह बस, कसत इंद्री इत उत भटकत मन ।
त्याग तरक सोइ रोग भोग से, तुलसी तम न नसावे ॥ २ ॥

(७)

चलो री घर चेत चरन तन चाम। अली अनँद बदन चढ़ जागे॥
धुर मत को सुरत कोई देख पावे।
घर भृँगी भौर जुझावन चावे॥
परख प्यारी पद धाम॥ टेक॥
भँवर पवरिया बूझे, अली अनहद बाजे घननन घननन।
गाजे गगन मँझारी॥
नौ से खोज करन को तजि कर काम॥ १॥
सरन सरूपी धीजे। संख सुंदर स्वासा सननन सननन।
सुखमनि बंक भरो री। तुलसी तोल तरक मिलि नाम॥ २॥

(८)

गहो री गुरु सेत बरन सुख धाम॥ टेक॥
अली अमल बिमल बर पावे।
गगना पर धम सम सुरत लावे॥
लखि रमक चमक रस पीवन चावे।
नील निकर तजि स्याम॥ १॥
भेट भवन तन सूझे, अंदर की बतियाँ धरन सरन।
पी को परन पुकारे तुलसी, जहाँ छाँह नहिं घाम॥ २॥

(९)

चल मँजिल मुसाफिर थाके हो।
जहँ से आये जाहु जहाँ जब, उतनी ठौर कहावोगे।
अपना बूझो कवन गाँव घर, अजर अमर जोइ जाके हो॥टेक॥
भरम परे जब रोके हो, जम जबर जँजीरन ठोके हो।
भज उसी नाम को याद करो, तज कुफर बाद बरबाद नरो।
मिल फजल वहीं जद वाके हो॥ १॥

अबर अली की खबर तको , जब सबर सुभा दिल दूर रखो ।
तुम रूह रकाने गगन चढ़ो , असमान अरस पर जाय अड़ो ।
तब गजल गांम से पाके हो ॥ २ ॥
सक सुभा वदन चक चाखे हो , जब जबर फिरिस्ते नाके हो ।
अब फहम फना तजि बाट बसो , घर घाट मुकरबे चमक चसो ॥
रवि सिजल लखो जब लाके हो ॥ ३ ॥
तुलसी कहे तलब बिना के हो , कर मुरसिद को नहिँ फाके हो ।
फरक फकीरी बूझैगा , जब गुनह समझ कूँ सूझैगा ॥
हक अदल मुरीदी काके हो ॥ ४ ॥

(१०)

बिन डगर मियाँ कहँ जाते हो ।
खलक खुदी सँग भूल परे , परदेसी देस न पाते हो ॥
धक धक होता अंदर मेँ , दिल सुभा भरम भव खाते हो ॥ टेक ॥
कुछ खोज खबर नहिँ रखते हो, नित नई नियामत चखते हो ।
मियाँ जेर जबर तक धीर धरो , दिल पाक बदन होय होस करो ।
भव भटकि भटकि दुख पाते हो ॥ १ ॥
इलम इबादत कूँ जानो , ये सरा समझ को पहिचानो ।
मियाँ आप खुदी खुद खूब नहीं , यह मुरसिद नाचीज कहीं ॥
बद बेवफा चित चहते हो ॥ २ ॥
हर वखत तबाही सहते हो , हुरमत लज्जा सब खोते हो ।
कर होस अदल बिच जागोगे , जब कुफर कूर से भागोगे ॥
हक इसम बिना लौ लाते हो ॥ ३ ॥
तुलसी तवक्का करले रे , यह जुलमो काफिर कर जेरे ।
पिउ अदल मुरीदी लावोगे ।
वे मझब हकीकत गाते हो ॥ ४ ॥

(११)

अली अल्ला अलफ इलाही, खिलकत मेरी जहाने।
नूर नबी का सब खेल॥ टेक॥
मेहर निगाह जिन जान जहूरा, मुरसिद कामिल चसम निवाजी।
कोई मुरीद रूह साईं॥ १॥
जान वली कोइ फकर फकीरा, खाविंद की जिन खबर सुनाई।
बंदे वे जिन पाई॥ २॥
हुकम हजूरी कफन दया का, मुसलमान ईमान कुराना।
दरदमंद फरमाई॥ ३॥
तुलसी रहम रहमान हकीकत, जो कतेब पैगम्बर गाई।
मक्का हज्ज हिये माहीं॥ ४॥

(१२)

मियाँ मौला मदद खुदाई, हर दम पैरी हजूरी।
बंदे कदम दम पोस॥ टेक॥
पल पल दिल दुरवेस जिन्हों के, वे रोसन हाजिर बिरलाई।
जिन मुहब्बत मेहर जनाई॥ १॥
फजल नजर जिन जान गरीबी, फरक राह मुरसिद से पाई।
वे मुसाहिब हक माहीं॥ २॥
अरस मुनारे दरस दिवाने, अंदर में जिन रूह चढ़ाई।
लामुकाम रब साईं॥ ३॥
तुलसी तकत दम नूर जहूरा, लै कलाम साहिब की राही।
जिन मंजिल मारफत गाई॥ ४॥

(१३)

अब तो सुधि समझाई, पिउ वा घर की गुरन।
भेद दियो री वाही देस॥ टेक॥
गगन गिरा केरी बिरह जनाई, सबद सोर घनघोर लखाई।
पल पर पल लौ लाई॥ १॥
सुरत खड़ी द्रुग दीप नवल पर, कँवल कली अली याद कराई।
ता बिच गति मति पाई॥ २॥

समुँद सोत पर पोत परखिया, हरक मरक हिये मारग आई।
दल मैं नल दिखलाई ॥ ३ ॥
तुलसी तरँग रँग संत सुनाई, विरले गुरमुख सुरत लगाई।
जिन जिन यह गति गाई ॥ ४ ॥

(१४)

अरी अब तो सब दरसानी सुरत मोरी।
दिरगन जाय समानी वोही धाम ॥ टेक ॥
हेर लई जिन जनम सुखारी, अपने पिया को पिरवा जनाई।
सुनि धुन मैं लिपटानी ॥ १ ॥
फेर भई मैं तो पिया की प्यारी, सुपने पिया को न विसरि बनाई।
घट पट पिउ पहिचानी ॥ २ ॥
मेहर भई पिया परम सयानी, हाल हरख हिये कंठ लगाई।
छूटी सब दुख सुख खानी ॥ ३ ॥
तुलसी परम सुख रीत जुड़ानी, सेज पिया सुख बरन सुनाई।
ज्यौं जल मिलि जल पानी ॥ ४ ॥

तिल्लाना धमार

(१)

अहो घट घुमर बहोरी पट पैारी हो ॥ टेक ॥
धुन धमार राग उठे अटारी।
आली अचल तन तननन तान सुनाई ॥
कान पर ध्यान धरि मन पहिचान हर।
हिये हरख चढ़ सुरत सननननन ॥
लै लैा पिया की वट पैारी ॥ १ ॥
करम भरम तर्क त्याग तरक सखी।
भटक भवन सब डारि नैन निरख नीर ॥
भिर झलक फिर थिर तटक तीर भवर भननन।
भावे भलक लखि जोती झलक पक ॥

अलख लखि पल झमक झननन ।
गगन चढ़ि अड़बड़ बिकट ॥
गढ़ गवन गिरि पर घमक घननननन ।
हिरदे हट कै लख लोरी ॥ २ ॥
पत प्रिये ज्ञान ध्यान धरि धीरज ।
निरमल बुधि बिचार गुरु पदम मूर, धुर धरन लई ॥
सुर सिमट मठ सटक सिर नाई, दृढ़ पकड़ि पद हद निकरि जाई ।
जद जतन मन मथन अपनाई, सब्द सत मत पत पिया को पाई ।
हटकि खटखट खटक खननन, तुलसी अटपट फट फोड़ी ॥ ३ ॥

(२)

अहो हम हुकुम हजूरी सत सूरी हो ॥ टेक ॥
खुद पठाई जिव जाय चिताई , लावो बेहद माहीं ।
मद हद्द छोड़ाई । जद पिउ लखाई ॥
कद कहूँ सुनाई । आदि अधर आली मंदर मंज करि ॥
लखि तक ये पकर पत पिउ री ॥ १ ॥
काल जबर जम जाल बिछाई ।
माल मूल घर और गगन नख चक चढ़ि चलावो ।
सुन्न सबद तजि भज भरम उड़ाई । धुन महा सुन्न जुगन कर आई ।
आली अगम गुर धुर अरूप माहीं । चून बेचूँ नमून पुनि परख जाई ।
वासी अटल अज आट अटारी ताई । तुलसी अमरा पद मूरी ॥२॥

तिल्लाना बसंत

(१)

मंदर मीन मन अंदर चीन्हो नौ नवीन ।
मध के बाग बन वन गुलाब ।
नभ आब अबर बिच खबर खुल लो ले यकीन ॥ टेक ॥
प्यारी परख लखि लील सही । करम भरम डर कील गई ॥
पील पकड़ि धकड़ि धर करि जकड़ि जड़ ।
काढ़ि कठिन बँद फंद बँधाई ॥

सुरत सजि भज गज की गैल डारी ।
कारी कद्र तजि सद्र सजि न्यारी ॥
तोल तरक चढ़ गगन मठ माहीं ।
थोब जतन तत बद्न बोल बन बजत बीन ॥ १ ॥
गुर के बचन मन कर अमीन । डगर देत घर हो अधीन ॥
लखन लख तक पक्र पकर जाई। अलख तज करि भज पलक माहीं॥
खलक खोटी नर आदि अपन घर घर अमर। कर खोज कराईजाई॥
गुन सतोरज तुलसी तम तन नसत तीन ॥ २ ॥

(२)

सुरत साध पद पुरुष आदि हो ।
भव बिवादा जात बरन तजि कुटँब कुटिलाई ।
काई करम बस भरम अस ले बहु उपाधा ॥ टेक ॥
जस माखन मथि तत मैं जीउ । जतन जान जिन काढ़ि घीउ ॥
पी पवन केरी भवन मत मँजाई । अज अवास केरी कहन कर काई ॥
माहीं अवन तजि गवन गफ़लाई। आई कँवल दल धवल धीरताई॥
चद्दर फट झटपट झमक जाई ।
साईं परखि पल गली मैं चलूँ नल निरखि नादा ॥१॥
समुँद सार सजि अगम पार । सुरत जहाज चढ़ि अज अधार ॥
चलि भगति भल ज्ञान केवल मंज। मीन मलाह थाह थिर कराई जाई॥
मान मन पवन सिथलाई । सर के तट घर घाट लगाई जाई ॥
बाट बिमल बस बेनी की बिमलाई ।
पाई लखन तन मन मथन तुलसी चढ़ि अगाधा ॥ २ ॥

तिल्लाना

ज्ञान गुर से पार उतरिये , सूरज सुरत आवत है ॥ टेक ॥
नैया फेरी वली विरले , पैरी मुजरी मैं जहार हिये ।
जमाद काम अतूल बली , जहँ कोइ ज्ञान से बूझनहारा ॥
भवना चलत तरुनाई उछलत गुन, जहँ सार पै ध्यानी धीर धरत है ।
सत सूरत मंजन पैनत , तब देख दृगन हियरे भरिये ॥ १ ॥

पिउ घर घाट गगन गढ़ फोड़ा, बाट निकट तट थाह न निबेड़ा ।
लै सुखसहर जौहर कीजुगत आवे, द्वार किनारे भगतिकीमुकतपावे।
धधक सुनी जा से कहिये , जब जमक उठे उलटी धरिये ॥ २ ॥
खड़ी लहर में लगन पुकारे , गाढ़ भई है गुर को निहारे ।
उनकी मेहर से सुमत छाई मो को, परम प्रिये पिउ को लखि लेऊँ ।
तुलसी तरक तत मत केरो , जब पदम पार सूरत करिये ॥ ३ ॥

तिल्लाना मलार

माई गुर चरनन मन अरुझे ।
तजिया भरम भंग भँवर भृंगी बन भननननन ॥
ललि ललि फल फूल सजन सजी भज ।
सुरत सुधार सुधि सननननन ॥
अद्भुत आन घर धा परमान को ।
अजर अमर घर है अरूप वै ॥
तागड़दिम तागड़दिम तादिम तननननन ॥ १ ॥
झाली की झलक लखत न तकी पल पलक
झलक घट घननननन ॥
चढ़त चैन चखे अस अनैन कूँ ।
सिखर निझर तुलसी अजूब वे ॥
नागड़दिम नागड़दिम धाधीम झननननन ॥ २ ॥

तिल्लाना

(१)

दर्शन को आज आई अटा प्यारो, सुधरी सम्हारी भारी ।
देसन निहारी जोरी जिधरी की, बूझ यारी नेहरा सिराई ।
उमँगि उमँगि केरी धुकधुक आवे,
लारे लारे धीरे धीरे घघरा को रंग लिये ।
बोलवा बोलाय औंटी कुंदन वटा ॥ १ ॥

पाइद मैं पिउ खोज करे, तो मो सुन मैं भई कहूँगी।
झम झागर दी झुनन झम झननननन।
कसरी खनाका दम दड़ाका बरी लैलियोँ धाम को घोई लटा ॥२॥
दादिम किया बज बनरोँ तोले जब धुन कूँ पकरि चहूँगी।
तादिम तागड़दी तनम तुम तननननन ॥
दस री जमाका धाम धसा जा।
जब तोल लियो तुलसी तलाव तटा ॥ ३ ॥

(२)

सुन जैान जैान सी बात कहूँ, सुरत के तकने की अली तो से।
रूप रेख तौ प्रगट मैं करूँ, लाखन लोचन मैं जानि परी।
कछू बरनन नहीं बन आवत है ॥ टेक ॥
गगन मगन मिलि अपी वो धरन कूँ।
अब तो देखी अब तो देखी इन अँखियन सूँ ॥
निरख परख अली अपने पुरुष को।
सुरत धुर गुर घाट अधर अली लखत रही स्तुत गावत है ॥ १ ॥

बैत

(१)

अब बंद हा गुल राबी धरी है उसी सूझे।
खुल खुल के योँ कर कर लगे घोरी मीठी मुझे ॥१॥
पिउ को री परन तक धरा री धरन को।
लखि सो लई लखि सो लई ॥
कही सखियन सोँ, अगम अली धुन भाखत हैँ ॥ २ ॥
अगम निगम तजि सँग बिचरन को।
लखि सो पाई लखि सो पाई लखां री लखन को ॥
स्याम सेत दिस देख दृगन पर, चढ़त चटापट पार।
अधर अली अछत भइ रस चाखत हैँ ॥ ३ ॥

(२)

अब अंद हा कुल राबी करी है खुसी तुझे ।
पल पल पै लै। काकर लगे मेरी झूठी जुझे ॥ १ ॥
जी को री जरन सखी तुलसी री सरन मैं ।
अब तो भई अब तो भई गई थकी इन से ।
मगन भई मन ताकत हैं ॥ २ ॥

(३)

लै लै लटी बादियाँ जनम मजनूँ तजनूँ ।
मैं तो छाड़ी नादड़ी नादड़ी ॥
आँदियाँ आँदियाँ तोड़ियाँ तोड़ियाँ छोड़ियाँ छोड़ियाँ ॥ टेक ॥
नाना वे प्रिये पति तैं किये बैन । सुख सहर दी फजल रख ॥
पोहड़ पछ दै ये दान तेरा अंत दी तजनूँ ॥ १ ॥
जा जा वे सुरत सखो कै ठगनी ये । पिउ मेहर दी नजर अज ॥
छोड़ छल कहे तुलसी लै तेरा । संत दे भजनूँ ॥ २ ॥

तिल्लाना मलार

लाई हर से हित लाई, सबद घोर पर पावनी ।
भृंग भननननन भिन भाई ॥ टेक ॥
चमकत बीज दमक दामिनि की, सादर बरस बहाई ।
उमँडि घुमँडि बदरी गगना, घन घननननन गुन गाई ॥ १ ॥
उलटि चली सुंदर मंदर पै, अंदर सुरत लगाई ॥
तुलसी ताल तीर धधकत धुन, घट मननननन मन माहीं ॥२॥

तिल्लाना बिहाग

अरे मन मंदर गुर ले गली ।
गुर की गली री आली दीपक चास के अंदर मगन मिली ॥टेक॥
सुंदर समझि चली घर अपने, सुपने टेक टली ॥
सबद सार सूरत मूरत मैं, पिउ सँग प्रीत पिली ॥ १ ॥

प्यारी प्रेम पाल प्रीतम से, रँग रस भाँति मिली ॥
सेज सँवारि पार पलँगा पर, तुलसी-झमकि चढ़ी ॥ २ ॥

मलार

(१)

एरी माई पिया मुख बैन बिरह की बतियाँ ।
छिन छिन छतियन हूल उठत ॥ टेक ॥
नागिनि सी डस खावे मानो जिये जूड़ी आवे ।
जहर लहर जिम हिये बिच खटके ॥ १ ॥
रोय रोय अँखियाँ बीती दिन रतियाँ ।
अली पत पीर पुरुष बिन भटकी ॥ २ ॥
भेष सब देख डारी पंथा पंथा हेरी हारी ।
खोजि खबर झारी पिया पद पट की ॥ ३ ॥
कोई लखि जाने नाहीं मेरा मन माने नाहीं ।
समझि समझि हारि हिये बुधि हटकी ॥ ४ ॥
सतसँग सुनि पाई धुर गुर गत गाई ।
संत लखाई सब घट घट की ॥ ५ ॥
सुरत सतसंग लीन्हा सत सत मत चीन्हा ।
तुलसी दुरबीन द्वारे धसि धसि अटकी ॥ ६ ॥

(२)

एरी माई सतगुर भेद दियो प्रीतमजी को ।
सैयाँ की सेज मन मथ के मिलौंगी ॥ टेक ॥
गो गुन तोरि डारूँ प्रकृति मरोरि डारूँ ।
छोड़ूँ री कुसँग सँग सुरत से पिलूँगी ॥ १ ॥
ज्ञान गली गहना पहरूँ भगति सुरत सारी हेरूँ ।
अँगिया अगम गढ़ चढ़ि के चलूँगी ॥ २ ॥
मुकता माँग सुख चैनूँ नेह की नथनी पहनूँ ।
घघरा घेरि घट नहीं हिलूँगी ॥ ३ ॥

बिछुवा बिबेक बाजे चुटकी चमक साजे ।
अनवट घट तट तजि न टलूँगी ॥ ४ ॥
सेंदुर सुबुधि साजे बिंदली लिलारी राजे ।
करुना करनफूल कंज सी खिलूँगी ॥ ५ ॥
हिये हरखि हरवा पहरूँ मेंहदी मंजल हेरूँ ।
आतुर निरासा हुई टाँके मैं तुलूँगी ॥ ६ ॥
नेवर नौ नैना काढ़ी जेहरी जवाहरौं जड़ी ।
सभी करम तजि होरी सी जलूँगी ॥ ७ ॥
सोलह सिंगार सोहे बत्तिस भूषन मोहे ।
तुलसी तत तार धरि पिया को छलूँगी ॥ ८ ॥

(३)

एरी माई पिया के मिलन मँज समझ सुनाऊँ ।
आली री अटारी आदि अटल बखानी ॥ टेक ॥
सुरत दृग दिस लागी नौ तजि दस मैं भागी ।
नल की नाल तजि सुन्न समानी ॥ १ ॥
सुनि धुन सब्द बूझी , आगे को अगम सूझी ।
सुनि सुनि धुनि धसि धुर की निसानी ॥ २ ॥
पाँचो तत मत नाहीं , रवि ससि थकि जाईं ।
संत लखाई खोल खिरकी दिखानी ॥ ३ ॥
द्वादस दीदा दीसे , मन गुन गन पीसे ।
चढ़ि अड़ि अंडा जब अधर कहानी ॥ ४ ॥
देखा जाइ लोकी लोका , मिट गया धोखी धोखा ।
सोक तो पलँग पास सभी है हिरानी ॥ ५ ॥
पिया की प्रेम प्यारी , सुरत लखि थकि हारी ।
प्यारे के कदम पर धरि लिपटानी ॥ ६ ॥
पिया सुख भयो भारी , रमज चिन्हाई सारी ।
धरी धार बेनी जल लहर लखानी ॥ ७ ॥
तुलसी तन मन माहीं , मिलि जल जल जाई ।
साईं सलिता जिमि समुँद समानी ॥ ८ ॥

(४)

एरी माई प्रीतम परस पास बस बतियाँ* ।
केल करत रस रतियाँ चिताई ॥ टेक ॥
अली सुरत संग कीन्हा । पिया बस रस पीना ।
बहियाँ पकरि पट पलँग सुलाई ॥ १ ॥
जल भरि झारी लाई , मन मथि मेवा खाई ।
रहसि रहसि पिया गले से लगाई ॥ २ ॥
सखी सुख कहा गाई , पिया की मेहर पाई ।
भव की भूल सब बिधि बकसाई ॥ ३ ॥
जुग जुग सँग पाऊँ , पिया की मेहर चाहूँ ।
पत सतलोक मैं कुटी द्वै छवाई ॥ ४ ॥
कलप कलप दुख पाई , साँई की सरन आई ।
महल मझब जब समझ सुनाई ॥ ५ ॥
तपन की ताप तोरी , भव की भटक मोरी ।
ओढ़ी अली अगम चीर चित लाई ॥ ६ ॥
मरन जीवन छूटा , पिया सँग सुख लूटा ।
प्यारी को दुलार कर अंग में लगाई ॥ ७ ॥
तुलसी अब संग साँई , आदि की चिन्हारी पाई ।
सुरत बुंद सिंध मिलि समुँद समाई ॥ ८ ॥

(५)

एरी माई मौज महल मुख मेहर पिया की ।
तोल बोल बकसीस लखाई ॥ टेक ॥
हुकम पुरुष पाई रचा सब सुरत जाई ।
अगम लखन लखि दिल में दिखाई ॥ १ ॥
सुरत सतलोक लीजे , दस्त दसौ दिस कीजे
आली री अमल सब अंड पै कराई ॥ २ ॥

---

*एक लिपि में "बसियाँ" है ।

करता की कूवत नाहीं, काल न अमल पाई।
निडर निडर हम हुकम चलाई ॥ ३ ॥
सब पिंड अंड नासा, ब्रह्मंड न बचे स्वासा।
अली री अमर जुग जुग मैं कहाई ॥ ४ ॥
हम अबिनासी दासी, होवे न हमारी नासी।
बसी पिया पुर पद परले न जाई ॥ ५ ॥
होवैं औतारी नासी, ब्रह्मा बिसुन काल फाँसी।
सिव नास बेद कहो कैसे न नसाई ॥ ६ ॥
परलय जुग जुग आई कलप कलप माहीं।
तुलसी सुरत तारी घर अगम लखाई ॥ ७ ॥

(६)

एरी माई परम धाम घर बजत बधाई।
सुरत अली उमँग प्रेम छबि छाई ॥ टेक ॥
अनहद धुन गाजे, गगन नगारे बाजे।
सुमत सहनाई मृदु मृदँग बजाई ॥ १ ॥
झमक झाँझ कीन्हा, पलक मँजीरा लीन्हा।
बैन बिलग मानो मुरली सुनाई ॥ २ ॥
बिरह बंधनवार कीन्हा, पोहप पदम लीन्हा।
तोरन तत हिये हिरस हिराई ॥ ३ ॥
हिये दृग दिस लीन्हा, सुन्न की समझ चीन्हा।
सुनि धुनि धधक धीर चित लाई ॥ ४ ॥
चकि चक चैाक पूरा, लीलम पन्ना पद मूरा।
हीरा मोती थारी भरि भरि के लुटाई ॥ ५ ॥
आरत अधर कीन्हा, दीप रचि ससि लीन्हा।
काया मैं कपूर लखि जोत को जराई ॥ ६ ॥
सखियाँ सकल आईं, मंदर मंगल गाईं।
बेनी जल भरि कर कलस धराई ॥ ७ ॥

अगम अनंद कीन्हा, सुरति पिया पद लीन्हा ।
चढ़ि चढ़ि चीन्ह चौक लोक की कहाई ॥ ८ ॥
जाचक जनाये आई । मँगता उमंग पाई ।
तीन लोक सुख सुरत संपत उड़ाई ॥ ९ ॥
नाऊ निराकार जोती, नाँव निज नाई नौती ।
ब्रम्हा विसुन सिव सब साइस कहाई ॥ १० ॥
औतारी चवर ढारी, लछमी पखाना झारी ।
तैंतिस कोट देव दानी घर धाई ॥ ११ ॥
जिमीं अस्मानी माया, भोग सुख दुख काया ।
सब मँग मँगता निछावर पाई ॥ १२ ॥
आली री अनंद गाई, तुलसी हिये पिया साईं ।
बिमल बधाई सुख बरनी न जाई ॥ १३ ॥

(७)

एरी माई मनुवाँ मोहिं अरुझावे । गो गलियन नित लावे ॥टेक॥
रैन न चैन पलक दिल* दौड़े माई । बौरा थिर नहिं लावे ॥१॥
गन गुन गवन भवन भरमन बस । सतगुर सबद न भावे ॥ २॥
काम क्रोध मद लोभ लहर बस । हर दम कहर करावे ॥ ३ ॥
बिन सतसंग रंग बिन बूड़ा माई । साइ की सरन नहिं आवे ॥४॥
तुलसी ताव भाव लखि लगे बिन । जुग जुग गोता खावे ॥५॥
मन मथ खेल मेल खुल कर आ री । जब कोई समझ समावे ॥६॥

(८)

एरी माई मन थिर थोब थिरावे, मिलि दिल दरज उड़ावे ॥टेक॥
इंद्री मन रस तजि बिरह बखाने माई, माने जाने जाईं सिर नावे ।
आवे री भगति जग जगत जनावे माई, दासी दर दीन कहावे ॥१॥
साध री संत कोइ कोइ दृग देखो माई, धाय धाय चित चरनावे ।
अपनी अपनपौ धर कर लघुताई, जाय जाय सीस नवावे ॥२॥

---

* एक लिपि में "दिन" है ।

अस अस चाल चलेरी धरि धरनाई, पाई सोई अस अस गावे।
आदि आदि अंत संत सब सुरत गावे, यहि बिधि बरन सुनावे ॥३॥
मन री चपल पल पल चक चावे माई, धावे धावे धीर धरावे।
सत मत तार जलद जद मन केरी, फिर फिर फहम लखावे ॥४॥
गगन मगन घनघन गरजावे माई, मन मृग सुनि समझावे।
अली अस सतगुर अदल लखाई माई, तुलसी तरक बतावे ॥५॥

(६)

अरी पत पिया की पीर खटके, अरी कोई मन मलीन हटके ॥टेक॥

बिष रस बिरह फिरत फिर फिर फस।

दर दर द्वार द्वार पटकत अस ॥

गो रस दैाड़ दैाड़ नित जावे माई, भरम भूल भटके ॥ १ ॥
अरी मत मूर मरम बिन गुर मत, प्रत ब्रत रत सत करत न कहूँ पत।
धरत न धीर सरन सुत माई मन, तन सब बन अटके ॥ २ ॥
यह दिल दरद गरद पल पल दुख, मुख मठ चलत न घर घट सठ सुख।
अधर पै पट परदा खुल खुल जाई, लगन लार लटके ॥ ३ ॥
सीप दीप द्वारदृग चिन्ह चटकत, सहस कँवल दल पल सुत, सटकत।
तुलसी तरक फरक फिर आगे जाई, पाई पिउ सुत रट के ॥ ४ ॥

(१०)

अरी ए गगन घन गरजे।

सुरत समुँद सुन दरजे ॥ टेक ॥

सेत सुरख कारे पीरे दृग देख पाई।

बिगसि बिगसि मन लरजे ॥ १ ॥

एक तो उलट पट मठ उजियारी माई।

साईं तो मगन बन बरजे ॥ २ ॥

ताही के समय में सुत निरताई जाई।

हुलसि हुलसि धुन धिरजे ॥ ३ ॥

आगे तो अकेली आली चेत के चमक चाली।

लाली लाली झाली झीन अरुझे ॥ ४ ॥

जोत की झलक लखि पक करि प्रेम प्यारी।
अलख पलक पर सरजे ॥ ५ ॥
अरी ये गुरन कर कर समझावे माई।
नाइ नाइ घन मन मरजे ॥ ६ ॥
काल ने कराल जाल झाल मेँ बनाई।
संत सुनाय पिया परजे ॥ ७ ॥
अली अंड खंड सारी मंड है निनारी प्यारी।
अली री अछर छर छरजे ॥ ८ ॥
भान भान कोटि कोटि छवि उजियारी माई।
तुलसी करत ऐसी अरजे ॥ ९ ॥

(११)

अरी ए अधर घर दरसे, जुग जुग जम नहिँ गिरसे ॥ टेक ॥
सागर समझ मझ कंज मेँ कहाई माई।
पुरुप परम पद परसे ॥
पिया की पदर धरि प्यारे की दुलारी जाई।
क़ाज करो री वोही घर से ॥ १ ॥
गुरन गली री आली अगम बताई गाई।
काल अछर नहिँ छर से।
नेह री अछर सर सुरत समानी जानी।
मानो री पकरि दोउ कर से ॥ २ ॥
बिन सतसँग रँग रमक चमक नाहीँ।
धरो री धमक दिल डर से।
लखन लगन मन मीन मरम जाई।
पल पल जल बिन तरसे ॥ ३ ॥
तुलसी तन तलफ कलप कर मन केरी।
बंद फंद छूटे आली अरसे ॥
सार से सुरत निरत नित निरखे माई।
परख पुरुप मन थिर से ॥ ४ ॥

(१२)

अरी घन गरजे री, अब ऋतु आई सुंदर ॥ टेक ॥
उमँडि घुमँडि बिजली बन तड़पे, कड़क हिये जिया लरजे री ।
घोर घटा जल थल भूम बरसै*, करम काल कृत डरते री ॥ १ ॥
हरियल भूमि भई कंजन पर, मन गुन उतपत सरजे री ।
परलय काल जाल जम जुलमी, मरन जिवन जिव अरुझे री ॥२॥
उष्मज और अस्थावर अंडज, पिंडज सुन सब नर जे री ।
बिन गुर ज्ञान ध्यान भव भरमे, फरक फहम पिया बरजे री ॥३॥
तुलसी तोल सुरत सोइ समझी, गई गगन चढ़ि घर जे री ।
दृढ़ करि डोर पोढ़ करि प्यारी, डारि दिलोँ को दरजे री ॥४॥

(१३)

अरी घन बदरा री अब घर घाट घुमर ॥ टेक ॥
बिरह बिथा बस जस हिया हुलसे, झुलस अगिनि तन कदरा री ।
पिउ पिउ प्यास आस अली रटिके, सुधि बिन घट मानो मदरा री ॥१॥
बुधि बैराग राग तजि माती, राती रँग रस सगरा री ।
मन मँझ कंज कँवल दृग दौड़ी, पोहड़ पकड़ि पिउ पदरा री ॥२॥
सूरत समझ सैल दल दोय, खोय खलक गुन झगरा री ।
पाँच पचीस तीस तैंतीसा, ईस बिश्रस मानो मगरा री ॥ ३ ॥
तुलसी तार सिहार समझ सुन, पुनि धुन चख फल गदरा री ।
सोइ सोइ सार समझ स्रुत सारँग, मिलन मूल पद अजरा री ॥ ४ ॥

(१४)

घट देखो सुरत लगाई, यह तन बीता रे बिनसाई ॥ टेक ॥
पल पल घट घड़ियाल पुकारे, अरे पट मारे काल कसाई ॥१॥
यह जिव जान खान बिच राता, माता मरम न पाई ॥ २ ॥
यह जम जाल काल की बाजी, पाजी फिर पछताई ॥ ३ ॥
तुलसी तोल निरख नैनन से, बहे जग नाव न पाई ॥ ४ ॥

---

* एक लिपि में "भरमै" है ।

(१५)

गुर खोजो सतगुर प्यारा रे, अरे बँद फंद से होय नियारा रे ॥टेक॥
केवल नाँव पाव तजि पोहमी, नौमी नैन निहारा रे ॥ १ ॥
अली सम धीर गँभीर समुँद मेँ, लख सुत सत मत द्वारा रे ॥२॥
मठ पर गवन भवन मंदर मेँ, देखो अगम पसारा रे ॥ ३ ॥
सिष गुर गवन गिरह की बानी, मानो करो निरवारा रे ॥ ४ ॥
तुलसी तरक फरक फिर नाहीँ, सब जग जाल पसारा रे ॥ ५ ॥

(१६)

वोही धारे रूप अनेका री, प्रभु देख अदेख अलेखा री ॥ टेक ॥
जिन* तन धारी प्यारी निरख नैन पट, जुगल जोय तन एका री ॥१॥
गो गुन ग्राम चाम के मंदर, सेत स्याम पर ठेका री ॥ २ ॥
छबि निरखो छिन छिन दृग माहीँ, साईं धारे बहु भेषा री ॥३॥
प्रान पती पूरन तन बासी, करम कार रुचि रेखा री ॥ ४ ॥
सो तुलसी नर तन बस गावैँ, सकल पसारा जेका री ॥ ५ ॥

(१७)

पूरन पद आप अडोला, वोही भव बंधन बिच डोला री ॥टेक॥
पाँच तत्त तन मन बस बासी, पहिरि प्रेम का चोला री ॥१॥
प्रीत करी पर रीत न जानी, बानी रुचि बिच बोला री ॥ २ ॥
पाँच पचीस सखी रँग राते, माते मरम न तोला री ॥ ३ ॥
इन रस बस अपने मेँ राखा, तुलसी तंत न तोला री ॥ ४ ॥

मलार इकताला ।

(१)

उड़ उड़ रे बिहंग गगन चढ़ि अटारी ॥ टेक ॥
मठ बिलोकि लोक लखन, गरजत मेघ गंग घुमर ।
परख प्रीत प्रीतम अधिकारी ॥ १ ॥
संग सनीप दृगन दीप, जगमगात चमचमात ।
झिलिमिलि जले जोत की उजारी ॥ २ ॥

---

* एक लिपि में "निज" है ।

भनन भनन भँवर गुंज , मनन मनन मृदँग यंद ।
घम घननन अनहद झनकारी ॥ ३ ॥
मगन मूल कँवल फूल , अंतर हूल लख अतूल ।
नील नगर स्याम सिखर पारी ॥ ४ ॥
तुलसिदास पद प्रकास , अज अकास लखि हुलास ।
परन पार अधर घर करारी ॥ ५ ॥

(२)

पिउ पिउ रटो रे सुरत से पपीहा प्यारे ॥ टेक ॥
स्वाँत बुंद अधर झरत , नीर आस लखि अकास ।
जिउ की प्यास अमी से बुझाई रे ॥ १ ॥
झिरमिर झिरमिर बरसत मेह , बीज बदर कर बिदेह ।
अज अदीद देह से निनारे ॥ २ ॥
बने रे चौखलक खेल , पावे कोइ पलक सैल ।
गुरु के बचन कहत हूँ पुकारे ॥ ३ ॥
संत सरन भये अधीन , बूझे कोइ चरन चीन्ह ।
सतसँग करि मरम कूँ सिहारे ॥ ४ ॥
तुलसी सब तरक कीन्ह , सुंदर मैं सबद लीन्ह ।
सुरत मुरत मगन ह्वै निहारे ॥ ५ ॥

(३)

एरी आज जियरा उमँग हिये माहीं ।
पिरवा सतावे धिरवा न आवे ।
पिया रटि रहियाँ लै की लटक ॥ टेक ॥
प्रीतम लहर चढ़ै नागिन बिप बिरह उठे ।
निस दिन मेरे दिल खटके ॥ १ ॥
जल बिन मीन स्वाँत बिन पपिहा ।
प्यास रटत जस पिया बिन जिया भटके ॥ २ ॥
थिर केहिं भाँति करूँ पिया के बिना आली ।
नाहिं आड़ पकड़ि कहूँ अटके ॥ ३ ॥

तड़फत प्रान बिकल तन तुलसी।
भँवर चक्र विच चित धरि धरि पटके ॥ ४ ॥

(४)

एरी ये नेहरा लगाऊँ केहि से जाई।
गाउँ न ठाउँ जानोँ डगर न पावोँ।
अली भटकैया घर न मिलत ॥ टेक ॥
चित ब्रत वैन कहे न काहू की।
नीकी नहिँ लागे हेली पल पल जियरा जरत ॥ १ ॥
चंदा प्रीत कमोदनि कलपे।
बिलग होत नहिँ फिर खुल फूल खिलत ॥ २ ॥
ऐसे दुख पिया प्रीत मनोरथ।
हिया महेलो रे मोरा मन कहूँ नेक न हिलत ॥ ३ ॥
तुलसी तन मन तरँग उठत है।
पिया बिन जिया जैसे कोल्हू तिल तेल पिलत ॥ ४ ॥

(५)

वारी ए सहेली प्यारी, आली मैँ तो थारे सँग वाली ॥ टेक ॥
म्हाने तो भेद दीजे लारे लीजे, प्यारे से मिलन नित नित कीजे।
जिवड़ो काज म्हारो सीझे, पिया के महल चेत चाली ॥ १ ॥
अगम लखासी सुरत थारी दासी, पासी अबिनासी पूरा पद वासी।
संत लखासी काटी जम फाँसी, मिटत सरन भरम जाली ॥ २ ॥
लागो लै लारी पैहो सुख भारी, काढ़ो करम जारी मिलो पिया प्यारी।
निरखो नित न्यारी दृष्टि पसारी, अली तोल पायो निरख लाली ॥ ३ ॥
गुरमुख बानी तुलसी मन मानी, अज असमानी सुरत समानी।
अगम बखानी मूल ठिकानी, हिये* हित नित प्रतिपाली ॥ ४ ॥

* एक लिपि में "पिये" है।

ठुमरी

(१)

आली अटकी सुरत अटारी, मन हठ करि हारा री ॥ टेक ॥
यह अँग संग भंग लै लटकी, सूली सरग नरक भव भटकी।
दीन्हो सतगुर घट की तारी, चटकी मत फटक फटारी ॥ १ ॥
यह लै लार पार सुत सटकी, निरखा अलख आद घट घट की।
हक लखि लागी बिरह करारी, हिये खटकी कसक कटारी ॥ २ ॥
नौ लख खेल कला ज्यौं नट की, सूरत सहस कँवल झर झटकी।
लीला सिखर निकर नित न्यारी, दधि मटकी चिरत मठा री ॥३॥
तुलसी तोल कही तिल तट की, भई धुन ररंकार रस रट की।
यह दस रस बस सुरत सम्हारी, पिउ पट की खोलि किवारी ॥४॥

(२)

झँझरी पिया झाँकि निहारी, सखी सतगुर की बलिहारी।
दीन्हा दृग सुरत सम्हारी, पद चीन्हा पुरुष अपारी ॥
चली गगन गुफा नभ न्यारी, जहँ चाँद न सुरज सिहारी।
तुलसी पिया सेज सम्हारी, पौढ़ी पलँगा सुख भारी ॥

(३)

सलिता जिमि सिंध सिधारी, सूरत रत सबद बिचारी।
जहँ सुन्न न सुन्न निनारी, मत मौन महासुन पारी ॥
नहिं गुन निरगुन मत झारी, निज नाम निअच्छर भारी।
जहँ पिंड ब्रह्मंड न तारी, तुलसी जहँ सुरत हमारी ॥

(४)

ए आली आदि अंत अधिकारी, पिया प्यारी प्रीत दुलारी।
हम कीन्हा खेल पसारी, सब रचना रीत हमारी ॥
करता नहिं काल पसारी, हम अगम पुरुष की नारी।
ठुमरी सोई संत बिचारी, तुलसी नित नीच निहारी ॥

(५)

ए गुइयाँ पिया हम हम पिया एकी, कोइ फरक न जानैं नेकी।
कोइ बूझे संत बिबेकी, जोइ अगम निगम नहिं लेखी ॥

जिन अटल अटारी पेखी, पिय रूप न रेख अदेखी।
कोइ कंथ न पंथ न भेखी, तुलसी सब मारग छेकी॥

(६)

यह सानूँ साडे विच नाल न आँदा।
तैडी जटी दा जोर न जाआँदा॥ १॥
मैडे पत पिउ परचे पाआँदा, सब संतन की सुरत भाआँदा॥२॥
सानूँ गुर पूरा पार दिखाआँदा, मैडी आद अजर घर आआँदा॥३॥
तुलसी तत मत चित चाआँदा, मेरी सुरत नाम गुन गाआँदा॥४॥

(७)

ये मैडा इसक लगा तैडी नाली, वेखदा वंदी भूल बिहाली॥१॥
ये सानूँ साईं दे नैन निहाली, काटी दी मैडी जम जिया जाली॥२॥
तैडी लहर मेहर दी ख्याली, दीदा सतगुर मैडा नाली॥ ३॥
टुक प्रन पिया तुलसी पाली, मैडी सुरत अधर घर चाली॥ ४॥

(८)

तुम चो पिया वटको झाली, माझा केला काज सम्हाली॥ १॥
मेटी है जग ची भरम जाली, हम चा मन मठ ले झाली॥ २॥
म्हारी ये गुर गोष्टी चाली, ताचे डोड चे बनघू प्रतपाली॥३॥
तुलसी नाले एक वेताली, अप ले तत तुरत सम्हाली॥ ४॥

(९)

अमचे पिया कूर पकेली, तक नैन सुरत नित नेली॥ १॥
अगमन बरते चढ़ि गैली, घर अपलची सुरत केली॥ २॥
डोलेचे मारग सैली, सुरतिया चढ़ि बरते खेली॥ ३॥
तुलसी फ़ुरमट झक झेली, माझा घर करि सुत मेली॥ ४॥

(१०)

ये स्वामी माली म्हाने दरसन दीद, सावली ने म्हारो कारज कीद॥१
घना दीढे दिन घाड़े सीध, म्हारे चित चरनामृत लीध॥ २॥
मन म्हारो विप रस वस बीध, काटो दुख भव बंधन जीध॥३॥
तुलसी गुर मारग दीध, तेरे आद अमर रस पीध॥ ४॥

(११)

सो म्हारीं सुरत निरत अनुरागी , संतन मत मारग लागी ॥ १ ॥
सो आली अष्ट कँवल चढ़ि जागी, वे नौ दल सम्हाल सुभागी ॥२॥
तेरे लीधु अमर पद माँगी , दीधु पिया सुख सागर सागी ॥३॥
तुलसी तजि राग बैरागी , चढ़ि मिली जेरे पत से पागी ॥ ४ ॥

(१२)

म्हारो आठो काल करही , हकीयत गुर नाम उमरही ॥ १ ॥
माकी तकसी सुरत पिउ परही, प्यारे पट खोलि उदर रहो ॥२॥
वाली कठीहु जगत जिव तरही, गुर चीन्ह काल थाने घरही ॥३॥
तुलसी गुर चीन्ह उबरही , बिन काज न कारज सरही ॥ ४ ॥

(१३)

ये मियाँ आद अलफ है अल्ला, बूझे दुरवेस जो बिरला ॥ १ ॥
गाफिल मिल मुरसिद मिल्ला , कर होस पकड़ करि पल्ला ॥ २ ॥
देवे रब राह सुसिल्ला , पहुँचे खुद भिस्त अकिल्ला ॥ ३ ॥
तुलसी तलास तकल्ला , दुनिया दोजख नहिँ भल्ला ॥ ४ ॥

(१४)

जैनी सोई जेन बिचारी , नौकार जपे नित भारी ॥ १ ॥
अरहंत सब साध सम्हारी , अरिया उझानँग चारी ॥ २ ॥
लोय सब साध पुकारी , पाँचो ये नाम नौकारी ॥ ३ ॥
पद पाँच पैंतीसो लारी , स्रावग कुल खेल खुवारी ॥ ४ ॥
जाने नहिँ आद अनाड़ी , तुलसी बिन तत नहिँ पारी ॥ ५ ॥

(१५)

अरी बाम्हन वैराट बतावा , ता के परे भेद न पावा ॥ १ ॥
कहँ ब्रम्हा बेद बनावा , सब जग यह बिधि समझावा ॥ २ ॥
इन सास्तृ पुरान चलावा , सब जगत जीव भरमावा ॥ ३ ॥
भूले भागवत मुकत सुनावा , नर मरे पर भूत बनावा ॥ ४ ॥
तुलसी सब झूठ जनावा , तन छुटे चैारासी पावा ॥ ५ ॥

(१६)

अरी बाम्हन जग रीत बिगारी, सब जीव भरम बस डारी ॥ १ ॥
पाहन जल पूजि पुकारी , सब खान परे जिव चारी ॥ २ ॥

ठग लोभ प्रपंच पसारी, सब जगत बुड़ाया भारी ॥ ३ ॥
तुलसी तन पेट सम्हारी, बनि बैल वहे भव भारी ॥ ४ ॥

(१७)

जोगी जन पवन चढ़ावै, इड़ा पिंगला सुखमना आवै ॥ १ ॥
सुन सहसकँवलदल जावे, जहँ जोत निरंजन पावै ॥ २ ॥
मुदरा तत पाँच लखावै, अली आतम आदि समावै ॥ ३ ॥
तत मत जोगी गत गावै, तुलसी पुनि काल चबावै ॥ ४ ॥

(१८)

सुन संत गती अति भारी, आली जोग जुगत से न्यारी ॥ १ ॥
जहँ सब्द न सुन्न अकारी, सुन सुन्न महासुन पारी ॥ २ ॥
नहिं गुन निरगुन मत भारी, सत नाम पिया पद पारी ॥ ३ ॥
तुलसी निज नाम निहारी, जहँ आदि अनाम अपारी ॥ ४ ॥

(१९)

जहँ जोगी जैन न जावे, मत बेद कतेब न पावे ॥ १ ॥
आली ब्रम्हा बिसुन न आवे, सिव तारी तत्त न लावे ॥ २ ॥
वैराट न ठाठ समावे, मुहम्मद रब राह न पावे ॥ ३ ॥
तुलसी तीथंकर गावे, आदि नाथ ऋषब नहिँ जावे ॥ ४ ॥

(२०)

एरी पंथी कबीर कहावा, चौका करि जनम गँवावा ॥ १ ॥
साहिब कबीर बतावा, सोइ चौके का भेद न पावा ॥ २ ॥
पुरइन सुन सेत बतावा, उन करि धरती पर लावा ॥ ३ ॥
तुलसो सत पंथ न पावा, यह पंथी जात कहावा ॥ ४ ॥

(२१)

एरो ईसा अँगरेज कहावे, सब मैँ इक ब्रम्ह बतावे ॥ १ ॥
इनसाफ जो साफ सुनावे, जो गुनह करे सोइ पावे ॥ २ ॥
ये मियाँ एक अनीती भावे, जीव जिवह करै सोइ खावे ॥ ३ ॥
तुलसी तन बूझ न लावे, ये बेइनसाफ कहावे ॥ ४ ॥

(२२)

एरी वेदांत ब्रम्ह बतावा, आली आतम आदि कहावा ॥ १ ॥
मन जड़ इंद्रिन सँग चावा, ब्रम्ह परमहंस करि गावा ॥ २ ॥
कहँ सब हम हमहिँ समावा, तन रचे तत भेद न पावा ॥ ३ ॥

करनव सब साफ़ उड़ावा , ब्रम्ह आदि भेद नहिँ पावा ॥ ४ ॥
जड़ सँग जिव गाँठ गुनावा , तुलसी जड़ ब्रह्म बनावा ॥ ५ ॥

(२३)

नानक पिया नाल निहारे ॥ टेक ॥
कहुँ जोग भोग मन लाये , कहुँ तप करि करि तन जारे ॥ १ ॥
कहुँ बैराग राग अनुरागे , कहुँ सीस जटा उर धारे ॥ २ ॥
यह लौ लाय वाह गुरु पाये, हर दम लख पिउ प्यारे ॥ ३ ॥

(२४)

आलीरी इक बात कहूँ घट की ॥ टेक ॥
सुरत इक सहर समझ मन मारग, लखि लखि नैन निरख अटकी ॥१॥
चढ़ि करि महल सैल स्रुत सारँग, तल मत जोग झलक झटकी ॥२॥
भिन भिन तत्त ताल तट मारग, अरध उरध बिच स्रुत सटकी ॥३॥
परदे पार सार सत साईँ , निरगुन बेद बरन भटकी ॥ ४ ॥
सतगुर सैल सबद चित लागे , करकी कर हिये खटकी ॥ ५ ॥
तब से चेत भया भव फीका , दुख सुख छाडि समझ छटकी ॥६॥
चीन्हा संत चरन सतसंगा , तब कछु जान पड़ी पट की ॥ ७ ॥
सुकिरत ज्ञान दियो सतगुर ने , सूरत चाँप चली चट की ॥ ८ ॥
सिंध द्वार पै सार लै लागी , चढ़ि स्रुत लागि लगन नट की ॥ ९ ॥
कँवला फूल मूल मत मारग , रोकी न रोक रही हटकी ॥ १० ॥
नित नित समझ सबद स्रुत ठीका, फूटा जस अंड काच मटकी ॥११॥
सुरत मिलाप साफ पिउ पाये , मिलि गया सबद सुरत तटकी ॥१२॥
तुलसीदास पास पिया पाये , सतगुर टेर कही टटकी ॥ १३ ॥

(२५)

बिसरी अधर घर प्यारी रे ॥ टेक ॥
मैं चित चोर मोर मन मोटा , खोट खोट धरि धारी रे ॥ १ ॥
अंजन अलख पलक नहिँ दीन्हा , छाई अधम अँधियारी रे ॥ २॥
संगत साध आदि नहिँ चीन्हा , उरझी भेष भिखारी रे ॥ ३ ॥
तुलसी तीर गुरन लखवाई , जब देखी उजियारी रे ॥ ४ ॥

राग सोरठ

(१)

धरि नर देह जगत मैं कछु न धनी रे ॥ टेक ॥
आप अपनपौ को नहिं चीन्हा, लीन्हा मान मनी रे ॥ १ ॥
यह जड़ जीव नीव जुग जुग की, गहिरी ठान ठनी रे॥ २ ॥
धृग धन धाम सोन अरु चाँदी, बाँधी मोट घनी रे ॥ ३ ॥
जोड़ बटोर किया बहुतेरा, इक दिन फना फनी रे ॥ ४ ॥
ऐसा जनम पाय कर फूले, यह इनसाफ छनी रे ॥ ५ ॥
मन तन धन कोइ काम न आवे, चाम की धाम बनी रे ॥ ६ ॥
तुलसी तुच्छ तजो रँग काँचो, साँचो नाम धनी रे ॥ ७ ॥

(२)

तेरी जग जीवन बिरथा रे, काहे तैं जियो रे ॥ टेक ॥
परमारथ परपंचन खोयो, नेक न नाम लियो रे ॥ १ ॥
करम करूर दूर ले डारे, जग बिच जहर पियो रे ॥ २ ॥
नीक न फीक ठीक नहिं कीन्हा, दई को दोस दियो रे ॥ ३ ॥
सतसँग मैं मन नेक न दीन्हा, खोटे खोट कियो रे ॥ ४ ॥
मन की मौज चौज चित माहीं, प्रेम न छाड़ि छियो रे ॥ ५ ॥
सुनि सुनि सोग रोग रस बाढ़े, पायो न ठौर ठियो रे ॥ ६ ॥
सतगुर बाक आँख नहिं सूझे, तुलसी कुंद हियो रे ॥ ७ ॥

(३)

घर सुधि भूलि भँवर मैं आन पर्यो रे ॥ टेक ॥
गज सुभ असुभ के रँग मद मंदा, फंदा काल कर्यो रे ॥ १ ॥
आसा नदी बहे तट नाहीं, भारी भरम भर्यो रे ॥ २ ॥
दिन और रैन चैन नहिं पावे, तृसना माहिं मर्यो रे ॥ ३ ॥
लोभ अगिनि धरि दीन्ह पलीती, जीता जनम जर्यो रे ॥ ४ ॥
नर तन पाय परख नहिं कीन्हा, भव सिंध नाहिं तर्यो रे ॥५॥
तुलसी ताव दाव नहिं देखा, मन की चाह चर्यो रे ॥ ६ ॥

(४)

गुर बिन बाह बदन यह योँही गयो रे ॥ टेक ॥
भव सिंध कहर लहर जल धारा, बेबस बादि बह्यो रे ॥ १ ॥
भगति न कीन्ह साध नहिं सेवा, नर को जनम लियो रे ॥२॥
जोन जोन करमन सँग काया, कूकर काग भयो रे ॥ ३ ॥
माया ममता महिँ तन खोयो, आसा अंग सह्यो रे ॥ ४ ॥
जीवन मरन जनम जुग बीता, जम को डंड सह्यो रे ॥ ५ ॥
धरि धरि देह बिनसि तन तुलसी, कबहुँ न हाय कह्यो रे ॥ ६ ॥

(५)

अरी सखी सिंध तजे कहाँ आई ॥ टेक ॥
बन बैराट ठाट जब कीन्हा, पुरुष अंस आतम तन पाई ।
तजि अली आदि तत्त बस बासा, स्वासा सरन समाई ॥ १ ॥
जिन तन साज काज सब ठाटा, सब बिधि सुचि रुचि रुचिर बनाई ।
भइ भव काल जाल जग माहीं, वाकी सुधि बिसराई ॥ २ ॥
अब चित चेत हेत हिये मारग, लखि लखि मत सतगुर समझाई ।
बिन गुर घाट बाट नहिं पावे, फिर फिर भव भरमाई ॥ ३ ॥
तुलसी तज मन मान मनी को, आली लख आदि स्वामी सरनाई ।
यह आली सन्त पंथ सब गावैं, बिधि बिधि पंथ लखाई ॥ ४ ॥

(६)

सुन सखी सुरत सिंध बिसराई ॥ टेक ॥
पिरथम पुरुष बूझ परमातम, ता की धुन आतम उपजाई ।
वही आतम जड़ जीव जहाना, गो गुन गाँठ बँधाई ॥ १ ॥
पाँच तत्त तन अगिनि अकासा, पृथी पवन जल जगत कहाई ।
यह बिधि बास फाँस फस खाना, चक्र चौरासी पाई ॥ २ ॥
मन मग पग मारग मत माना, इच्छा रँग सँग तरँग तुलाई ।
छिन छिन लहर कहर करमने की, पल पल उठत उठाई ॥ ३ ॥
यह बिधि पार सार सब भूली, फूली फरक न फुर सत* पाई ।
फट फर प्यार यार नहिं चीन्हा, लीन्हा लगन लगाई ॥ ४ ॥

---

* एक लिपि में "फुर मत" है ।

वेद न भेद खेद सँग साथा, विधि वेदांत ब्रम्ह बतलाई।
आतम ज्ञान मान मन मोटा, यह सब झूठ बताई ॥ ५ ॥
सुध सरूप आतम कर गावैं, अद्वैत अज भरम भुलाई।
अस अस कहि कहि बंध बँधाना, सतगुर भेद न पाई ॥ ६ ॥
अब सुन समझ बूझ दरसाऊँ, सतगुर पूर सूर सरनाई।
उनसे राह रीत रस जाने, तुलसी तब नभ पाई ॥ ७ ॥

(७)

अरी नभ निरख नैन निरवारे ॥ टेक ॥
पार परम गत पुरुष लखावे, सत सूरत गत मनमत मारे।
कँवला केल खेल निस बासर, तब भव उतरे पारे ॥ १ ॥
लख सत सुरत ऐन अंदर में, मंदर महल सैल लै लारे।
कड़कड़ कड़क बीज झिन बदरा, साह दर समझ सिधारे ॥ २ ॥
जगमग जोत होत उजियारी, ज्यौं दीपक मंदर बिच बारे।
चढ़ि कर देख नेक हिये मारग, तत रँग पाँच निहारे ॥ ३ ॥
स्याह सपेद जरद जंगाली, सुरख समझ पाँचो विस्तारे।
ता मैं अधर अकास दिखाई, जा मध मध के द्वारे ॥ ४ ॥
मकर तार दृढ़ डोर लगावे, भीतर सुन धुन सबद विचारे।
यौं नित तोल बोल बिधि बानी, सूरत सुन सबद सम्हारे ॥ ५
आगे गवन भवन पद मारग, तत मत जोत न निरगुन पारे
जहँ नहि रंग न रूप गुसाईं, गो गत गुन न पसारे ॥ ६ ॥
अरी आली सरगुन समझ जान मन मारग,
अच्छर छर छिन छिन गुन धारे।
अच्छर ब्रम्ह करम करि देही, यह सब बिधि विस्तारे ॥ ७ ॥
निःअच्छर छर अच्छर पारा, ये गुर सँग संतन के लारे।
जिन सतगुर गम गैल लखाई, तिन तिन समझ सुधारे ॥ ८
तुलसी संत सुरत सब गावैं, सबद गुरू सिप सुरत पुकारे।
ये मत मीन चीन्ह जल ऊपर, उड़ि उड़ि उलटि निहारे ॥ ९

(८)

लखो री कोई कोयल सबद सम्हाल ॥ टेक ॥
अली एरी आज अम्ब पर बैठी, बोलत बचन रसाल।
काल कराल जाल जम डारी, मारी मरम बिहाल ॥ १ ॥
सूरत समझि चलो घर माहीं, साईं समुँद निहाल।
पल पल पलक पार पद पैरी, निरखो सरवर ताल ॥ २ ॥
करि असनान ध्यान धर धीरज, पिय पद परसें* हाल।
चाले चीन्ह चौज लखि लागे, भागे भरम भुआल ॥ ३ ॥
सतगुर सूर भूर समझावैं, गज मुकता मन माल।
सूरत पिउ पहिराऊँ प्यार से, प्रीत पुरातम पाल ॥ ४ ॥
पिय अपनाय जाय जोइ भाखे, पिउ पिउ प्रेम पियाल।
कागा कुमति सुमति मति सारी, तुलसी तजत मराल ॥ ५

(९)

अली री कोइ गगन घोर घहराई ॥ टेक ॥
चढ़िकर गगन दसो दिस देखो, धमधम धमक सुनाई।
अली री अधर घर सुरत लगावे, पावे निरत लखाई ॥ १ ॥
पार पुकार सबद धुन बाजे, घरर मगन सरसाई।
नौ पर नैन ऐन अंदर मैं, सूई मैं सुमेर समाई ॥ २ ॥
सागर छीर मीन मारग होय, द्वय दल कँवल कहाई ॥ ३ ॥
अगम अपार पार सुत चाले, हाल डोल थिरताई।
जोइ मठ मकर तार दृढ़ डोरी, पैरी पकरि दिखाई ॥ ४ ॥
धस करि धाय जाय तुलसी जो, सो सब भेद बताई।
पिय पद पीर परस सोइ सजनी, मगन प्रीत गुन गाई ॥ ५ ॥

(१०)

मन थाँ ने बात न मानी रे ॥ टेक ॥
हीनी बुद्धि बूझ मत नाहीं, बस्तु न जानी रे।
सत सतसंग बिमल बिध बानी, मिथ्या ठानी रे ॥ १ ॥
गुर मत बात सीख सत साखी, चित्त न आनी रे।
कीन्ह कुसंग प्रीत मन सानी, रहो लिपटानी रे ॥ २ ॥

---

* एक लिपि में "परचे" है।

यह जग जीव भूल भव माहीं, भरमत खानी रे।
तत बिधि साध संत मत छाड़े, ता से यह हानी रे ॥ ३ ॥
अब तजि भूल करो सतसंगा, कहत बखानी रे।
जैसे मराल चाल बिधि छानी, दूध और पानी रे ॥ ४ ॥
कागा कुमति छाड़ि छल खोटे, हंस हो प्रानी रे।
तुलसी बूझ मान मन मारे, उपजत ज्ञानी रे ॥ ५ ॥

(११)

भटक सँग राजा रानी हटक रही ॥ टेक ॥
देस बिदेस बसे मन तन मैं, बंधन लटक लई।

॥ दोहा ॥

राजा गो गुन रच रहा, दया न दिल मैं देस।
भेष भुलाने भूम की, ता से भयो बिदेस ॥
तज तेहि देस बसे पर भूमी, योँमी छटक दई ॥

॥ दोहा ॥

घर सुधि बुधि गम ना रही, कही न एको बात।
साध समझि सुधि ना लई, सही जो जम की लात ॥
बस खस बंध संत नहिं जानी, खानी खटक सही ॥

॥ दोहा ॥

कहन कही सो ना गही, लई जो टेकै टेक।
एक अलख लख लखन मैं, सो सुनि भयो अनेक ॥
लख लिख लखन अनेक कहाये, आये अटक भई ॥

॥ दोहा ॥

घर जा दिन से नीसरे, बिसरे ठाम ठिकान।
गाँव न जाने आपनो, बस कृत करम निकाम ॥
करमन काल भाल भव भूले, फूले फटक नहीं ॥

॥ दोहा ॥

गुर मारग की गैल को, सैल न समझ गँवार।
पार परस परदेस को, खेस कबीला लार ॥
पर परदेस देस दिस भूली, थूली थटक लई ॥

॥ दोहा ॥

रानी रमज सुनाय के, कहन कहर की रीत।
जीत गुनन गो गिर रहो, गहो जो सतगुर प्रीत ॥
रानी समझ सीख सत पति की, सतगुर सटक कही ॥

॥ दोहा ॥

मान मरम मन मूल को, मूल सुरत सरभाव।
नाव मिली अब चढ़न को, नर तन दुरलभ दाव ॥
तन दुरलभ मन मरम बिसारे, पारे पटक दई ॥

॥ दोहा ॥

आज अमर रस रीत कूँ, जीते चतुर सुजान।
मान मनी मद छाड़ि के, डारे डगर जहान ॥
मान मनी मन मत पहचाने, जाने झटक दई ॥

॥ दोहा ॥

मन सूरत गुर गवन की, भवन भेद दुरबीन।
चीन्ह चले चित चमन मँ, बन फुलवा लौलीन ॥
पहुँच चीन्ह चढ़ि चाल चमन की, भवना घर की कही ॥

॥ दोहा ॥

सुरत सूर पद गवन की, तुलसी तोल बखान।
जानि जमक चढ़ि जो गहे, साधे साध सुजान ॥

(१२)

एरी मोरी सुरत रँगीली रट लावरी ॥ टेक ॥
भूली फिरे पिया पट पौरी, बौरी उत अटकाव री ॥ १ ॥
अरी रे बिदेस देस दुनिया को, गो गुन भव भटकाव री ॥ २ ॥
सतगुर सोध बोध वहि मारग, नैन निरखि घट आव री ॥३॥
गगन गुलाब लाभ बन फूले, भँवर मँदर मठ छाव री ॥ ४ ॥
तुलसी मूल मनोरथ पूरन, सूर सुमन चटकाव री ॥ ५ ॥

(१३)

एरी पिया सुरत सहेली सुधि लाव री ॥ टेक ॥
कीन्हा पिंड प्रान पहिचानो, मानो हेलो बुधि बावरी ॥ १ ॥
आठ पहर लौ लगन लगावे, पावै ठिया खुद रावरी ॥ २ ॥

झट बट पार कढ़ो करमन से, जम से जुद्ध मचाव री ॥ ३ ॥
नर तन नवल भलो बनवे को, आज उदय तेरो दाव री ॥ ४ ॥
तुलसी तोल तजो जम जंगल, मंगल मन मुद गाव री ॥ ५ ॥

(१४)

गुंजत भँवर पोहप फुलवारी, एरी आली मधुर सुगंध करारी ॥टेक॥
नव पल्लव बन सुभग सुहावे, बिरछ बेल छबि न्यारी।
सोभा बाग बिमल मन माली, सींचत जल हरियाली ॥ १ ॥
करम कली बिरछा बहु फूले, परमल सुगंध अधिकारी।
प्रेम मगन मधुकर रस चाखे, पीवत चढ़त खुमारी ॥ २ ॥
मन माया तन बाग लगाया, करि काया बिस्तारी।
भूले भँवर पवर मत मारग, मूल मनोरथ सारी ॥ ३ ॥
अली रस रंग संग सब उरझे, लिपटे झारि बिकारी।
तुलसी तुच्छ तनक सुख कारन, घर घर फिरत भिखारी ॥ ४ ॥

(१५)

गरजत गगन गिरा धुन आनी, सुन सखि सबद निसानी ॥टेक॥
भूमी भोग भटक जब निरमल, मल धोवे जल छानी।
ऊजल उमँग उठे उर माहीं, जब काई अलगानी ॥ १ ॥
खैंच कमान तीर ले ठाढ़े, गाढ़े गोसा तानी।
अरस निसाने को लखि तोड़े, योँ फोड़े असमानी ॥ २ ॥
अलख पलक में खलक समाना, सो सब बरन बखानी।
लखि ब्रह्मंड अंड पर आँखी, खुल हग दृष्टि दिखानी ॥ ३ ॥
धुन धधकार सुन्न में सूरत, सबद भेद पहिचानी।
तुलसी वार पार पद पूरन, परख लखा जिन जानी ॥ ४ ॥

(१६)

कछू न सुहावे मोको पिया के बियोगी ॥ टेक ॥
बिरह की बेली हेली फैली चहुँ दिस कूँ, दरद दुखी जस रोगी ॥१॥
अस री हिलोर मोर मन आवे, तन तजि अब न जियेंगी ॥२॥
हार सिंगार सखि नीको न लागे, माहुर घोर पियेंगी ॥ ३ ॥
रैन न चैन दिवस दुख बीते, आवत नींद न सोऊँगी ॥ ४ ॥
तुलसी तलब मिटे सतगुर से, चित धर चरन छुवेंगी ॥ ५ ॥

(१७)

अरी सखि स्वासा सिमट बटोरी , सूरत बस करि राखी ॥टेक॥
अपना आद अमर तजि तन तिल , मन मिल कीन्ह कठोर ॥१॥
जुगन जुगन जग भव भरमावत , धावत बंधन ठौर ॥ २ ॥
चार लाख चौरासी धार मेँ , फिर फिर परत बहोर ॥ ३ ॥
मन का मूल सुरत से स्वासा , आसा अंग अघोर ॥ ४ ॥
तुलसी यह तन बाट बहुर नहिँ , फिर छूटत नहिँ छोर ॥ ५ ॥

बिहाग

(१)

हे मुसाफिर जागो , क्या सोवत बीती है रैन ॥ टेक ॥
जो सोये तिन सरबस खोये , जागे जोइ बड़ भाग रे ॥ १ ॥
सतगुर मूल मरम घर भूले , फूले फिरत अभाग रे ॥ २ ॥
माया मोह मान गसि गाढ़े , बढ़ी कुमति की लाग रे ॥ ३ ॥
नर तन सार समझ यहि औसर , अब सब बंधन त्याग रे ॥४॥
तुलसी तीर भीर भवसागर , हंस बसो तजि काग रे ॥ ५ ॥

(२)

काँची माटी दा तेरा कोट , मुखालिफ़ बास रे ॥ टेक ॥
भजन से बैर कहर उपजावत , आफत इल्लत पास रे ॥ १ ॥
बारू बदन बीत छिनभंगी , उलटी उलफत फाँस रे ॥ २ ॥
अब कर चेत अचेत अयाने , छिन छिन बीतत स्वास रे ॥३॥
पैजन बाँधि बचे कोई इन से , तुलसी सतगुर दास रे ॥ ४ ॥

(३)

तेरी इक दिन निकसे जान , कुफर कुफरान मेँ ॥ टेक ॥
काफिर जुलम जिबह जिव करते , बिसमिल हक्क ईमान ॥१॥
परख पैगम्बर राह सरे को , यह नहिँ कहत कुरान ॥ २ ॥
अल्ला हुकम महम्मद कीन्हा , दरदमंद फरमान ॥ ३ ॥
कर हलाल बेपीर कसाई , तुलसी तक तुरकान ॥ ४ ॥

(४)

मुसलम हक ईमान, हकीकत मैं वही ॥ टेक ॥
दिल दरवेस गरक गाफिल नहिं, बन्दे पाक जुबान ॥ १ ॥
हरदम फहम फरक काफिर से, दूर किया कुफरान ॥ २ ॥
आठ ख्वाब रूह मैं आसिक, बिलकुल झूठ जहान ॥ ३ ॥
वे महबूब मियाँ अपने की, तुलसी तरक बयान ॥ ४ ॥

(५)

तेरी काँची हवेली जड़ जाँच, किवाड़े काँच के ॥ टेक ॥
काठ किवाड़ हाड़ मिलि मिट्टी, निसपत काठे पाँच ॥ १ ॥
पाँच पचीस तीन मत माते, इन सँग गाढ़े गाछ ॥ २ ॥
करत किलोल मूल बिसराये, नर तन नाड़े नाच ॥ ३ ॥
तुलसी हंस होय सतगुर को, आवे न आड़े आँच ॥ ४ ॥

(६)

पढ़े कहा बाँच रे, तेरे अंदर उपजी न साँच ॥ टेक ॥
पढ़ि गुन सोधि भागवत गीता, फिर जिजमाने जाँच रे ॥१॥
नेमी नेम प्रेम रुपयन सोँ, ज्योँ कसबिन को नाच रे ॥ २ ॥
पूरन होत कथा जब ऐसे, सब जुड़ बैठे पाँच रे ॥ ३ ॥
करत बिचार डंड राजन ज्योँ, लूटि जगत मैं गाछ रे ॥ ४ ॥
मोट गरीब गरज लेने से, सुधरे दरसन आँच रे ॥ ५ ॥
पंडित मुकत करैं योँ तुलसी, सो जग झूठे साँच रे ॥ ६ ॥

(७)

कूर सँग त्यागो रे त्यागो, अरे गुन गोतम रज सत प्रीत ॥टेक॥
यह मन मरद गरद जिमि जावे, पावे करम घर नूर।
सखियाँ पचीस पकर परपँची, सच्ची समझ न मूर ॥ १ ॥
इन भव खानि जानि जग कीन्हा, दीन्ह दृष्टि पर धूर।
लखन बुझाय सबद समझावे, पावत बिरले सूर ॥ २ ॥
यह मन मरक तरक जिन कीन्हा, फरक ज्ञान कर चूर।
हूर हवाल जाल से न्यारी, प्यारी पदम जहूर ॥ ३ ॥
बिन सतगुर गम भेद न पावे, भावे भरम अपूर।
गुर पद गवन सुरत घर अपने, तुलसी ताप तन तूर ॥ ४ ॥

(८)

कहन कोइ मानो रे मानो, अरे बिष छाँड़ि कुफर सुख चैन ॥टेक॥
यह भव सूल धूल की मोटी, खोटी खुल खुल बैन।
कहन करार धार कर मन की, पल पल बूड़त पैन ॥ १ ॥
धन और माल काल जग जाला, पाल पकर बल देन।
जम जग देव सेव कर पूजा, लाग आप सिर लेन ॥ २ ॥
बेद पुरान खान खुल कीता, लख चौरासी सैन।
चर और अचर जीव सब मारे, डारे डगर निरखि नैन ॥ ३ ॥
जल पृथवी तत और अकासा, लागे पवन तत रहन।
दुख सुख पाप पुन्न पछतावे, बूझ अगम नहिँ ऐन ॥ ४ ॥
तुलसी भँवर जाल भवसागर, ज्यौं जल ऊपर फेन।
मारुत मगर मीन मुख उरझी, सुरझे गुरुमत ऐन ॥ ५ ॥

(९)

सँग कोई खोजो रे खोजो, भवजल लहर उतंग ॥ टेक ॥
सिव सनकादि आदि मुनि नारद, सारद सेस कुरंग।
ब्यास दत्त सुखदेव दिवाने, पावत फिर फिर अंग ॥ १ ॥
स्रिंगी रिख पारासर मारे, कीन्ह काम ने तंग।
रिषी मुनी सब क्रोध कुबुद्धी, भयो तपस्या भंग ॥ २ ॥
ब्रम्हा बिस्नु दसोँ औतारा, खुल खुल नच्यो अपंग।
और जगत जिव कहँ लग बरनूँ, आसा रंग तरंग ॥ ३ ॥
तुलसी ताव दाव नर देही, सुरत गगन चढ़ गंग।
गुंजत भँवर फूल फुलवारी, कँवल अधर लख भृंग ॥ ४ ॥

(१०)

आदि घर जानो रे जानो, सुरत सिखर पर साध ॥ टेक ॥
लख घर अधर द्वार की बातेँ, सभी लख ऐनक आद।
मानस भीर धीर धर खिरकी, मूल कँवल कस बाद ॥ १ ॥
खेलन पहले पोहप से निकसो, सोचित चीन समाध।
हान लाभ कछु बूझ न बूझी, सूझ निरख नित नाद ॥ २ ॥
अब कर जोरि डोर पद पहले, अजर आद और बाद।
खान पान सुख चौज लौज मेँ, कीन्ह सकल बरबाद ॥ ३ ॥

तुलसी सतगुर सरन सम्हारी , न्यारी भरम उपाध ।
सार समझ सत द्वार सिधारी , प्यारी पुरुष अनाद ॥ ४ ॥

(११)

आली री अगम लखा अबिनासी ॥ टेक ॥
खोजत अगम निगम पचि हारे , प्यारी पिया पाये पासी ॥१॥
बंक नाल होय सुखमन धाई , स्वास सिमट भई दासी ॥ २ ॥
जोग जुगति गुर गत बतलाई , काटी री भवजल फाँसी ॥ ३ ॥
माया मोह भरम सब टूटा , छुटी जगत की आसी ॥ ४ ॥
निज घर घाट बाट लखि पाई , सो जग रहत उदासी ॥ ५ ॥
तुलसी तार पार परमारथ , स्वारथ सँग भई नासी ॥ ६ ॥

(१२)

सखी री वा घर के हम वासी , जहँ सके न जाय अबिनासी ।टेक॥
अमर लोक सुख सहर सुहेला , रबि ससि दीपक चासी ॥ १ ॥
जोग न ज्ञान ध्यान नहि पूजा , जल थल अगिनि न स्वासी ॥२॥
पाँच तत्त बिन बदन बिहूना , रूप न रेख निवासी ॥ ३ ॥
काल कराल जाल नहिं डारे , भवजल नहिं जम फाँसी ॥ ४ ॥
तुलसी तोल अबोल यकीना , चीन्हा सतगुर दासी ॥ ५ ॥

बिहाग हंसावली

(१)

गवन किये तजि काया रे हंसा ॥ टेक ॥
मात पिता परिवार कुटुंब सब , छोड़ि चले धन माया ।
रंगमहल सुख सेज बिछौना , रचि रचि भवन बनाया ॥ १ ॥
प्यारे प्रीत मीत हितकारी , कोई काम न आया ।
हंसा आप अकेले चाले , जंगल वास बसाया ॥ २ ॥
पुत्र पंच सब जाति जुड़ी है, भूमी काठ बिछाया ।
चिता बनाय रची धरि काया, जल बल खाक मिलाया ॥ ३ ॥
प्रान पती जहँ डेरा कीन्हा , जो जस करम कमाया ।
हंसा हंस मिले सरवर में , कागा कुमति समाया ॥ ४ ॥

तुलसी मानसरोवर सुकता, जुग जुग हंसन पाया।
कागा कुमति जीव करमन से, फिर भव जनम धराया॥ ५॥

(२)

प्रान पवन इक संगा रे हंसा॥ टेक॥
पाँच तत्त तन साज बनो है, पिरथी जल पवन उतंगा।
अगिनि अकास भास भयो भीतर, रचि कीन्हा अस अंगा॥१॥
जब लग पवन बहे काया मेँ, तब लग चेतन चंगा।
निकसी पवन भवन भयो सूना, उड़त भँवर तन भंगा॥ २॥
तन करि नास भास चलि जैहै, जब कोइ साथ न संगा।
जम के दूत पूत ले जावँ, नहिँ कोइ आस असंगा॥ ३॥
यह माया त्रिभुवन पटरानी, भच्छत जीव पतंगा।
तुलसी पवर पार को रोके, मन मत मौज तरंगा॥ ४॥

(३)

इक दिन चल जैहो रे हंसा॥ टेक॥
यह काया बिच केल करत है, सो तन खाक मिलाया।
खीर खाँड सुख भोग बिलासा, यह सुख सोक समैहो॥ १॥
कैाड़ी कैाड़ी माया जोड़ी, जोड़ा लाख करोड़ी।
चलत बार कछु संग न लीन्हा, हाथ झाड़ि पछतैहो॥ २॥
जो कुछ पाप पुन्न करनी के, फल फीके करवैहो।
धरमराय की रीत कठिन है, लेखा देत भुलैहो॥ ३॥
तुलसी तुच्छ तजो रँग काँचो, आवा गवन बसैहो।
जम जुलमी जूती झटकारे, जनम जनम दुख पैहो॥ ४॥

परभाती

(१)

रोय खोइ रैन सारी, प्यारी परभातियाँ॥ टेक॥
सुरत सुहाग चावे, नहिँ सेज साथियाँ।
हिये मेँ हिलोर आवे, कहूँ केहि बातियाँ॥ १॥

आली री अकेली हेली, और कारी रातियाँ।
नहीं तेल महल सूना, बिना दिया बातियाँ॥ २॥
कोई री अधार नाहीं, धड़कत छातियाँ।
बिरह की लहर मैंनू, करूँ अपघातियाँ॥ ३॥
तन मैं तरंग आवे, रहूँ केहि भाँतियाँ।
सहूँ री बिरोग पिया, होते मर जातियाँ॥ ४॥
डगर नगर घर, खबर न आतियाँ।
बिना जाने कहो, कहाँ लिखूँ पातियाँ॥ ५॥
सास ननद दुख, नित उतपातियाँ।
ठाम ठाम ठोकरन, मारैं सब लातियाँ॥ ६॥
प्यारे बिना प्यारे नहीं, कोई सँग साथियाँ।
धृग दोऊ दीदा बिन, जग तन जातियाँ॥ ७॥
तुलसी सखी सोच माहीं, साईं सुरत चातियाँ।
गुरू के लखाये बिन, परत न हाथियाँ॥ ८॥

(२)

गुर गवन री भवनियाँ मैं कैसे कैसे जाऊँ॥ टेक॥
चाँद नाहीं सूर नाहीं, नाहीं कोई दुनियाँ।
पाँच तत्त अगिन नाहिं, गगन नाहिं पैनियाँ॥ १॥
ब्रम्हा नाहिं बिसुन नाहीं, देव रिषी मुनियाँ।
निरगुन सरगुन मूल नाहीं, का की देउँ लैानियाँ॥ २॥
तीन लोक सोक माहिं, काल की चबनियाँ।
कोइ संत सूर मूर माहिं, अधर के अमनियाँ॥ ३॥
तुलसी तलास पास, करत है करनियाँ।
गगन गैल फोड़ जात, तीर ले कमनियाँ॥ ४॥

(३)

सतगुर बिन ज्ञान, गई खान मैं जहाना॥ टेक॥
तीरथ और बरत न्हात, फिरत है जमाना।
कच्छ मच्छ जल जनम, आठ पहर का अन्हाना॥ १॥

सास्तर नर सार , सो ब्योहार हू न जाना ।
आतम तम रूप भूप , भवन मैँ समाना ॥ २ ॥
ब्रम्हा बैराट नाभ , कँवल है पुराना ।
सोई बैराट मनुष , देह को बखाना ॥ ३ ॥
अगिन और अकास पवन , बास मैँ बँधाना ।
जल थल तत पाँच , तीन गुनन मैँ रहाना ॥ ४ ॥
उत्पत बरबाद की , उपाध कूँ न जाना ।
खोजे बिना साध , आदि अंत को भुलाना ॥ ५ ॥
नरहर वेदांत ब्रम्ह , देत है लखाना ।
तुलसी तत मूल छाड़ि , पूजते पषाना ॥ ६ ॥

श्लोक

खिल कृत कृत लोभं , भोग भ्रमायं मायं ।
मधुकर कृत करमं कालकं , सृष्टि बैराट बिस्वं ॥
बेदऊ बँधायं कायं , देहा मनुष्या दुरलभं ।
तीरथं बरत दानं , जाना दूढ़ायं ज्ञानं ॥
करमं फल फूलं भोगियं , पुनि जन्म मरनं ।
माता मृत पायं, धायं जमउ मुख खायकं ॥
बीतं बिनस देहं, ज्योँ मन भवरालं ।
नीरं पीरं पित पायं खानकं, चेतं दृग देखं ॥
लेखं जिवा जिव जायं, आयं भरम भूमी भायकं ।
तुलसी तत तोलं बोलं बिचारवानं, जाना सुत साधकं ॥

यमन ख्याल

(१)

मान मरद मिलि जाय , गरद कहुँ देख दरद है ॥ टेक ॥
मान मनी ने घनी मत फेरी , काल लिखाई करम फरद है ॥१॥
देह धरी पर नेह न जाना, संत सुमन बिन सुरत सरद है ॥२॥
तुलसिदास नर घर पहिचानो, गगन चढ़े जहँ उरध अरध है॥ ३ ॥

(२)

पोढ़ पुखत की जान जुगत, कही मान मुकत है ॥ टेक ॥
तप जप जोग करे बहुतेरे, कोट जतन नहिं पावे सुगत है ॥१॥
नाम बिना नर पचि पचि हारे, सतसँग मेँ मन मगन रुचत है ॥२॥
तुलसिदास तत मूल गुरन से, बिन पाये भव खान भुगत है ॥३॥

(३)

तू तेरे घट मेँ पहिचाने ॥ टेक ॥

फटक सिला पर प्रेम परम सुख, मगन मीन मंदर मठ ध्याने ॥१॥
तकत चकोर चंद्र चित चमकत, दमकत दीप दृगन अस्थाने ॥२॥
सुरत सुधा रस पियत अधर पर, अचवत आठ पहर पट प्राने ॥३॥
समुँद सिखर पर कंज बिराजत, अंज अम्बर धुन घघकत काने ॥४॥
अनहद नाद गगनगढ़ गरजत, उठत अधर मेँ अपूरब ताने ॥५॥
सुंदर सुब्र सुमन बन पावन, मन मराल मंजे असनाने ॥६॥
मुकता चोँच चुगे गत सूरत, सो तुलसी सरवर तट जाने ॥७॥

(४)

मन गुन मेँ गोबिंद गोपाले ॥ टेक ॥
बिंद बन बास बनो बिंदावन, कुंज बदन जो सदा मत चाले ॥१॥
गो गोपियन सँग तन बन डोलत, इंद्रिन भोग भरमत बेहाले ॥२॥
गो बानी गिरवर धारन कर, उठत अवाज गगन तन ताले ॥३॥
कर कृत करम मित्र भये ऊधो, सूधो कठिन कुलाहल काले ॥४॥
तप करने गये बद्री आस्रम को, मुए मुकत धोँ रहे जम जाले ॥५॥
पंडो पाँच तत्त अरजुन मन, कैरो हतन जुध रचो खियाले ॥६॥
तुलसी तोल कहे करनी को, कृस्न कुबुधि दे हिवारे गाले ॥७॥

धनासरी ख्याल

(१)

एरी आली संत चरन सुख बास ॥ टेक ॥
अंत सखी सुख नेक न पैहो, सहिहो री जम की त्रास ॥ १ ॥
भाई बंद कुटँब सुत नारी, इन सँग रहो री उदास ॥ २ ॥

यह सब समझ बूझ भवसागर , लख चौरासी फाँस ॥ ३ ॥
जुग जुग जनम धरे तन तुलसी, आवागवन निवास ॥ ४ ॥

(२)

अरी आली अपन में देखो आप ॥ टेक ॥
तैं जपने मैं सखी जनम बिसेखा, लेखा सुपन बिलाप ॥ १ ॥
तप तपना नहिँ जोग समाधा , साधो री सूरत साफ ॥ २ ॥
दे दुरबीन चीन्ह दरबारा , धारा गंग मिलाप ॥ ३ ॥
गगन गुहा तुलसी आला ऐजे , खैंचे धनुवाँ चाँप ॥ ४ ॥

हमीर ख्याल

(१)

अरी ए परस बिन प्रिय के , बहु दिन बीते ॥ टेक ॥
जुगन जुगन जग जनम गँवाई , साईं समझ न सुरत चलाई ।
सुख सम्पत धन धाम भुलाने , अरस दरस रहे रीते ॥ १ ॥
कुल परिवार कुटँब बस बाँधी , बंधन बस तन मन अस आँधी ।
चेतन चेन हेत नहिँ पाई , तुलसी तरस जड़ जीते ॥ २ ॥

(२)

गहो रे गुर सरन मगन मन मीता ॥ टेक ॥
पिया पद सुरत निरत सँग जागो, त्यागो चुगल कुटिल जड़ प्रीता ।
परनपाल प्रभु दीन-दयाला , गगन चढ़े जोइ जीता ॥ १ ॥
भजि भ्रमजाल काल की बाजी , पाजी जनम जगत बिच बीता ।
सत मत संत अंत नहिँ पैहो , लखन लगन तुलसी कीता ॥२॥

कानरा ख्याल

(१)

नाम लो री नाम लो री , ऐसी काहे सुरत सुधि भूली री ॥टेक॥
बाद बिबाद तजो बहु बायक , नाहक दुख सहो सूली री ॥१॥
काल कराल भुलावत करमन , भ्रम तजि भज पद मूली री ॥२॥

बीतत जनम नाम बिन लानत , चालत मेट अदूली री ॥ ३ ॥
स्वास स्वास जावे तन तुलसी , क्योँ भव सिंध सँग फूली री ॥४॥

(२)

नाम वोही नाम वोही, कोइ बूझे भेद भेदी जिन जाना री ॥टेक॥
राम न सके नाम गुन गाई , संतन को दरसाना री ॥ १ ॥
ब्रम्ह राम से नाम निनारा , रामायन बाखाना री ॥ २ ॥
चौदह भवन काल केरी बंधन , पद चौथे परमाना री ॥ ३ ॥
कोइ सज्जन सतगुर से पावे , हिये दृग दृष्टि दिखाना री ॥४॥
सूरत सिखर चढ़ी दस द्वारे , पारे पद पहिचाना री ॥ ५ ॥
तुलसी गगन गुरू धुर धामी , सूरज किरन समाना री ॥ ६ ॥

कहरवा

(१)

प्यारी पिया नाल नगरवा ॥ टेक ॥
रवि अति अस्त रैन अँधियारी , कस कस जाहुँ डगरवा ॥ १ ॥
आवत जात राह नहिँ सूझो , बूझो न बाट सहरवा ॥ २ ॥
बिजली चमक चमक जल बरखा, ठग बटपार पहरवा ॥ ३ ॥
पौरी स्याम पार परे खिरकी , जाने न देत लँगरवा ॥ ४ ॥
मधु मत मोर तोर मतवाला , धक्का देत धिंगरवा ॥ ५ ॥
लै की लहर कहर गोहरावत , जग जैसे लगत जहरवा ॥ ६ ॥
देखा भेष जोई भव मारग , झूठ जगत सिख गुरवा ॥ ७ ॥
खोजत खोज रोज दिन राती , पाखँड फैल पसरवा ॥ ८ ॥
सुरत नित समझ सोच निस वासर , मारग साथ सुसरवा ॥ ९ ॥
सूरत सहर लहर पिया लागी , रहो नहिँ जात नैहरवा ॥१०॥
यहि औसर कोइ सतगुर भेटैं , पाऊँ सुरत घर गुरवा ॥ ११ ॥
तुलसी तलब तड़प हिये माहीं , खोजत प्रेम पियरवा ॥ १२ ॥

(२)

कोई चुरियाँ लेरी गँवरियाँ ॥ टेक ॥
चुरियाँ मन मनिहार पुकारे , पार अधर घर गढ़ियाँ ॥ १ ॥
छल्ला गढ़ सुन धाम सुनरियाँ , पहनो अगम अँगुरियाँ ॥ २ ॥

फूल फूल माल दइ मलियाँ , पहनो प्रेम पियरियाँ ॥ ३ ॥
सालू सुरत सजी सिंगारा , सत मत घेर घघरियाँ ॥ ४ ॥
अँगिया अंग अंग से न्यारी , गो गुन गन बस करियाँ ॥ ५ ॥
तुलसी तेज तरस से निकली , सौदा सतगुर करियाँ ॥ ६ ॥

परबंद

(१)

सुधारँ गुर स्वामी सुरत बंदं ॥ टेक ॥
मैं अनाथ बस बंद गवन गुन , बिष घर सागर अबूझ अंधं ।
गुर सुनिये परम सुख दायक, सम अरूप सतगुर धुर ध्यानी बानी ॥
कर अघ हानी अस जानी , नहिं मानी मत मंदं घोर फंदं ॥१॥
तक सनाथ सतसंग सुमन मन , कहँ गुर आगर नेह निखंदं ।
सिष तजिये भरम बहु बायक ,
लख अलोक अंदर उर धामी स्वामी अज अंतरजामी ।
सो अनामी निज नामी चीन्ह चंदं , तुलसी करम कंदं ॥ २ ॥

(२)

उबारँ अंतरजामी चरन सरनं ॥ टेक ॥
अज अतंत अबरन सरवन सुन , सुख दयाल दुख अघोर हरनं ॥
लघु लखिये मम बुधि बायक , तुम अनादि पद पुर उर बासी पासी ।
प्रन अबिनासी अस भासी, भव निरासी ब्रम्ह बरनं तत तरनं॥१॥
अत अनंत गति गोप गगन हद , मद मिलाप जद जनम न मरनं ।
खुद करिये मेरी सुद्ध सहायक,सुरत सरोज सम सुचरुचियारीण्यारी ।
दृगन दुलारी नित न्यारी नौ निनारी,निरत करन तुलसी संत परनं।२

लटका

(१)

आलम अजब जमाना , मजहब महबूब न जाना ॥ टेक ॥
हर दम जिगर जनून जुबाँ पै , क्या कहूँ गजब गुमाना ॥ १ ॥
दिल गरूर दोजख दुनिया यह , कायम न जब्र रकाना ॥ २ ॥

सब तरीक सरियत साहिब की , कर हजो हज्ज दिवाना ॥ ३ ॥
तुलसी पाक अवाज न माने , कहता रजब दिवाना ॥ ४ ॥

(२)

गगन मेँ लगन लगावे , मगन महबूबहिँ पावे ॥ टेक ॥
चौकस चीन्ह चलो मारग को , अंग अघ अगिन जुड़ावे ॥ १ ॥
सतसँग रमज पकड़ि मन पैाड़ी , डोरी डग न बचावे ॥ २ ॥
तीनौँ लोक जरत सब दुनिया , को दिल दगन बुझावे ॥ ३ ॥
करि उपकार कहैँ सब सज्जन , मन मेँ जग न बसावे ॥ ४ ॥
परमारथ मन मूल न राजी , पाजी पग न चलावे ॥ ५ ॥
दुरलभ जगत जनम नर देही , येही के सँग न सुझावे ॥ ६ ॥
सीतल करि तजि तरक तमासा , आसा रँग न रँगावे ॥ ७ ॥
भूत छूत मन सँग सब के री , घेरी भगन भुलावे ॥ ८ ॥
सतगुर सूरत बाँधि जकड़ि कर , नेक चुगन कहुँ जावे ॥ ९ ॥
तुलसीदास खोलि कर परदे , घट मेँ नगन नचावे ॥ १० ॥

(३)

खिलकत खोज लगावे , खलक सब मिलखत जावे ॥ टेक ॥
स्याह सुपेद सुरख अलगा रे , जब लिलकत चढ़ि चावे ॥ १ ॥
मुरसिद महरम झलक जोत की , झिलिमिलि झलकत पावे ॥२॥
जब मारग मध मूल मुकर के , भाली भलकत भावे ॥ ३ ॥
तुलसी तिल तक मरम मजहब जब, गिरजा गिलकत आवे ॥ ४ ॥

(४)

जो गिर गगन समानी, गवन गिरजा भई रानी ॥ टेक ॥
सुरत सब्द गिर बानी चढ़ि के , कढ़ कर कँवल बखानी ॥ १ ॥
मारग मुकर महल मेँ पैठी , बैठी अधर अमानी ॥ २ ॥
भवन भूमि भीतर कह भाखे , बोले अमृत बानी ॥ ३ ॥
तुलसी सूरत समुँद सिखर पर, पहुँची परखि निसानी ॥ ४ ॥

(५)

मैँ सतगुर की दासी, अमरपुर के री निवासी ॥ टेक ॥
मोरे पिया ने मोहिँ पहर पठाई , बहुत दिवस रही पासी ॥ १ ॥
अब मोहिँ नैहर नीक न लागे , निस दिन रहूँ री उदासी ॥२॥

मात पिता भैया भौजाई, परी री प्रेम की फाँसी ॥ ३ ॥
माया मोह जाल बिच बाँधी, बसी पास बुध नासी ॥ ४ ॥
अब चित चैन मोर नहिं पावे, बसूँ जाय पिया पासी ॥ ५ ॥
कहार भेज कहि डोलिया पठावो, आऊँ दीपक चढ़ि चासी ॥६॥
तुलसीदास पिया बिन प्यारी, व्याकुल बिरह अबिनासी ॥७॥

(६)

व्याकुल बिरह दिवानी, झड़े नित नैनन पानी ॥ टेक ॥
हर दम पीर पिया की खटके, सुधि बुधि बदन हिरानी ॥ १ ॥
होस हवास नहीं कुछ तन में, बेदम जीव भुलानी ॥ २ ॥
बहु तरंग चित चेतन नाहीं, मन मुरदे की बानी ॥ ३ ॥
नाड़ी बैद बिथा नहिं जाने, क्यों औषद दे आनी ॥ ४ ॥
हिये में दाग जिगर के अंदर, क्या कहि दरद बखानी ॥ ५ ॥
सतगुर बैद बिथा पहचानैं, बूटी है उनकी जानी ॥ ६ ॥
तुलसी यह रोग रोगिया बूझै, जिन को पीर पिरानी ॥ ७ ॥

(७)

प्रीतम पीर पिरानी, दरद कोइ बिरले जानी ॥ टेक ॥
डसत भुवंग चढ़त सननननन, जहर लहर लहरानी ॥ १ ॥
घनन घनन घन्नाटी आवे, भावे अन्न न पानी ॥ २ ॥
भँवर चक्र की उठत घुमेरैं, फिरैं दसो दिस आनी ॥ ३ ॥
अंदर हाल बिहाल हलावत, दुरगम प्रीत निमानी ॥ ४ ॥
आसिक इसक इसक आसिक से, करना मौत निसानी ॥ ५ ॥
मुरदा ह्वै करि खाक मिली अब, जब पट अमर लिखानी ॥ ६ ॥
पिया को रोग सोग तन मन मैं, सतगुर सुधि अलगानी ॥ ७ ॥
तुलसी यह मारग मुस्किल का, धड़ बिन सीस बिकानी ॥ ८ ॥

घटवारी

(१)

घटवारी सुंदर मतवारी ॥ टेक ॥
उमँग अधर घट मठ पिउ प्यारी, चाल चमक चट चारी ॥ १ ॥
मन और मान गिरे गुन बानी, आये हाल हटक झट झारी ॥२॥

गुर के गवन भवन पद माहीँ , धाई धमक पट पारी ॥ ३ ॥
गगन मगन तुलसी तन तोला , बोल विदित लख लारी ॥ ४ ॥

(२)

अस यारी अधर घर प्यारी हो ॥ टेक ॥
प्रीत पलँग लखि लाग लगन पैकी , मगन मीन जल लारी ॥१॥
जस पय प्रीत उफन अगिनी पै , विन जल की रहै क्यारी ॥२॥
जैसे सोन सोहागा गारे , डारत संग गरारी ॥ ३ ॥
तुलसी ताजुब रीत प्रीत की , हित कर हेत करारी ॥ ४ ॥

(३)

गंग गगन की लगन मैँ, मगन मतवारो ॥ टेक ॥
बेली बेल फैल बन फूली , देली डगर पग डारो ॥ १ ॥
अलख अली री पलक बिच हेरो , फेर सुरत लख प्यारो ॥ २ ॥
पृथी जल पवन गगन और अगनी, सगुन लार तत सारो ॥३॥
तुलसी तार यार नित परखो , नैन निरख नित न्यारो ॥ ४ ॥

(४)

अंड नगर की डगर मैँ , मंदिर एक नियारो ॥ टेक ॥
गंग जमुन बिच बहत सरसुती , सुरत समझ लख प्यारो ॥ १ ॥
लख और अलख पलक नहिँ कोई, सोई पिया घर वारो ॥ २ ॥
अगम निगम सुत नेत पुकारा , पकड़ समझि सोइ धारो ॥ ३ ॥
तुलसी आद अनाद अगम की, मगन मूल पद सारो ॥ ४ ॥

हिँडोला

(१)

हिँडोला झूलैँ सुत सँग संत ॥ टेक ॥
गरजत गगन मगन मन मारग ।
गवन पवन सननन सननन सत पंथ ॥ १ ॥
डोरी डगर नगर नित नैनन ।
भान तान तननन तननन तत तंत ॥ २ ॥

जगमग जोत होत उजियारी।
भँवर भवन भननन भननन अली अंत ॥ ३ ॥
तुलसी बैन सैन सतगुर की।
गगन घोर घननन घननन करत कंथ ॥ ४ ॥

(२)

हिँडोला झूले मूल पद पार ॥ टेक ॥
चंद न सूर नूर नहिँ तारे।
सबद घोर घररर घररर सत सार ॥ १ ॥
धरती न गगन पवन नहिँ पानी।
सैल सुरत सररर सररर चढ़ि चार ॥ २ ॥
कार अकार जार नहिँ जोती।
पदम झार झररर झररर लै लार ॥ ३ ॥
तुलसी तोल बोल बिधि बेनी।
बहत नीर घररर घररर जल धार ॥ ४ ॥

(३)

अडोला डोलत स्यामा धाम ॥ टेक ॥
मगन मन गगन घोर, घननन घननन घननन ॥ १ ॥
गो गुन गठन कठिन वोही कीन्हा।
मदन मीन मननन मननन मननन ॥ २ ॥
भय भव पोहप प्रीत मधुकर ज्योँ।
गुंज उड़त भननन भननन भननन ॥ ३ ॥
अस बिष बेल फैल फस बीधे।
फिरत फूल बननन बननन बननन ॥ ४ ॥
गुर घर गैल गवन सूरत लखि।
तरँग तान तननन तननन तननन ॥ ५ ॥
तुलसी तोल बोल अनहद की।
होत सोर झननन झननन झननन ॥ ६ ॥

(४)

अबोला बोलत घोरा घोर।
अधर घर उठत सबद घररर घररर घररर ॥ टेक ॥

सत सत सुन धुन धार मगन है।
गगन घोर घरrr घरrr घरrr ॥ १ ॥
माया भँवर भेद मिट जावे।
करम खेद भररर भररर भररर ॥ २ ॥
सूरत कड़कड़ चढ़त चटक से।
फटत गगन चररर चररर चररर ॥ ३ ॥
काग भसुंड नीलगिर मारग।
उड़त सुरत फररर फररर फररर ॥ ४ ॥
तुलसी परम पार परयागा।
चलत नीर सररर सररर सररर ॥५॥

हिँडोला परज

(१)

हिँडोला सोर सुरत भई सार ॥ टेक ॥
आदि अनादि अगम गढ़ घाटी, बाट बिपट गइ पार ॥ १ ॥
घट पट खोल बोल बिधि बानी, सबद निसानी लै लार ॥ २ ॥
सिंध अगाध साध सुत न्यारी, निरखि परखि दृग द्वार ॥ ३ ॥
तुलसीदास पास पिया पाये, संत चरन बलिहार ॥ ४ ॥

(२)

हिँडोला हाल हिये पिय हेर ॥ टेक ॥
सतगुर चीन्ह दीन्ह दिल मारग, ज्ञान खड़ग जिये फेर ॥ १ ॥
यह तन तोर मोर मन माया, कुबुधि काल जग जेर ॥ २ ॥
यह दिन चार लार तन संगी, पंथ अंत जम घेर ॥ ३ ॥
तुलसीदास संत सत कारज, होउँ चरन चित चेर ॥ ४ ॥

परज

(१)

सहेली आली अँखियाँ लख लाल ॥ टेक ॥
सतगुर नैन चैन चित मारग, सुरत निरत नित भाल ॥ १ ॥

चेतन चेत बीत यहि औसर , तजो भूल भ्रम जाल ॥ २ ॥
यह जग जीव पीव नहिं पावे , धृग दारुन धृग काल ॥ ३ ॥
सब चर अचर चराचर खाये , कठिन कुमति भई साल ॥ ४ ॥
तुलसी चीन्ह दीन दिल पावे , संग सो सुमत दयाल ॥ ५ ॥

(२)

सहेली आज करो सतसंग ॥ टेक ॥
तन सँग साथ हाथ कछु नाहीं , सतगुर उरध उतंग ॥ १ ॥
देहुँ दीन जानि सत मारग , सुरत लार चढ़ि चंग ॥ २ ॥
डोरी डगर नगर पिय पावे , जस लख परत पतंग ॥ ३ ॥
ज्यौं नर सूर पूर घन साजे , सहत तेज जस जंग ॥ ४ ॥
यहि बिधि खेत हेत पिय कारज, पल पल तड़फ तरंग ॥ ५ ॥
तुलसी जान भान भिन भावे , हिये हित परम उमंग ॥ ६ ॥

(३)

मूल ठिकाना पावे सूरत ॥ टेक ॥
चीन्ह ताहि जब डोर लगावे , दिब्य दृष्टि जब आवे ।
कहा भयो जप तप ब्रत कीन्हे , बेनी मीन अन्हावे ॥ १ ॥
त्रिकुटी ध्यान धरे कहा होई , मूल गुफा मन लावे ।
कोइ कोइ काया ब्रह्मंडे सोधे , कोइ कोइ सुन्न ढुढ़ावे ॥ २ ॥
यह तो बस्तु सबन तेँ न्यारी , जब कोइ संत लखावे ।
गुरु बिन भूल मरम नहिं जाने , भूल भरम चित चावे ॥ ३ ॥
जब लग सिंध न्यारी नहिं दरसे , फिर भवसागर आवे ।
जौहरी सतगुर भेद लखावे , औघट घाट चढ़ावे ॥ ४ ॥
सुरत सनेह सबद सहदानी , तब लखि लोक सिधावे ।
चौका इष्ट दृष्ट के पारा , न्यारा निकट समावे ॥ ५ ॥
गगन गुरू लखि सुरत समानी , सुन्न बाइस भिन भावे ।
तुलसी संत संग जिन जाना , आपहि आप कहावे ॥ ६ ॥

(४)

मूल मिलो री चढ़ि डंडा सूरत ॥ टेक ॥
निरखो सिंध सूर परे सागर , अरध उरध बिच अंडा ॥ १ ॥
सुरत रूह तोड़ि फोड़ि पट परदे , दड़री फटा री ब्रह्मंडा ॥ २ ॥

भंजन कंज कँवल बिन बेनी , चले जल जोर अखंडा ॥ ३ ॥
सुत ससि सूर मूर मत न्यारी , चेत चीन्हो री मत मंडा ॥ ४ ॥
तुलसी वृच्छ घने वन चंदन , तजो अली रूख अरंडा ॥ ५ ॥

(५)

लख पिय सुरत सम्हार जाल जिया ॥ टेक ॥
तजो अरंड बास बसो चंदन , बंधन करम कराल ॥ १ ॥
जैसे कुधात साथ पारसै , कंचन होत निहाल ॥ २ ॥
यहि बिधि दारू लार सँग लोहा , बूड़े न सतसँग चाल ॥ ३ ॥
अस गुरु सबद सुरत सिप मारग , लखि भये अगम अकाल ॥ ४ ॥
जिमि तखान जान पाहन से , गुर रस आयन ख्याल ॥ ५ ॥
ज्यौं सुख चंद मनी ससि सनमुख , चुवत अमीं री ततकाल ॥ ६ ॥
सुरजमुखी रबि सनमुख लावे , तत छिन अगिन प्रक्षाल ॥७॥
यहि बिधि संत कहैं तुलसी सब , भृंगी कीट हवाल ॥ ८ ॥

पालना

(१)

निज नैन नगर सत सुरत सहेली हो झूले ॥ टेक ॥
कंज करंज कँवल के ऊपर , गुंजत भँवर भिरंग ।
संग सुरत ससि रवि के मध मैं , मानो गज गैंद मतंग ॥ १ ॥
गगन गिरा गढ़ चढ़ि के बानी , उठे रस रंग तरंग ।
बैन मृदंग मधुर धुन बाजे , गाजत अबर अरंग ॥ २ ॥
अमी अगम गम गैल गली मैं , चुइ चुइ पिवत उमंग ।
मधुकर कली कँवल के सँग मैं , बिसरत सुधि बुधि अंग ॥ ३ ॥
तुलसी तोल बोल बिर्ते घेली , सेली सुरत उतंग ।
चंग चमक चित चीन्ह चमन मैं , गिर गिर धधकत गंग ॥४॥

(२)

द्रुग दीप ललित पद बेनी हो मूला ॥ टेक ॥
द्रुम द्रुम लता बेल पर लीलम , ता पर भवन भसुंड ।
चार बृच्छ सीतल घन छाया , माया बस तन डंड ॥ १ ॥
गरुड़ गवन गुन सुन के आवे , चावत अंग अखंड ।
अंड अलख मैं खलक समाना , दीप सात नौ खंड ॥ २ ॥
खग-पति कीन्ह संग जग जाहर , सुन गुर गवन ब्रह्मंड ।
कुसँग पहर आठो सँग सूला , मूल न मानत बंड ॥ ३ ॥
चंदन पास बसै बन बेना* , और सँग बसै अरंड ।
चंदन मली मूर नहिं जाना , गुन उन अपने न छंड† ॥ ४ ॥
तुलसी करम काल भ्रम पेले , मैले कूर कुभंड ।
यह तन विनस बिना सतगुर के, देख मूरख मतिमंद ॥ ५ ॥

कमोद

(१)

अरे तन भंग भँवर मन ।
जुगन जुगन मैं कठिन जगत को रे रंग ॥ टेक ॥
ज्यों कपि डोर बाँधि बाजीगर ।
पकड़ि नचावे करम कलंदर संग ॥ १ ॥
भटकत कलप कलप काया सँग ।
उड़त रसन को ज्यों बिन डोर पतंग ॥ २ ॥
कंटक काल दयाल गुरन बिन ।
बिकट गजब यह नहिं बस होत अपंग ॥ ३ ॥
जनम जनम जग भोग बिषय बस ।
पलक पलक मैं माया ममत तरंग ॥ ४ ॥
आसा बदन बास तन धारन ।
करत करम बस फिर फिर पावत अंग ॥ ५ ॥

---

*बाँस । †छोड़ा ।

तुलसी मुकत मानसरवर मेँ ।
  हंस रूप होय कर सतगुर सतसंग ॥ ६ ॥

(२)

एरी कोई बूझै चतुर सुजान ।
  जगत मेँ संत सिरोमन बाक ॥ टेक ॥
गुर के बचन बिलोक त्रिमल मन ।
  करत परम हित सोइ सतसँग की सूझ ॥ १ ॥
सूरत सुरग नरक न्यारी तजि ।
  निरमल कारज साईँ सनमुख जोई जूझ ॥ २ ॥
जग की लाज अकाज समझ जब ।
  उडू* उदित भयो नासत तिमर अबूझ ॥ ३ ॥
द्वै पट पार फरक फुलवारी ।
  लेत सुगँध गँध भँवर पोहप पर गूँज ॥ ४ ॥
मधुकर कँवल केल रस पीवत ।
  अधर अमी को तुलसी सबब समूझ ॥ ५ ॥

(३)

एरी हम जब जानैँ सइयाँ सुघड़ खिलइया ।
  चौपड़ नरद बचइयाँ ॥ टेक ॥
पवन गवन को री भवन बिचारे ।
  सुत को समोइयाँ तत रँग तत जनइयाँ ॥ १ ॥
छानो दाव चार दिस चौकस ।
  चित से चिन्हइयाँ पासे पुखत ढरइयाँ ॥ २ ॥
चार बरन को री चारो सार है ।
  चतुर चलइयाँ छक पंजा दृगन दिखइयाँ ॥ ३ ॥
फूटे न नरद निरख जुग जा को ।
  सार पकड़याँ तुलसी पौ दाँव जितइयाँ ॥ ४ ॥

---

*चाँद ।

(४)

एरी रँगरेज मिले कोइ चतुर रँगइया ।
चूनर रँग चटकइयाँ ॥ टेक ॥
सुंदर सूत सुरत का धागा ।
बुनत बुनइयाँ सतगुर से हम लइयाँ ॥ १ ॥
कोरा पोत परखि कर लीन्हा ।
धोवत धोवइयाँ माड़ी साफ़ करइयाँ ॥ २ ॥
कुंदी करम काढ़ि कर दीन्हो ।
सीवत सिवइयाँ फरिया फ़रक़ बनइयाँ ॥ ३ ॥
जेठे रंग मजीठ रँगाई ।
संत लखइयाँ पिया को पहिर रिझइयाँ ॥ ४ ॥
तुलसी आज मिले यहि औसर ।
जतन जनइयाँ कारीगर ने बनइयाँ ॥ ५ ॥

(५)

अरे मन ममता बढ़ी है ।
या जग मैं बंधन डारे काल ॥ टेक ॥
काहु को धरि धरि दंत करोरत ।
काहु को रंग लगाय रखत जम जाल ॥ १ ॥
काहु को माया मरोर करावत ।
काहु करतब करि करम लिखावत भाल ॥ २ ॥
डगर नगर कोउ पंथ न पावत ।
चावत चौबँध बाँधि करत बेहाल ॥ ३ ॥
मूल मदत धुर धाम सरोही* ।
सोइ बाँधि सुरत सतगुर दृढ़ ढाल ॥ ४ ॥
तुलसी सतगुर संत कहत हैं ।
जग बंधन जम से सब कूट निकाल ॥ ५ ॥

---

*तलवार ।

(६)

अरे कोइ अमर नहीं है या तन में ।
  काया करम अधार ॥ टेक ॥
उपजे मरे बने फिर बिनसै ।
  जुग जुग बंधन दुख सुख बारम्बार ॥ १ ॥
आसा दुख बंधन भटकावत ।
  आप अपनपौ नहिं चीन्हा करतार ॥ २ ॥
केहर* सुत भेड़न सँग भूला ।
  मन गुन इंद्रिन सँग करत बिहार ॥ ३ ॥
जब बन सिंघ मिले उपदेसी ।
  सतगुर को मिलि भव के भरम निकार ॥ ४ ॥
तुलसी जब तब मूल परखिया ।
  निरमल होय लखि आवे समझ बिचार ॥ ५ ॥

आरती

(१)

आरती सँग सतगुर की कीजै, अंदर जोत होत लख लीजै ॥ टेक ॥
पाँच तत्त तन अगिन जराई, दीपक चास प्रकास करीजै ॥ १ ॥
गगन थाल रवि ससि फल फूला, मूल कपूर कलस धर दीजै ॥ २ ॥
अच्छत नभ तारे मुकताहल, पोहप माल हिये हार गुहीजै ॥ ३ ॥
सेत पान मिष्टान मिठाई, चंदन धूप दीप सब चीजै ॥ ४ ॥
झलक झाँझ मन मीन मजीरा, मधुर मधुर धुन मृदँग सुनीजै ॥ ५ ॥
सब सुगंध उड़ चली अकासा, मधुकर कँवल केल धुन धीजै ॥ ६ ॥
निरमल जोत जरत घट माहीं, देखत दृष्टि दोष सब छीजै ॥ ७ ॥
अधर धार अमृत बह आवे, सत मत द्वार अमर रस भीजै ॥ ८ ॥
पी पी होय सुरत मतवाली, चढ़ि चढ़ि उमँग अमी रस रीझै ॥ ९ ॥
कोटि भान छबि तेज उजाली, अलख पार लखि लाग लगीजै ॥ १० ॥
छिन छिन सुरत अधर पर राखो, गुर परसाद अगम रस पीजै ॥ ११ ॥
दमकत कड़क कड़क गुर धामा, उलटि अलल† तुलसी तन तीजै ॥ १२ ॥

---

*शेर, बाघ । †अलल पच्छ चिड़िया जो आकाश से भूमि पर कभी नहीं उतरती ।

गौरी

(१)

साँझ परे घर आवै मनुवाँ, गो गुन गाय चरावै ॥ टेक ॥
बिंद बन वंस बास बेहट मेँ, हरि गो घास निरावै।
सिंघ काल सिर ऊपर गाजै, नेक भरम नहिँ लावै ॥ १ ॥
हिरन मिरग रोज चर चारी, जीव बचन नहिँ पावै।
मोह बस मोहन बन बन डोलै, जुग जुग जम धरि खावै ॥ २ ॥
नित नित नेह निवास बिषय से, इंद्री सँग दुख पावै।
बंधन करम काल की फाँसी, फँसि फँसि जनम गँवावै ॥ ३ ॥
तुलसी बास तजै बरतन की, मन तन मैाज उड़ावै।
गुर का संग सदा सुखदाई, सुरत चरन पर लावै ॥ ४ ॥

(२)

प्रभु दयाल सुखदाई माई री, जिन मीन मरम मति पाई ॥ टेक ॥
प्रभु प्रभुता पत परन पिया की, छिन छिन सुरत लगाई।
नेम निवास अकास बास की, पल नहिँ सुधि बिसराई ॥ १ ॥
घर गुर गवन भवन निस बासा, स्वासा पवन नसाई।
धरती न गगन अगिन जल जोनी, कौने उत तन जाई ॥ २ ॥
बिमल प्रकास सकल पद पूरे, सूरे संत लखाई।
जैसे बाँस चढ़े डोरी नट, घट निसंक अस आई ॥ ३ ॥
गुर की दया साध की संगत, सुत सब संत दृढ़ाई।
प्रीतम प्यार यार महलोँ मेँ, तब तुलसी लखि पाई ॥ ४ ॥

(३)

अस्त भान अँधियारा, रबि रथ रैन उगे सत सारा ॥ टेक ॥
जागी साँझ भई सुन सखियाँ, अँखियाँ मुख धोय डारा।
दीपक चास चलो मन मंदर, अंदर करि उजियारा ॥ १ ॥
भव तम कूप रूप से नासे, भास भवन गुलजारा।
पाई अलख पलक पर थारी, प्रान पुरुष सच यारा ॥ २ ॥
लखि लखि लगन लगी यहि भाँती, साध गुरू कढ़िहारा।
प्यारा परख सखी सुन सैना, तन बिच तत्त निहारा ॥ ३ ॥

अली आतम घर अधर अकासा , स्वासा संग विचारा ।
जोगी जीत रीत कोइ जाने , माने सजन सिहारा ॥ ४ ॥
तुलसी नीर तीर सरवर मैँ , पाता जल जग सारा ।
सासतर साथ हाथ हर घर की , बरनक बरन बिहारा ॥ ५ ॥

(४)

जो पै कोइ पावे बदन बिदेही , घट अकास लख लेई ॥ टेक॥
अंदर सुन्न सबद पद परखै , हरप हिये निज नेही ।
सुन धुन धधक अधिक लखि लागे , जागै जग जन जेही ॥१॥
मन मत माहिँ पाय पहिचाने , भवन भान सुत सेई ।
दसो दिस देखि दुख हेरि फटक रवि , सब ब्रह्मंड लखि लेई ॥ २ ॥
गो गुन गिरा ताक तक टूटै , छूटै आपा देही ।
पद घर परा परम पद हद मैँ , सुत जहाज चढ़ि खेई ॥ ३ ॥
परम तत्त आतम के पारा , न्यारा अधर अनेही ।
तुलसी तरक फरक सतगुर की , आली अरूप अज येही ॥ ४ ॥

(५)

आली री काल करत बेहाली , तासे पार परस घर चाली ॥ टेक॥
तत कर तेल सुरत की बाती , हाथै दीपक बाली ।
ब्रम्ह अगिनि परघट करि तन मैँ , महल करो उजियाली ॥१॥
ताला खोल चलो मंदर मैँ , सतगुर से ले ताली ।
दीन दयाल नाम है उनको , बकस देत दरहाली ॥ २ ॥
अंदर जाय अलख लखि प्यारा , इसक प्रेम प्रतिपाली ।
ज्ञान बिबेक जोग धरि ध्याना , तोड़ो जम जग जाली ॥ ३ ॥
तुलसी ताल तीर चल जावे , न्हावो करम पखाली* ।
निरमल नेह सेह प्रीतम को , आतम दरस निहाली ॥ ४ ॥

सारँग

(१)

गति को लख पावे संत की ॥ टेक॥
लखन अरूप रूप दरसावत , अगम सुनावत अंत की ॥ १ ॥

*धोकर ।

तूल मूल असथूल लखावत, खबर जनावत कंत की ॥ २ ॥
दृढ़ करि डगर डोर समझावत, तुरत सुझावत पंथ की ॥ ३ ॥
भव भुवंग तजि पार चढ़ावत, सत मत नाव अतंत की ॥ ४ ॥
भेष भये सब साध कहावत, भाखत साख जो ग्रंथ की ॥ ५ ॥
सिष्य करे गुर घाट न जाने, तुलसी नहिं गत होत महंत की ॥६॥

(२)

लगत न लाज महंत को ॥ टेक ॥
गाड़ी ऊँट अटा ले चालत, लानत ऐसे पंथ को ॥ १ ॥
चेला करत फिरत घर घर पर, आसा वास दुख अंत को ॥ २ ॥
इंद्री सुख भोजन नित खावत, जम धरि तोड़त दंत को ॥ ३ ॥
काया बस माया सँग फूले, भूलि मूल तजि कंत को ॥ ४ ॥
बदन बनाय काया जिन कीन्हा, चीन्ह चरन लखि संत को ॥५॥
गुर घट भान जान सिष किरनी, नभ चढ़ि मिल गुर मिंत* को॥ ६॥
कनफूका सुख बाट न पैहो, गुर चेला बहे अंत को ॥ ७ ॥
गुर अपना गुर आदि न जाना, खानी परत परंत को ॥ ८ ॥
तुलसी किरन गगन गुर भेटत, मेटे काल दयंत को ॥ ९ ॥

धुरपद

(१)

पिरथम पद परवेस मँदर हूँ मैं लख न पाये।
भीतर भान निहार संत सार सो अपार ॥ टेक ॥
धुरहूँ ध्यान चरन परसि सो समान सत सिहार।
अति अधार प्रति बिचार पंथ पार अंतर हूँ मैं ॥ १ ॥
मनिन जोत जगमगात चमचमात मग बिलास।
दृगन दीप लखि समीप मुकर हूँ पै कँवल माहिं ॥ २ ॥
सुन सरोज धमक भाल सरन परत सो कृपाल।
तुलसिदास पद प्रकास किरन भास गगन हूँ मैं ॥ ३ ॥

---

*मित्र।

(२)

चंद वंद बादर हूँ मैं, छिपत तेज प्रद प्रभास।
स्वास सो अकास वहत, नित न जात यहिन भाँत ॥टेक॥
पवन थकत चढ़त गगन, भवन माहिं उत समात।
लखत क्रांत उड़त भ्रांत, भँवर भनन कंद्र हूँ पै ॥ १ ॥
मँदर घोर घनन घनन, मृदुल पवन चलत सनन।
घड़ड़ घड़ड़ घड़घड़ात, छम छमात तंदर हूँ पै ॥ २ ॥
मुरली बीन बजत मधुर, मिरदँग की टकोर घमक।
त्रिकुट ताल तुलसी हाल, सबद घोर अंदर हूँ पै ॥ ३ ॥

(३)

हेरोइ वही सरोज पदम रुच रही रुच अंदर।
मंदर मठ बिलास गुर प्रकास ॥ टेक ॥
कँवल चरन चेत सरन दृगन दृष्टि अज अदृष्ट।
निरत सुरत सुन पिया हिया लखि निवास ॥ १ ॥
अधर कूप अनि अनूप दमक तेज रवि करोड़।
पद भृंगी मध भव अकाल संगइ समान ॥ २ ॥
तुलसिदास लख हुलास मगन जोवत जित मिलाप।
इत हट निरख नभ उत घट समात ॥ ३ ॥

(४)

परसत पावन जाना जोई जाना जाई ॥ टेक ॥
बिकट बंक की प्रबल बिमारी, इँगल पिँगल-सुखमन मैं जाई।
इत गरजत उत धधक सुनावत, बिच बिच बेन बजावत भारी ॥
अनहद ताल मृदँग मुहचँग बाजे, किँगरी संख घट माहीं।
सरसर सननन भरभर भननन, उलटत तुलसी भव हन ॥१॥
कंज कँवल मधमंज मुकरदेखा, तत रँग रमता पच रँग रत धारी।
स्याम सेत जरद सुरख, हरिया सँग कर प्रवेस।
गगन मगन जहाँ मन गुन गवन ॥ २ ॥

जोग जुगत से मुकत बिचारी , संत मता कहूँ और पुकारी ।
बेहद बाट ब्रह्मंड न पिंड के , अधर अलख नहिँ जाई ।
मन भट मननन चढ़ि घट घननन , तुलसी तुलसी को योन ॥३॥

(५)

अगम अमल मधे सुगम बिमल देखा ।
सम सत समदा बेहद बिरद काढ़ी ॥ टेक ॥
अमर पवन की साँस हूँ को हन ।
मंजन चीन्हिये कहूँ करता कर है ॥ १ ॥
अधर अमी मेँ उधर नमी मेँ ।
सहस कँवल तामेँ छल ले बाढ़ी ॥
बदन जाय के तत तिलोँ देखे ।
अद्भुत पद पावन ले गाढ़ी ॥ २ ॥
सुरत सुमन की सबज भवन कंजन ।
अंजन कीनिये तब तुलसी गाये ॥ ३ ॥

(६)

मूर जो अंस मनोरथ दृष्ट द्वारे ।
दस रस बस इंद्री भरम भान भूले ॥ टेक ॥
ज्ञान गो मेँ पंच नाथ , पाँच करम कृत अनाथ ।
सुरत धनुष चूके धामा ॥ १ ॥
सूरज ब्रह्म बिसर देस , किरन क्रांत जग प्रवेस ।
सुन्न उलटि रह्यो स्यामा ॥ २ ॥
सता ब्रह्म हरन सत , सीता बिसर मत सत ।
पाँच माहँ कीन्हो बिसरामा ॥ ३ ॥

संत चरन धरन ध्यान , गगना गुर गहन ज्ञान ।
त्रिकुटी चढ़ होवे पूरन कामा ॥ ४ ॥
बन असोक जहँ निवास , लंका सीता विलास ।
सेत बाँधि गये तुलसी रामा ॥ ५ ॥

(७)

वही जन धन है भजन , भेद विमल वास ।
निज निवास अज अरूप, ब्रह्म पूरन परन धारन ॥ टेक ॥
गगन गुंज मन अपील, दृगन दीप लख समीप ।
अधर सिस्त ससि चकोर , सुरत डोर नित निवास ।
अज अकास तकत सुरज , किरन कारन ॥ १ ॥
घोर उठत पुरुष अलख , झलक होत जोत जरत ।
बाती बिन तेल खेल , धुर पद हद अगम सैल ।
सुंदर घर अधर , दीपक मन वारन ॥ २ ॥
तेज पुंज मध उजास , किरन भास रवि विलास ।
गंग धधक सिंध समात , सुरत सब्द जस मिलाप ।
परम मूल मुक्त जुगत , तरन तारन ॥ ३ ॥
कृपावंत सुमिर संत , देवैं घर घुमर पंथ ।
आँखी अंदर अनूप , घट मैं अपना सरूप ।
तुलसिदास निकर सिखर , भरम टारन ॥ ४ ॥

(८)

सोई सम किरन है , सुरत गंग सब्द संग ।
धधक नीर सिंध सम्हीर, मूल मिलन प्रति पालन ॥ टेक ॥
सुन्न सब्द सुत मिलाप, जुगल एक होत आप ।
अधर इष्ट अज अलोक , नाम नोक परम भास ।
पद प्रकास लखन ललित , चढ़ि चालन ॥ १ ॥

अकथ आदि सम समाधि, घट अदृष्ट गुहा गूप।
पंकज खिल बन असोक, बिहँग बास बहु हुलास।
अमित अचल सरवर जल, तट तालन ॥ २ ॥
ताल में जहाज एक, उतर पार पंथ देख।
परख पोहप महु हाल, रवि उजाल कोट क्रांत।
पुरुष कंथ उदित तेज, नभ भालन ॥ ३ ॥
पिया महल में मुकाम, प्यारी मिलन मूल धाम।
प्रिये प्रसंग उधर मेल लपट खेल, गाँठ खोल अधर बोल।
सुंदर सुत रस ख्यालन ॥ ४ ॥
अटक बोल अज अडोल, समर साल अमर मोल।
खड़क खोल कर प्रयास, तुलसिदास धुर निवास।
पहुँचे कोई जहाँ न जाय जम जालन ॥ ५ ॥

(६)

एरी सतगुर से पुकार, काल तन में मोर घेर घाट लीन्हो ॥टेक॥

हिये डरपात और दृढ़ता न पकड़े हाथ।
मोह कठिन घोर फंद रूप कीन्हो ॥ १ ॥
कृपा की उमेद मौज, सुरत कीजे कुमत फौज।
क्रूर कुटिल बाट बीच दुख दीन्हो ॥ २ ॥
सोचत दिन रात जात, काहू की न माने बात।
जोर जबर डगर, जिव को न चैन चीन्हो ॥ ३ ॥
जन की फरियाद दाद, दुखित जनम है बरबाद।
मोरी अरज लरज हाथ, सबै बिधि हीनो ॥ ४ ॥
सतगुर पूरन दयाल, दीन के कृपा निहाल।
कहूँ बयान बिपत टेर बैरी गुन तीनोँ ॥ ५ ॥
स्वामी संगत बिलास, चाहत नाहिँ और आस।
दुरमति दुष्ट अंग संग, भूल भवन झीनो ॥ ६ ॥

मेहर से बिबेक ज्ञान , सुरत ध्यान की कमान ।
तेज पुरुष गगन तीर , मारो चढ़ि चीन्हो ॥ ७ ॥
गुरन के प्रसाद पुंज , घेरे सब रसक गुंज ।
गैल गवन रमन राह , तुलसी रस पीनो ॥ ८ ॥

(१०)

एरी संत पंथ से निरधार पार परम पद तद रूप धारे ॥टेक॥
उनकी मत गुप्त गोप , लखन रूप मैं अलोप ।
अजर अज कंत अंत , रीत प्रीत प्यारे ॥ १ ॥
उनके मग जुगल पाट , खुले आठ पहर घाट ।
दया डगर माहिँ, चाहे बिस्व को निकारे ॥ २ ॥
आवे धुर गुर अधार , पावे पट पदम सार ।
लेवे लगन मगन मोच्छ, लोक द्वार पारे ॥ ३ ॥
काल की बिसात कहाँ , करम हारि बैठ रहा ।
राह छोड़ि अटक तोड़ि , तुलसी कीन्ह न्यारे ॥ ४ ॥

(११)

आज तो करो री काज , मन समुँद अधिकारी ।
संध को सुधारी प्यारी , लख अधारी अंतर मैं ॥ टेक ॥
विषय बिस्वास साथ , हारे सब जनम जात ।
खोजे कहूँ परे न हाथ , बात मूल मंतर मैं ॥ १ ॥
भटके सब सकल जोनि, मारग बिन करत गवन ।
चेतन तन भ्रमत भवन , सरब जिव जंतर मैं ॥ २ ॥
आप कूँ भुलान जानि, करत भोग करम खानि ।
भरमे गुर बिन निदान , निरख नेह निरंतर मैं ॥ ३ ॥
सूरत सुंदर निवास , कटत काल कुटिल फाँस ।
आसा निरबंध बिलास , तुलसिदास तंतर मैं ॥ ४ ॥

(१२)

उग्र तो उदय होत गगन घोर कड़का री ।
कंज को सुधारि देख दृग दीदार भवन मैं ॥ टेक ॥
अधर ध्यान गोप ज्ञान , मरम मूल पद पहिचान ।
परम तत्त सुत समान , कंथ गुमठ गवन मैं ॥ १ ॥
सरवर तरवर तड़ाग , लीलम फोड़ा फड़ाक ।
अंदर रस अगम चाख , सुरत रूप रमन मैं ॥ २ ॥
मंदर मैं मराल पेख , अंदर चढ़ि चौक देख ।
आगे लख ये अभेद , बेद दाह दमन मैं ॥ ३ ॥
उनका उनमान अंत , पावे नहिं भेष पंथ ।
तुलसी कहैं अगम संत , ध्यान धरत कँवल मैं ॥ ४ ॥

(१३)

यह आली औसर पायो पिया के लखने को ।
सुरत सुधारो नूर अपनो ॥ टेक ॥
नर निरमल तन बिपत बिनासन ।
सखी पिया बिन जग सुपनो ॥ १ ॥
मिल प्यारी पलटि उलटि चलो घर को ।
प्यारे बिन धृग तप जपनो ॥ २ ॥
कर लो लगन मगन प्यारे सैं ।
हर दम नेह निरपनो ॥ ३ ॥
सुलभ लखन मन मारग पावे ।
लखि मघ मेघ घुमरनो ॥ ४ ॥
स्याम सिहार सेत रवि चंदा ।
तुलसी यह भेद परखनो ॥ ५ ॥

(१४)

ए सखी सोचत कहा औसर आनँद को ।
गुर सँग संध लखन लो री ॥ टेक ॥
ऊँचे री महल सैल सुख अंदर ।
मंदर मूल मिलन को री ॥ १ ॥
पिया अज पोहप परम पद सूरत ।
चढ़ि चल अधर दिखन को री ॥ २ ॥
सेज सँवार पार दीदन के ।
हिलि मिलि अंग अगम हो री ॥ ३ ॥
तुलसी यह रैन रमन स्वामी सँग ।
रँग रस चौज चखन को री ॥ ४ ॥

(१५)

अभय पद पुंज पदारथ मूल भुलाने ।
धुरपद हद परम नेम स्वामी ॥ टेक ॥
चख यह कंद लख परबंद ।
मग मैं प्रेम अगम संध अपर परस निरग्रंथ नामी ॥ १ ॥
अकह अगर निरख नगर नेह निरंतर अमर कंथ ।
अजर छेत्र भूमि भवन गवनामी ॥ २ ॥
अटल दीप सम समीप अजर आद सदर साद ।
उरध लोक मद्ध एक अंतरजामी ॥ ३ ॥
सनँद सैन अनँद ऐन, लेख लखन मैं निरूप ।
अचल अंत अज अरूप पंथ धामी ॥ ४ ॥
अमित धीर गज गम्हीर, तुलसी हरत परन पीर ।
लिपट चरन सरन गुर नमामी ॥ ५ ॥

(१६)

काया छर* किमाम छर मेघ माया छर ।
 तारे तिरगुन छर लैलो लख संत घर ॥ टेक ॥
गुपत परगट छार धरती छार गगन छार पवन छार ।
 अगिनि छार नीर छार नार नर ॥ १ ॥
अंग अछर ओंकार कीन्ह सबद सृष्ट कार ।
 उभै आस बदन डगर चेतन जड़ बँधि अकार ॥ २ ॥
अछर छर जगत रूप रचना रच रंक भूप ।
 सागर भव कूप लहर कहर बहत अति अपार ॥ ३ ॥
निरंकार जोत संग उतपत योँ कीन्ह अंग ।
 आतम बस बिस्वधार बूँद भूल सिंध सार ॥ ४ ॥
पद निःअच्छर अगम अंत बूझैँ कोइ बिरले संत ।
 तुलसी तंत सुरत पंथ पावे निरख नेह निरधार ॥ ५ ॥

(१७)

सेत ग्राम वारो री धामन पर ॥ टेक ॥
सिमट सिमट† घट लावन पर, अलख अनंजन प्रेम सो मंजन ।
 सुरत सुंदर मध आवन पर ॥ १ ॥
एक देख सुन्न ख्याल अचरज अज अतीत ।
 लखि लखि भास समावन पर ॥ २ ॥
अगम घोर सब्द सोर तुलसी धाम धारे ।
 धुन धुन काका बप बनावन पर ॥ ३ ॥

(१८)

ए भौंरा तोकूँ मैं हटकत तू नहिं मानत कहन मोर ॥ टेक ॥
पोहप बास फूलन पर राजी , रस बस तन सँग करम घोर ॥१॥
बीत गई वाकी बिसरानी , थाको है दस इंद्रिन को जोर ॥२॥
जुग जुग जनम गयो रस पीते, बीते नर घर कियो न ठैार ॥ ३ ॥
तुलसी यह तोर मोर की बूटी, छूटत नहिँ तन मन को छोर ॥४॥

* नाशमान । †एक लिपि में दूसरे "सिमट" की जगह "सृष्टि" है ।

संगीत

सुन समता लख लीजिये , सुंदर मूल मराल मधुर धुन ।
सब्द सिंध स्रुत नाद बिंद से , हारी हाहा पापा जानी ।
आनी आपा थापा गा ॥ टेक ॥

ज्ञानी बानी नीथापा , धीधा धानी आपा ये ।
भरमत भूप भनननन , झा किड़कत झुम किड़कत ।
झाझुम किड़कत, झुमकिड़ से तलमता ॥ १ ॥
लै लइ साथ लै लइ साथ लै लइ साथ सननननननन ।
होतक द्रुग होतक द्रुग द्रुग द्रुग हारी हूहूताका ।
सुन अरूप तुलसी की संध से , पद परबंद उर लाय लीजिये ।
साकिड़तक कुमकिड़तक काकुमकिड़तक ।
कुमकिड़ हे तलामता ॥ २ ॥

फुटकल

सोहागिन सुन्दरी , तुम बसहु पिया के देस ॥ १ ॥
नैहर नेह छाँड़ि देवो री , सुन सतगुर उपदेस ॥ २ ॥
कोटि करो इहाँ रहन न पैहो , क्या धनि रंक नरेस ॥ ३ ॥
प्रभु के देस परम सुख पूरन , निरभय सुनत सँदेस ॥ ४ ॥
जरा मरन तन एक न ब्यापै , सोक मोह नहिं लेस ॥ ५ ॥
सब से हिल मिल बैर बिसन* तज , परम प्रतीत प्रबेस ॥६॥
दम पर दम हर दम प्रीतम सँग , तुलसी मिटा कलेस ॥७॥

॥ इति ॥

---

*मनोकामना, बुराई ।

पद्मसागर

तुलसी साहिब का

॥ दोहा ॥

प्रथम करूँ गुर बंदना, सतगुर धुर अस्थान।
बिध बखान तुलसी कहो, चरन कँवल को ध्यान॥
कर प्रनाम हिरदे कहे, तन मन तोल बिचार।
मोहिं अधार तुम चरन को, तुलसी बारम्बार॥

॥ सोरठा ॥

परन मोर प्रति प्रति यही, सुख हिये हरख बयान।
बचन सुने निरधार मुख, उर अधार गुर नाम॥

॥ चौपाई ॥

गुर कृपाल तुम्हरा जस गावों। अस हिरदे को दास बनावो॥
दयासिंध सागर सुखधामी। मैं सेवक तुम चरन नमामी॥
तुम स्वामी मैं किंकर चेरो। मोहिं पर कृपा सुरत मुख हेरो॥
मैं अति दीन दयाल तुम्हारो। स्वामी सब निज काज सँवारो॥
विनय करौं तुम समरथ दाता। पावे नहिं गति बरन बिधाता॥
तुम्हरे मरम बेद नहिं पावे। फिर आगे को नेत सुनावे॥
एक बयान बचन सहदानी। पूछौं कहो संधि सब छानी॥
पुरुष लोक सब संत बतावैं। जहँ की राह मुकत नहिं पावैं॥

॥ दोहा ॥

सतसँग मैं सतगुर कही, बरन सुनाये बैन।
देस अगमपुर धाम की, संत लखावैं सैन।

॥ छंद ॥

पद पुरुष लोक अलोक मैं, जहाँ मोच्छ मारग नहीं ॥
ऐसी कहैं सब संत मिल, सुन मोहिं बड़ी अचरज भई ॥
स्वामी कहो वहि लोक सूरत, संत मत मारग गई ॥
उनको कहो बरतंत पूरन, परम सुख उपजे सही ॥
बरनन करो वहि देस निज के, निधि निरख सूरत रही ॥
घर घाट बाट बिलास तुलसी, येही हरख हिरदे कही ॥

॥ दोहा ॥

पंथ राह वहि देस की, स्वामी कहो बरनाव ।
मँजल महल चढ़ कस गई, सूरत संध प्रभाव ॥
सुन हिरदे तुलसी कहे, संत सुरत की राह ।
हिये अकास मध कँवल मैं, सहजै आवे जाय ॥

॥ सोरठा ॥

पद सरोज तट मूल, घट प्रफूल पंकज खुले ।
तजिहो हन्स अस्थूल, दल अतूल गुर कंज मैं ॥
जिन जो सतगुर संध, पद प्रबंद पूरन दियो ।
रह्यो पदम गुर छाय, धुर अकाय सतगुर मिलैं ॥

॥ दोहा ॥

सतगुर संत अतंत है, मिले न उनका अंत ।
लखै तंत तुलसी कहैं, पदम पार पर पंथ ॥

(हिरदे वाच)

॥ चौपाई ॥

यह स्वामी मोरि समझ न आई । खुल कर कहो भेद अरथाई ॥
पद सरोज पर बाट बताई । घट पंकज फूले केहि ठाईं ॥
कैसे तज्यो हंस असथूला । गुरू कंज कस मिले अतूला ॥
पदम कहाँ कहो सतगुर वासा । निरबंधन कहो भेद खुलासा ॥

(तुलसीदास बाच)

तुलसी हिरदे समझ यह झीनी । पावे कोइ लख परख प्रबीनी ॥
यह सुन समझ सहज मैं नाहीं । सतगुर कृपा संत के माहीं ॥
जब वह सुरत संध लखवावैं । तब कुछ बात समझ मैं आवे ॥
बिना दृष्टि सतगुर की भाई । नहिं कोइ नेक समझ मैं आई ॥

॥ दोहा ॥

पदम सार सागर सुनो, बेहद बचन बयान ।
ज्ञान उदै हिये मैं उठे, सुन हिरदे निज कान ॥

(हिरदे बाच)

॥ दोहा ॥

हिरदे उमँग उर मैं भई, स्वामी तुलसीदास ।
निज निवास घट मैं कहे, सो कहो बरन बिलास ॥
चरन बंद गुर सरन मैं, हिरदे बारम्बार ।
पदम सार सागर कहो, निज निरनै निरधार ॥
अंत तंत तुलसी सभी, बेहद लोक लखाव ।
संत धाम निज नाम का, भिन भिन अज अरथाव ॥

॥ दोहा ॥

हद हद सब मत मैं कहे, बेहद कहे न कोय ।
बेहद बाक अतंत कूँ, बरन सुनावो मोहिं ॥

॥ दोहा ॥

आदि अजर अदभुत कथा, जथा संत के बैन ।
कहन कहो समझाय के, स्वामी सुनत सुचैन ॥

॥ छंद ॥

हिरदे कहे सुख-धाम स्वामी, बरन बेहद की कहो ॥
कहो आद अकथ अनाद अदभुत, बचन सुन सरवन गहों ॥
मो को कहो पद लोक मारग, पुरुष बिन दुख सुख सहों ॥
वहि पुरुष का कहो नाम निजके, सरन ह्वै किंकर रहों ॥
कहें संत वह बेअंत स्वामी, कंथ सोइ तुलसी चहों ॥
हिरदे हिये जब हरख उपजे, पिव परख छूटे अहों ॥

॥ चौपाई ॥

सुन हिरदे वह पुरुष निनारा। जो कहें संत निरंजन पारा ॥
निरगुन निराकार नहिं जोती। जब नहिं वेद कतेब न पोथी ॥
है अकाल जहँ काल न जावे। सो घर संत बिना नहिं पावे ॥
सतगुर की जब बानी बूझै। जब कछु रमक नैन से सूझै ॥
सबद ब्रह्म अच्छर है भाई। सोइ निरगुन निज ब्रह्म कहाई ॥
अज अचिंत यहि को बतलावा। सत्त पुरुष इन पार कहावा ॥
जहँ निरगुन सरगुन नहिं कोई। सो पद संतन सरन समोई ॥
अज निरभय कोइ कहे अचिंता। इनके पार कहें सोइ संता ॥

॥ सोरठा ॥

अज अचिंत गुन निरगुन से, न्यारा मूल मुकाम।
स्याम सुरत चढ़के चली, अली अजर अस्थान ॥

॥ दोहा ॥

गगन मँडल सूरत तजी, सूरत सिखर समान।
पान निरख निज नैन से, पहुँची अधर अमान ॥

॥ चौपाई ॥

यह निरगुन मत मारग गावा । त्रिकुटी चढ़े भेद जिन पावा ॥
प्रानायाम जोग को साधे । सो जोगी यह पद आराधे ॥
औंअंकार सबद के माहीं । जहँ जोगी सुर्त पवन चढ़ाई ॥
मन इंद्री गुन तीन पचीसा । इनको पकड़ कीन्ह बस ईसा ॥
जब हिरदे बोले सुन स्वामी । मन की कला अगम कहे बानी ॥
सूरत नेक टिकन नहिं पावे । मन को थिर कर पौन चढ़ावे ॥
सुरत गैल गइ कहो प्रसंगा । मन खेले रस बस बहु रंगा ॥
तुलसी स्वामी अचरज आवे । मन की कला कहो कस पावे ॥

॥ दोहा ॥

पवन सुरत गइ भवन कर , निरगुन भवन समाय ।
कहन कहो वहि पार की , कौन सुनावे आय ॥

॥ छंद ॥

स्वामी सुत गैल गई गवनं , सो भई भिन भाख कहो जवनं ॥
मन की तत गाँठ खुली कवनं , सो डुली नहिं जान भली भवनं ॥
मन चंचल चातर* है भवनं , सो वहे बहु भाँत फिरे धवनं† ॥
रस रँग में अंग करे दवनं , सो डरे नहिं नेक जरे नवनं ॥
जोगी सब हार चढ़ा पवनं , सो निहार बिचार थके तवनं ॥
सत के सँग नेक बसे लवनं , तुलसी फिर भास बिषे रवनं ॥

॥ दोहा ॥

बिष मलीन बस पग रह्यो , आठ पहर रस चाहि ।
पल मन मंदर ना थिरे , फिरे जो गोगुन माहिँ ॥
मन अपंग हूए बिना , केहि बिध सूरत जाय ।
अज अकाय कैसे मिले , तुलसी कहो सुनाय ॥

*चतुर । †दौड़ता ।

॥ चौपाई ॥

मन थिर होय न कोट उपाई। संत कृपा थिर सुरत लखाई ॥
विना संत नहिं अंत थिरावे। कोटिन जोग समाध लगावे ॥
ब्रह्म ज्ञान ज्ञानी करि थाके। उनहूँ मन थिर करि नहि राखे ॥
बाच ज्ञान कहि ब्रह्म बतावैं। पढ़ वेदांत बचन समझावैं ॥
ब्रह्म गती कोइ साधन पाई। सूरत चढ़ दस द्वारे आई ॥
फोड़ ब्रह्मंड जब गगन समाने। यह वह एक बिदेह कहाने ॥
उलटि चढ़े सोइ ब्रह्म कहाई। बिन उलटे यह मान बड़ाई ॥
जग पूजन को बड़े कहावैं। फिर बंधन कृत करम समावैं ॥

॥ दोहा ॥

मन थिर कर जाने नहीं, ब्रह्म कहैं गुहराय।
चौरासी के बंद में, फेर पड़ेंगे आय ॥
ब्रह्म अकाय जाने विना, काया मन गुन माहिं।
संत चरन बिन बाद यह, भँवर सिंध रस खाय ॥

॥ चौपाई ॥

जड़ चेतन की गाँठ न छूटी। जोगी पवन चढ़ावैं झूठी ॥
दीप नगर सूरत रहि बाँधी। सो बिन सुरत पवन को साधी ॥
मन थिर रहे न सुत बिन डोरी। यह मन थिर बिन सुरत बहोरी ॥
काया करम बंध वस आया। यों नहिं पाये देस अकाया ॥
गाँठ खुले पर ब्रह्म निहारे। मन जब थिर है सुरत सम्हारे ॥
छूट सुरत जब मन थिर पावे। जब जोगी मन पवन चढ़ावे ॥
संत दया बिन सुरत न छूटे। जोगी पकड़ पकड़ जम लूटे ॥
सुरत संध संतन के पासा। संत संध से करे खुलासा ॥

॥ दोहा ॥

जड़ चेतन मेँ सुत बँधी, सतगुर हाथ उपाय।
चरन गहे पंकज खुलैँ, सूरत सदर समाय॥

सुरत पवन मन ले चढ़ी, गई गगन के माहिँ।
निरगुन भवन निहारि के, मुक्त पदारथ पाय॥

मुक्त सिरोमन पाइ के, छूटे तन मन धाम।
वहुर भरम काया धरे, मन अरिष्ट के काम॥

ज्ञानी ध्यानी जोग तप, ब्रह्मचार बैराग।
परमहंस ब्रह्म कर कहैँ, गुन इंद्री मन लाग॥

मन मलीन जड़ गाँठ मेँ, चेतन बेबस माहिँ।
कहो ब्रह्म कैसे भया, झूँठी कहत सुनाय॥

यह सब मन मारग गये, संतन कही बिचार।
निज निरधार की राह को, कोई न सुरत सिहार॥

ब्रह्म राम से नाम बढ़, रामायन के बाक।
सोई नाम संतन कहा, तुलसी सूरत ताक॥

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे बोले सुन स्वामी। नाम भेद कहो अंतरजामी॥
ब्रह्म राम से नाम निनारा। अस भाखो तुम बचन बिचारा॥
कहो वह पुरष नाम निरधारा। बिध बिध सुनोँ वार और पारा॥
राम नाम सब जगत पसारा। तुम कहे ब्रह्म राम से न्यारा॥

(तुलसीदास बाच)

सुन अस्थूल राम मन माया। वह पद नाम बिदेह अकाया॥
तीन लोक से नाम निनारा। सो जाने सतगुर का प्यारा॥
लोक तीन तज चैाथे माहीँ। सो सतगुर पद नाम लखाई॥
जपने मेँ कोइ भेद न पावे, सतगुर सूरत संध लखावे॥

॥ दोहा ॥

नाम नोक गुपते कही ; नहिं कोइ जाना भेद ।
संत परख परवीन कोइ ; उन लख नाम अभेद ॥
नाम विदेही जब मिले , अंदर खुलैं कपाट ।
दया संत सतगुर बिना , को बतलावे बाट ॥

॥ चौपाई ॥

अब विदेह का सुनो बिचारा । वह है नाम रूप से न्यारा ॥
तीन लोक चौथे पद पारा । सो अनाम बेहद्द अपारा ॥
अदभुत आद अनाद न कोई । जब वह पुरुष नाम नहिं होई ॥
अब कहूँ मँजिल मूल दरसाई । सो सुन हिरदे चित्त लगाई ॥
बाट घाट बरतंत बताऊँ । पंकज फूल राह जेहि ठाऊँ ॥
हंसा तजे देह अस्थूला । जीवत मिले कंज गुर मूला ॥
यह पहले पूछा बरतंता । सुनो बयान कहूँ अरथंता ॥
संत सिरोमन बोलैं बानी । सो अब हिरदे कहौं सब छानी ॥

॥ दोहा ॥

अकथ अलौकिक लोक कूँ , बरन बतावैं संत ।
और अंत पावैं नहीं , सतगुर धुर पुर पंथ ॥
पिरथम परमट घाट पै , नाव लगावे जाय ।
जीव जगात चुकाइ के , सूरत देयँ पठाय ॥

॥ चौपाई ॥

नाली नगर कगर इक भारी । जहँ चढ़ सके कोइ सूर करारी ॥
बज्र किवाड़ बाट में लागे । सूरत खड़ी जाय नहिं आगे ॥
व्हाँ बैठी नटखट इक नारी । आठ पहर चौकस अधिकारी ॥
नगर माहिं कोइ बसन न पावे । जो कोइ जाय उलट बगदावे* ॥

*भुलावे धोखा दे ।

सतगुर की कोइ छाप बतावे। सो वोहि पार निकर के ऊ.
संत मोहर मारग मैं देखे। जाय सुरत सोइ निरख बिबेके ॥
सूरत सिखर पार चढ़ जाई। वहँ पंकज फूले सुन भाई ॥
हंस देह तज होय निनारा। मिले कंज गुर पदम अधारा ॥

॥ दोहा ॥

सेत कँवल ऊपर चढ़ी, छूटी चेतन गाँठ।
जड़ जूड़ी अलगाय के, चढ़ी अगम की बाट ॥
तैं पूछा बरतंत सोइ, बिध बिध कही जनाय।
अब आगे की गैल को, बरनन कहौं सुनाय ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहे समझ समझाई। अब आगे कहो बरन बताई ॥
तुलसी कहे सुनो मुख बैना। हिरदे समझ लखो यह कहना ॥
जब धस कर गइ सूरत आगे। परबत एक देख वहि जागे ॥
चढ़ना बिषम बाट वहि ऊपर। देखा जहाँ रहे इक सूकर ॥
मोहिं को देख झपट कर दौड़ा। भागेउँ पुरुष एक जहँ पौढ़ा ॥
पुन धधिकार दई फटकारी। चढ़ परबत पर गई अगाड़ी ॥
ऊपर सिखर गुफा इक देखी। भीतर धस कहा कहौं अलेखी ॥
अति हग सुंदर सैल बिसाला। निपुन पुनीत जहाँ इक ताला ॥

॥ दोहा ॥

अचवन जल कर तुर्त मैं, चली तट पार किनार।
भीतर देखी अजब गति, बाग बनी फुलवार ॥
बाग सैल कीन्ही सभी, बहुर कहा कहौं बात।
सुत लुभाय रहि पोहप पर, रस सुगंध के साथ ॥

॥ चौपाई ॥

पोहप माहिं से उठी अवाजा। आये कहा कौन केहि काजा ॥
कौन देस नृप के सुत होई। भाखो बरनि सुनाओ सोई ॥

---

*जगह।

(कुरमसैन बाच)

उदेनगर निज धाम कहाई। रानी कँवला पती सोहाई॥
अब आगे भाखौं सुन माहीं। भानप्रताप पिता मम आहीं॥
पोहप नगर के आद निवासी। सत्त सलोप रानी नृप दासी॥
ता सुत आद चरन निज दासा। पिता दरस उपजी अभिलाषा॥
खोज किया पित दरसन पाया। पुनि मैं बाग सैल चलि आया॥
पोहप सुगंध जो अधिक सुहाई। लपट रह्यो स्वामी यहि माहीं॥

॥ दोहा ॥

जब अध्यानी पुरुष सुन, कुरमसैन के बैन।
उठी अवाज मधि पोहप से, आजा लखो अनैन॥

॥ सोरठा ॥

कुरमसैन कहे पुरुष से, आजा अजर निवास।
कहो बास वहि धाम को, मारग अभय अवास॥

॥ इति ॥

यह ग्रंथ हर एक लिपि में इतनाही दिया हुआ है जिस से जान पड़ता है कि महाराज तुलसी साहिब ने इसे पूरा नहीं किया।

फ़िहरिस्त ... की